सरस सलिल

राज और समाज की खरी आवाज

संस्थापक
विश्वनाथ (1917-2002)

मई (द्वितीय) 2013

अंक: 488

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, **कोलकाता-700016.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 111, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्राइवेट लिमिटेड, ए-36, साहिबाबाद, गाजियाबाद व दिल्ली प्रेस, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली में मुद्रित एवं ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं—

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

गहरी पैठ

5 साल की छोटी नन्ही सी लड़की को हवस के लिए इस्तेमाल करना और फिर उसे मरने के लिए छोड़ कर दरवाजे पर ताला लगा कर भाग जाना दिखाता है कि इस देश के लोग कितने वहशी हैं. यह मामला तो दिल्ली की घनी बस्ती में हुआ, पर अगर किसी गांवकसबे में हुआ होता तो खबर तक न लगती. ऊपर से सरकार का हाल यह है कि बच्ची 3 दिन के बाद मिलने पर एक पुलिस वाले ने बला टालने के लिए 2 हजार रुपए लड़की के मातापिता को देने चाहे, ताकि बवाल खड़ा न हो.

साफ है कि इस देश में लड़कियों की जान की कीमत क्या है? जब पुलिस वाले ने 2 हजार रुपए देने की कोशिश की थी, तब तक तो पुलिस को मुजरिम से कुछ मिला भी नहीं था, पर एक और मामला न बने, हल्ला न हो, तहकीकात न करनी पड़े, मामला अदालत में न ले जाना पड़े, कैद कर के मुजरिम को थाने या जेल में खाना न खिलाना पड़े, इस से बचने के लिए 2 हजार रुपए का खर्च सस्ता है.

यह देशभर में रोज होता है, गांवगांव में होता है और लड़कियों के बेबस मातापिता खून के आंसू पी कर रह जाते हैं. यह सदियों से होता आया है. दलितों, पिछड़ों, गरीबों की लड़कियों को हवस का शिकार बनाना ऊंचे, रोबदार तो हक मानते ही हैं, इसी जमात के छोकरों से ले कर कब्र में पैर लटकाए मर्द तक अपना फर्ज मानते हैं. आदमी हैं तो उन्हें छूट है कि हवस कहीं से भी कैसे भी पूरी कर लो.

दिल्ली के 16 दिसंबर, 2012 और 15 अप्रैल, 2013 के मामलों में मुजरिम पैसे वाले नहीं हैं. वे गरीब घरों के हैं. उन की खुद की बहनों, मांओं, बीवियों, बेटियों के साथ यही कांड होते हैं. शायद इसीलिए उन में लड़की को होने वाले दर्द का एहसास तक नहीं आता.

जैसे पुलिस वालों के हाथ दूसरों को पीटपीट कर पत्थर हो जाते हैं, ऐसे ही इन जमातों के लड़कों, मर्दों की मत पर सीमेंट की परत चढ़ जाती है. दूसरे का दर्द इन्हें अपना मजा नजर आता है. इन के समाज में वह बहादुर हो जाता है, जो दूसरों को ठीक उसी तरह सता सके जैसे इन से ऊपर के लोग इन्हें सताते हैं.

मांबहन की गालियों के बीच पले इन लड़कों, मर्दों में सैक्स की चाह इतनी मजबूत हो जाती है कि खाने और सैक्स के अलावा कुछ सूझता ही नहीं और जैसे चोरी करने पर इन्हें हिचक नहीं होती, वैसे ही लड़की की इज्जत लूटते हुए नहीं होती.

ऊंची जातियों ने हमेशा नीची जातियों या हारने वालों को सबक सिखाने के लिए उन की औरतों की इज्जत से खेलना एक कामयाब तरीका समझा है. पुलिस और फौज, लगभग हर देश की, जिस पर शक हो, उसे तोड़ने के लिए उस के घर की औरतों की इज्जत से खेलने को राज करने का नायाब तरीका मानती हैं.

पुलिस वाले किसी की इज्जत के लूटे जाने के मामले में रिपोर्ट लिखने में आनाकानी करते हैं, क्योंकि वे समझते हैं कि यह तो समाज का दस्तूर है जैसे दहेज लेना या मौत पर भोज देना. लड़कियों की इज्जत उन की बेशकीमती धरोहर है, उन का हक है, समाज का उस की देखभाल करने का फर्ज है, यह आज उन के मन में ही नहीं, क्योंकि हर पुलिस वाला खुद यही करने को तैयार रहता है.

औरतों के बारे में समाज का नजरिया खराब है, क्योंकि हमें बारबार बताया जाता है कि वे कमजोर हैं, वे इसी लायक हैं, वे बराबरी की हकदार नहीं हैं. गांवकसबों में यह बात आज और जोर से लागू है. गांवों की पंचायतें किसी के भी घर में औरतों के मामले को ले कर दखलअंदाजी करने का हक रखती हैं.

गांव की खापें लड़कियों के मोबाइलों पर रोक लगाती हैं, पढ़ने पर बंदिशें लगाती हैं, मुंह उघाड़ कर चलने पर चूंचूं करती हैं, पर उन लड़कों को कुछ नहीं कहतीं, जो बदतमीजी करते हैं. अगर गांव या शहर का समाज पहली बार लड़की पर बजी सीटी पर चेत जाए और लड़कों या उन के गुटों की मरम्मत कर दे, तो ये बलात्कार न के बराबर हो जाएं. ये हो ही इसलिए रहे हैं कि समाज ने इन को करने की छूट दी है. औरतें तो सड़कों की तरह हैं, जिन का कोई भी कैसा इस्तेमाल कर ले.

मुजरिमों को सजा मिले पर ज्यादा बड़े मुजरिम समाज के बीच बैठे हैं. ये मंदिरोंमसजिदोंचर्चों में हैं, जहां औरतों को बारबार सिर झुका कर चलने का हुक्म दिया जाता है. ये मुजरिम घरों में हैं, जहां लड़की पैदा होते ही मां का सिर शर्म से झुक जाता है. ये उन रिवाजों में हैं, जिन में कौमार्य की महिमा गाई जाती है. उन परंपराओं में हैं, जिन में औरतों को न संपत्ति का हक है, न अपने बचाव के लिए हथियार उठाने का.

इस मामले में बच्ची भी गरीब मजदूर घर की है और मुजरिम भी. साफ है कि यह समाज अपनों की इज्जत करना नहीं सीख रहा है. जब यह खुद की इज्जत न जानेगा, तो हाथी पर मुहर लगाओ, साइकिल पर, तीर पर या तराजू पर, उन्हें दूसरों से इज्जत न मिलेगी. हाथ या कमल से तो उम्मीद ही न रखो.

गनीमत है कि देश का वह हिस्सा इस वहशीपन पर उबला है, जो अब तक इन बातों को दूसरों का निजी मामला समझता था. यह अद्भुत बदलाव है. इस पढ़ेलिखे थोड़े अमीर समाज को अब तक सिर्फ अपनी इज्जत की चिंता होती थी. पिछले 4 महीनों में दूसरी बार ये लोग पैसे, जाति, धर्म से हट कर औरत को, लड़की को बचाने के लिए लड़ रहे हैं. यह शाबाशी की बात है. पर क्या निचला, पिछड़ा, दबा, कुचला, गरीब, कम पढ़ा समाज समझेगा? क्या वह खुद को बदलेगा? क्या रीतिरिवाजों की अपनी मैलीफटी रजाई को आग में झोंकेगा? ●
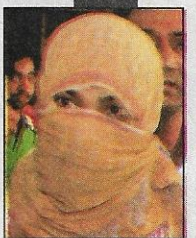
दलित के प्रेमविवाह से बस्ती की बरबादी

जगदीश पंवार

2 अलगअलग जातियों के लड़कालड़की के प्यार ने तूफान उठा दिया. दलित लड़के और पिछड़ी जाति की लड़की ने शादी क्या कर ली, जाति के ठेकेदारों में खलबली मच गई. उन के हाथों में लाठियांतलवारें आ गईं. जाति के घमंड ने एक इनसानी बस्ती को उजाड़ कर रख दिया.

यह किस्सा जाति और गोत्र की ओछी सोच के लिए बदनाम खाप तानाशाहों के प्रदेश हरियाणा के कैथल जिले के पबनावा गांव का है, जहां एक प्रेमी जोड़ा जाति के ठेकेदारों से अपनी मुहब्बत की भीख मांग रहा है. लड़का और लड़की दोनों इसी गांव के रहने वाले हैं.

कैथल से कुरुक्षेत्र वाली सड़क पर तकरीबन 30 किलोमीटर दाईं ओर पबनावा गांव बसा है. यहां की बड़ी सड़क पर बने बसस्टैंड के पास एक हैंडपंप पर पानी भर रहे एक शख्स से जब उस बस्ती का ठिकाना पूछा गया, जहां तोड़फोड़ हुई थी, तो बताने वाले के गले से जातिवाद की नफरत इस कदर निकल पड़ी, जैसे कोई कड़वा घूंट अरसे से वहां अटका पड़ा हो.

उस शख्स का जवाब था, "वही दलितों की बस्ती न, जहां झगड़ा हुआ था?"

बसस्टैंड से तकरीबन 2 किलोमीटर अंदर की ओर पक्की सड़क से चल कर पूर्व दिशा की ओर बसी उसी दलित बस्ती में 19 अप्रैल, 2013 को सन्नाटा पसरा था. पुलिस के जवान गश्त कर रहे थे. जवानों के बूटों की आवाजें दोपहर के सन्नाटे को तोड़ रही थीं.

बस्ती में घुसते ही सामने दलितों की चौपाल दिखाई दी. तकरीबन 40 लोगों के बैठने की जगह वाली पक्की मकाननुमा चौपाल और उस के सामने पक्के फर्श पर लगे नीम के पेड़ के नीचे बैठे लोगों के चेहरों पर खामोशी और खौफ साफ पढ़ा जा सकता था.

बैठे हुए लोगों के भीतर घुटा हुआ गुस्सा दबी जबान से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था, पर शायद डर का माहौल ऐसा नहीं करने दे रहा था.

बलवंत सिंह जटिया

चौपाल के सामने दर्जनों पुलिस वालों की तैनाती के बावजूद हर शख्स डरा हुआ सा नजर आ रहा था.

चौपाल में पेड़ के नीचे तकरीबन 20-25 लोग बैठे थे. उन में ज्यादातर बूढ़े और नौजवान थे, लेकिन घटना की जानकारी देने के लिए सब एकदूसरे का मुंह ताकने लगे.

राजीव

तकरीबन 55 साल के पढ़ेलिखे से दिख रहे एक शख्स ने, जिस ने खुद को बैंक का मुलाजिम बताया, दूर बैठी पुलिस की ओर इशारा कर के कहा, "जब तक ये लोग यहां हैं, तब तक हम महफूज हैं. लड़की की बिरादरी वाले हमें अब भी धमकी देते हैं कि तुम लोगों को यहां से मारपीट कर भगा देंगे."

एक और शख्स बलवंत सिंह जटिया ने बताया, "तकरीबन 4 सौ लोग ट्रैक्टरट्रौलियों में भर कर होहल्ला करते हुए आए. वे 'मार दो, तोड़ दो' कहते हुए बस्ती में घुस आए. लाखों रुपए का सामान लूट लिया, दुकानें तोड़ी दी गईं, औरतों के गहने लूट लिए गए. मोटरसाइकिलें तोड़ी गईं, घरों में रखे टैलीविजन, अलमारी, फ्रिज तोड़ दिए गए.

"हमारी औरतों के साथ मारपीट की गई. डर के मारे वे इधरउधर छिप गईं. मर्दों के साथ भी मारपीट की गई."

किसी गैरसरकारी संस्था में काम करने वाले एक और नौजवान राजीव ने कहा, "13 तारीख की रात का वह मंजर हम भूले नहीं हैं, जब लाठियांतलवारों से लैस तकरीबन 4 सौ लोगों की भीड़ ने बस्ती पर हमला बोल दिया था.

"डर के मारे लोग भाग गए हैं. उन लोगों की ओर से धमकियां आ रही हैं. वे हमें जाति की गालियां देते हैं और कहते हैं कि हम तुम्हारी औरतों को उठा लेंगे.

"हम लोगों ने 52 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी, लेकिन राजनीतिक दबाव के चलते 25 लोगों को ही पकड़ा गया है.

"हमारे खानेपीने की चीजों पर रोक लगा दी गई है. घटना के पहले दिन दूध बंद कर दिया गया. सरकार ने कोई राहत नहीं दी. सब दावे खोखले हैं.

"सांसद ईश्वर सिंह आए, पर वे सिक्योरिटी और राहत का वादा कर के
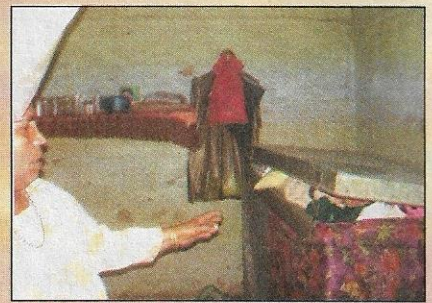
चले गए. सरकार ने कोई राशन नहीं दिया. आप देख रहे हैं कि रविदास मंदिर से यहां बैठे लोगों का खाना आ रहा है."

क्या हमले का डर नहीं था? इस सवाल पर राजीव ने बताया, "तनाव बना हुआ था. रोड बिरादरी की पंचायत में कहा जाता था कि दलित बिरादरी को गांव से बाहर निकालो."

बलवंत सिंह जटिया ने बताया, "80 फीसदी दलित घर छोड़ कर चले गए हैं. रोड बिरादरी की पंचायत होती है. वे लोग पंचायत में तो कहते हैं कि भाईचारा बनाए रखो, पर हम लोग अभी भी डरे हुए हैं. हम चाहते हैं कि कुसूरवारों को सजा मिले."

पवन

गांव के 70 साल के बुजुर्ग जगन्नाथ का कहना था कि उस दिन पहले से कोई बात नहीं थी. हम लोग दोपहर को कुएं पर बैठे थे, तब उधर के लड़के आए, पर 'हा... हू...' कर के भाग गए. पता नहीं था कि रात को क्या होने वाला है. लोग लाठियां ले कर आए. गलीगली में घुस गए. कुछ घरों की छतों पर चढ़ गए."

इसी बीच 50 साल की बिमला बोलीं, "भीड़ का हल्लागुल्ला सुन कर औरतें छिप गईं. हमें अब भी डर है. सरकार ने कुछ नहीं किया. हमारे गहने, कपड़े लूट लिए. हम यहां नहीं रहना चाहते. दुकान वाले हमें सामान नहीं देते हैं."

पवन ने कहा कि लोगों को अनहोनी का डर था, क्योंकि दोनों बिरादरी की पंचायतें प्रेमी जोड़े को अलग करने की बहुत कोशिश कर चुकी थीं और वे नाकाम रही थीं.

इस बीच कुछ नौजवान साथ हो कर बस्ती के अंदर की ओर ले कर चले. संकरी गलियों के भीतर बने घरों के बाहर और अंदर बरबादी का मंजर था.

सबकुछ उजड़ा हुआ था. कई घरों के ताले टूटे हुए थे. कई दरवाजे टूटे थे. अंदर सामान टूटा, बिखरा पड़ा था, फर्नीचर टूटा पड़ा था. मोटरसाइकिलें, टैलीविजन, तोड़ दिए गए थे. चूल्हे टूटे पड़े थे, आटा बिखरा पड़ा था. संदूकों से बिखरे कपड़े लूटपाट की गवाही दे रहे थे.

जवान औरतें और बच्चे बस्ती से नदारद थे. उन्हें उसी रात आसपास के गांवों में रिश्तेदारी में भेज दिया गया था. कुछ बूढ़ी औरतें जरूर बैठी थीं.

निबो

बिमला अपना टूटा हुआ घर दिखाते हुए सिसक पड़ीं.

60 साल की निबो ने अपनी पीठ पर मारपीट के निशान दिखाए.

बिमला

कमला घर में खुले पड़े बक्से की ओर इशारा कर के उस में पड़े बहू के गहने लूटने की कहानी कह रही थीं.

एक शख्स हुकुमचंद का आटोरिकशा तोड़ दिया गया. जयपाल की दुकान और गोदाम दोनों तोड़ दिए गए. रामकुमार की मोटरसाइकिल और दुकान तोड़ दी गईं. भीड़ राजेंद्र कुमार का टैलीविजन ले गई. लोग राजाराम का गैस सिलैंडर ले गए. बस्ती में लगीं सबमर्सिबल की मोटरें ले गए. नतीजतन, 2-3 दिनों तक पानी नहीं आ पाया.

दरअसल, पबनावा गांव में 10 अप्रैल को रोड जाति की 20 साला मीना ने 22 साल के दलित सूर्यकांत से प्यार करने के बाद शादी कर ली थी. गांव में ऐसा पहली बार हुआ था.

सूर्यकांत और मीना ने चंडीगढ़ जा कर अदालत में शादी कर ली और अपनी सिक्योरिटी की मांग की. अदालत ने कैथल के जिला प्रशासन को दोनों को सिक्योरिटी देने का आदेश दिया.

हरियाणा में खाप पंचायतों द्वारा प्रेमियों की हत्या के फैसले के मद्देनजर अदालत ने ऐसे प्रेमी जोड़ों की सिक्योरिटी के लिए हर जिले में सुरक्षागृह बनाने के आदेश दिए थे. लिहाजा, कैथल में ऐसे ही सुरक्षागृह में सूर्यकांत और मीना को रखा गया.

इन दोनों की बिरादरी वालों को जब शादी की खबर पता चली, तो वे सकते में आ गए. रोड बिरादरी वालों ने कहा कि वे अपनी लड़की को वापस लाएंगे. लिहाजा, वे दलित बिरादरी के कुछ लोगों को ले कर प्रशासन के पास पहुंचे.

लड़की से बात की गई, तो उस ने अपने घर लौटने से साफ इनकार कर दिया और कहा कि अब उस ने सूर्यकांत को अपना पति मान लिया है और उसी के साथ रहेगी.

इस इनकार के बाद रोड बिरादरी के नौजवानों ने दलितों को सबक सिखाने की ठान ली. उन्होंने पहले धमकियां दीं, तो पुलिस को शिकायत की गई.

धमकी देने के आरोप में पुलिस रोड बिरादरी के एक लड़के सुलतान सिंह को उठा कर ले गई. इस पर रोड बिरादरी के लोग ट्रैक्टरट्रौलियों में सवार हो कर पास के ढांड थाने पर दबाव बनाने पहुंचे.

मामले की नजाकत को देखते हुए पुलिस ने उस नौजवान को छोड़ दिया. इस के बाद गांव में पहुंचे इन लोगों ने दलित बस्ती पर हमला बोल दिया.

इस गांव के ज्यादातर घरों के बाहर मराठा निवास लिखा हुआ है. तो क्या ये लोग महाराष्ट्र के मराठी हैं?

इस सवाल पर एक आदमी बोला, "पानीपत की लड़ाई के वक्त हमारे पूर्वज यहां आए थे और यहीं आसपास बस गए. हम लोग ब्रह्मानंद गुरु को मानते हैं. गांव में उन का मंदिर है. कैथल, जींद, करनाल और आसपास के गांवों में हमारे मंदिर बने हुए हैं."

क्या आप लोग पिछड़ों के रिजर्वेशन में आते हैं?

इस सवाल पर उस ने बताया, "हां, हमारी बिरादरी ने रिजर्वेशन की मांग की थी और सरकार ने मान ली थी."

जिस लड़की ने शादी की, उस के पिता पृथ्वी सिंह जमींदार हैं. उन के पास खेतीबारी है. उस समय न तो वे घर पर थे और न ही उन का बेटा.

गांव वाले बताते हैं कि वे बेटी की इस करतूत से शर्मिंदा हैं और किसी से बात नहीं कर रहे हैं.

जब 3-4 नौजवानों से बातचीत की गई, तो पता चला कि वे सभी रोड बिरादरी के हैं.

रोड क्या जाटों में आते हैं या राज्य के अन्य पिछड़ा वर्ग में? यह सवाल पूछने पर वे नौजवान बोले कि हम जाट नहीं, बल्कि क्षत्रिय हैं.

कहा जाता है कि लड़की और लड़का दोनों चंडीगढ़ इम्तिहान देने की बात कह कर गए थे, लेकिन गांव वालों को क्या पता था कि वे शादी कर के इतना बड़ा बखेड़ा खड़ा कर देंगे कि दोनों जातियों के बीच नफरत की दीवार खड़ी हो जाएगी.

रोड बिरादरी वाले खुद को मराठा बताते हैं. वे लोग खुद को शिवाजी का वंशज मानते हैं और कहते हैं कि पानीपत की लड़ाई के वक्त वे यहां आए थे और यहीं बस गए.

गांव में सब से अमीर रोड बिरादरी ही है. इन के घरों के बाहर कारें, ट्रैक्टर खड़े हैं. बाजार में ज्यादातर इन की ही दुकानें हैं.

ज्यादातर दलित इन्हीं के खेतों में मजदूरी करते हैं. लड़के का पिता महेंद्र सिंह खुद मजदूरी करता है. लड़की और लड़का दोनों 12वीं जमात पास हैं और दोनों साथसाथ पढ़ते थे. लड़का नौकरी की तलाश में था.

समूचे हरियाणा प्रदेश में रोड जाति की आबादी 7 लाख के करीब होने का दावा किया जाता है. यह बिरादरी अन्य पिछड़ा वर्ग में आती है. पिछले दिनों राज्य सरकार ने इन्हें पिछड़ी जातियों की लिस्ट में शामिल करने का ऐलान किया था.
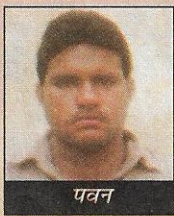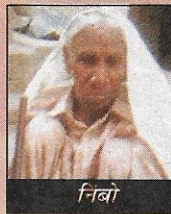
दलित बस्ती के लोगों की माली हालत भी ठीकठाक दिखती है. कुछ मकान तो रोड बिरादरी के लोगों से भी अच्छे हैं. बस्ती में सारे घर पक्के हैं. गलियां पक्की बनी हुई हैं. कुछ मकान तो कोठियों जैसे दिखाई देते हैं.

उधर मराठा होने का दावा करने वाले रोडों के पूर्वज शिवाजी खुद ऊंची जाति के नहीं थे. उन्होंने जब अपना राज्याभिषेक कराना चाहा, तो महाराष्ट्र के ब्राह्मणों ने इनकार कर दिया था.

इतिहास कहता है कि पंडों ने शिवाजी को कहा कि वे क्षत्रिय हैं, इस बात का सुबूत दें. शिवाजी के सहयोगियों ने झूठ ही खुद को राजस्थान के सिसोदिया वंश का होना बताया.

इस के बाद शिवाजी ने बनारस के पंडे को उस वक्त एक लाख टके दे कर राजतिलक के लिए राजी किया. मगर पंडे ने अपने पैर के अंगूठे से शिवाजी के माथे पर तिलक किया.

यहां 70 फीसदी दलित पढ़लिख गए हैं. तकरीबन 3 सौ दलित घरों में 3-4 अफसर, 25-30 क्लर्क, बैंक वगैरह सरकारी नौकरियों में हैं. पढ़ेलिखे नौजवान प्राइवेट नौकरियों में भी हैं और अंगरेजी बोलने वाले भी हैं.

सदियों पहले जो ऊंचनीच का बीज बोया गया था, उस के बुरे नतीजे समयसमय पर सामने आ रहे हैं. हरियाणा जाति, गोत्र की कट्टरता की नई प्रयोगशाला बनता जा रहा है.

दलितों को अपनी औकात में रखने का काम पहले ब्राह्मण करते थे. वर्णव्यवस्था से बाहर जाने पर ब्राह्मण वर्ग दंड का फैसला करता था. वह तब करता था, जब चारों वर्णों से बाहर का आज का दलित ब्राह्मण की नकल या बराबरी करता था, पर अब जगहजगह दलितों के झगड़े पिछड़े शूद्रों यानी चौथे वर्ण के साथ हो रहे हैं. यानी ब्राह्मणों ने अब अपना यह काम पिछड़ों को सौंप दिया.

देश का एक निठल्ला वर्ग हमेशा चालाकी, चतुराई, बेईमानी, झूठ और ढोंग कर के दूसरों से पैसा ऐंठता रहा है. ईश्वर का आदेश, पूर्व जन्म के कर्मों का फल, मोक्ष बता कर खुद ऐश करता रहा है. यह बताने के लिए किताबें रची गईं, गल्प कथाओं का सहारा लिया गया और इन्हें भगवान की वाणी कह कर प्रचारित किया गया. ऐसा करने में यह सब से ऊपर का वर्ग बड़ा कामयाब रहा.

दलित वर्ग मेहनत कर के आगे बढ़ रहा है, लेकिन इस वर्ग ने भी वे सब बुराइयां अपना लीं, जो सदियों से इन की बदहाली की जिम्मेदार थीं. यह वर्ग ब्राह्मण बन बैठा है. दलितों ने अपने मंदिर बना लिए हैं. हिंदुओं के तमाम कर्मकांड अपना लिए हैं. बराबरी का मतलब यह नहीं होता है.

अब पिछड़े शूद्रों की यह लड़ाई उन दलितों से है, जो आर्थिक व सामाजिक तौर पर उन के बराबर आ रहे हैं. उन के साथ बराबर उठनेबैठने लगे हैं.

हरियाणा में यह कोई पहली घटना नहीं है. दुलजाना, मिर्चपुर, भराणा, गोहाना में दलितों के साथ हिंसा, आगजनी, अत्याचार की कई घटनाएं हो चुकी हैं. सरकारी और कानूनी प्रयास किए जा चुके हैं, पर अभी भी जातीय सोच को ले कर बदलाव नहीं आया.

हरियाणा में आर्य समाजियों ने जाति व्यवस्था के खिलाफ 70-80 के दशक में जबरदस्त आंदोलन किया था, फिर भी उस का कोई असर नहीं दिख रहा है.

पबनावा गांव के पास 5 किलोमीटर की दूरी पर ढांड गांव में बड़ी सड़क पर ही आर्य समाज की शाखा का दफ्तर नजर आता है, लेकिन लगता है कि हिंदू धर्म की बुराइयों का सामना करने के लिए बना आर्य समाज अब अपने मकसद से भटक गया है.

तमाम दलित नेता, मानवाधिकार संगठन वाले इस गांव में आ रहे हैं. हमदर्दी जताने का ढोंग चल रहा है. बरबादी के चूल्हे पर राजनीतिक दलों की रोटियां भी खूब सिंक रही हैं.

दिल्ली से निकलते ही हरियाणा में तमाम बड़े शिक्षण संस्थानों की भरमार दिखने लगती है. शिक्षा के पांचसितारा भव्य महल खड़े हैं.

राज्य सरकार प्रदेश को शिक्षा का हब होने का दावा करती है, लेकिन जहां बेटियों की तादाद समूचे देश में सब से कम हो, जहां दूसरी जाति, एक ही गोत्र में प्यार या शादी कर लेने पर जातीय ठेकेदारों की मूंछें नीची हो जाती हों, जहां आएदिन जातीय भेदभाव, हिंसा, नफरत की वारदातें हो रही हों, वहां ऐसी शिक्षा के क्या माने? ●

बच्ची बलात्कार कांड

गंदी गालियां सैक्स अपराध के लिए जिम्मेदार

जे. पंवार

देश एक बार फिर दिल्ली की 5 साला बच्ची के साथ हुई बलात्कार की वारदात के बाद गुस्सा दिखा. दिल्ली के इंडिया गेट से ले कर बिहार के भरथुआ गांव तक धरनेप्रदर्शन हुए. लोगों का गुस्सा इस कदर भड़का कि पुलिस के साथ झड़पें हुईं, प्रधानमंत्री के आवास को

शर्मिंदा हैं भरथुआ

बिहार के मुजफ्फरपुर शहर से तकरीबन 26 किलोमीटर दूर औराई थाने के भरथुआ गांव की पगडंडियों पर चलते हुए यह महसूस होता है कि गांव में सबकुछ ठीकठाक नहीं है. न खेतों में किसान दिखते हैं और न ही मवेशियों के झुंड नजर आते हैं. खेतों में कटाई के बाद सलीके से रखी गई गेहूं की फसलें अपने मालिक के इंतजार में हैं कि कब उन की बालियों से गेहूं निकालने का काम चालू होगा.

जब मैं एक बुजुर्ग किसान से भरथुआ गांव के बारे में पूछता हूं, तो जवाब देने के बजाय उलटा वही सवाल दाग देता है, "क्या बात है? किस के घर जाना है?"

जब मैं ने उस से कहा कि मनोज का घर कौन सा है, तो वह पहले तो एकटक देखते हुए आगे बढ़ता है, फिर लौट कर पूछता है, "कहां से आए हो? पुलिस के आदमी हो क्या? उसे तो पुलिस वाले ले गए."

तब तक गांव के कुछ और लोग मेरे करीब आ जाते हैं. जब मैं बताता हूं कि मीडिया से हूं, तो एक नौजवान तैश में आ कर कहता है, "अब गांव का कितना कबाड़ा कीजिएगा? उस बलात्कारी की वजह से पहले ही हमारी काफी बेइज्जती हो चुकी है."

दूसरा आदमी कहता है, "मनोज इसी गांव का है, पर पिछले कई सालों से उस का परिवार दिल्ली में ही रहता है."

यह गांव देश के किसी पिछड़े गांव की तरह ही है, जहां सरकार के तरक्की

घेरा गया, कांग्रेस की मुखिया सोनिया गांधी के घर पर प्रदर्शन किया गया. दिल्ली के पुलिस कमिश्नर कठघरे में थे.

16 दिसंबर, 2012 को दिल्ली के वसंत विहार में हुए गैंगरेप के बाद तमाम सुधारों, कानून में बदलावों और गुस्से के बावजूद बलात्कार के मामले रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं. सरकारी आंकड़े बताते हैं कि इस साल जनवरी से 15 अप्रैल तक दबोचने के मामलों में बेतहाशा बढ़ोतरी हुई है.

दिल्ली की जिस घटना को ले कर गुस्सा फैला, उस में एक अलग बात यह है कि शिकार बच्ची मजदूर परिवार की थी और जुर्म करने वाले भी मजदूर तबके के थे, जबकि सड़कों पर उतरे लोगों में मध्यम और ऊंचे दोनों तबके शामिल रहे.

घटना कुछ यों थी कि पूर्वी दिल्ली के गांधीनगर इलाके की झुग्गी बस्ती में रहने वाले रिकशा चालक की 5 साला बेटी 15 अप्रैल को गायब हो गई. मांबाप ने खूब तलाश की, पर उस का कुछ पता न चला. पुलिस में शिकायत की गई, तो ध्यान नहीं दिया गया.

तभी तीसरे दिन पड़ोसियों को बच्ची के कराहने की आवाज सुनाई दी. जिस कमरे से यह आवाज आ रही थी, उस में बाहर ताला जड़ा था.

पुलिस को इत्तिला दी गई. पुलिस ने ताला तोड़ कर देखा कि एक 5 साला बच्ची खून से लथपथ बेहोश हालत में थी. उसे आननफानन दयानंद अस्पताल ले जाया गया.

डाक्टरों को मामले की गंभीरता का एहसास हुआ, क्योंकि बच्ची के अंग में मोमबत्ती और प्लास्टिक की बोतल फंसी मिली. हालात को देखते हुए बच्ची को आल इंडिया इंस्टिट्यूट औफ मैडिकल साइंस अस्पताल (एम्स) भेज दिया गया. वहां की गई जांच में बच्ची के साथ वहशी तरीके से बलात्कार करने की बात सामने आई.

आरोपी मनोज और प्रदीप : मासूम चेहरों में छिपी हैवानियत

बच्ची मिलने के तीसरे दिन पुलिस ने आरोपी मनोज को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले से पकड़ लिया. पूछताछ में पता चला कि वारदात को अंजाम देने वाला वह अकेला नहीं, बल्कि प्रदीप नाम का एक और शख्स भी शामिल था. अगले दिन प्रदीप भी पकड़ा गया.

प्रदीप को उस के मौसा के घर लखीसराय जिले के बड़हिया गांव से गिरफ्तार कर लिया गया. मनोज और प्रदीप दिल्ली में मजदूरी का काम करते थे.

पुलिस की तफतीश से यह खुलासा हुआ कि 15 अप्रैल को मनोज के पास प्रदीप आया. दोनों ने मोबाइल फोन पर ब्लू क्लिपिंगें देखीं और शराब पी. इस के बाद दोनों के भीतर का दरिंदा जाग गया, तो मकान में ही खेल रही बच्ची को टौफी देने के बहाने कमरे में फुसला कर लाया गया और उस के साथ बलात्कार किया गया.

बच्ची की हालत खराब होने पर प्रदीप ने उस का गला दबा दिया और मरी हुई जान कर दोनों कमरे पर ताला लगा कर ट्रेन से भाग गए.

पुलिस पर आरोप लगे कि वह मदद करने की इच्छुक नहीं थी. पुलिस के 2 लोगों ने बच्ची के पिता को 2 हजार रुपए दे कर चुप रहने को कहा था, पर उस ने ऐसा करने से इनकार कर दिया.

पिछले कुछ समय से देश में बलात्कार के मामलों में कई गुना बढ़ोतरी हुई है. मानवाधिकार संगठनों की मानें, तो बच्चियों के साथ साल 2001 से साल 2011 तक दबोचने की घटनाएं 336 फीसदी बढ़ी हैं.

इस तरह के मामलों में ज्यादातर आसपास के लोग ही शामिल होते हैं. पुलिस के पास दर्ज सब से ज्यादा 48 फीसदी घटनाएं प्रेमी या दोस्त ने अंजाम दीं. 31 फीसदी मामलों में पड़ोसी शामिल पाए गए. 10 फीसदी मामलों में घर वाले ही थे. इन में बाप, चचेरा भाई, ससुर, जीजा, पहले वाला पति आरोपी रहा.

पुलिस ज्यादातर मामले दर्ज ही नहीं करती. हरियाणा की एक स्टडी कहती है कि यहां हाल के समय में बड़ी तादाद में निचले तबके की लड़कियों के साथ बलात्कार की वारदातें हुईं, पर यहां 90 फीसदी मामले दर्ज ही नहीं होते, क्योंकि पीड़ित लड़की और उस के परिवार को समाज से बाहर होने का डर रहता है.

देश के ज्यादातर हिस्सों में यही हाल है. राजधानी दिल्ली तक में मामले दर्ज नहीं होते. 31 दिसंबर का किस्सा है. दिल्ली के मधु विहार इलाके में एक लड़की से पड़ोसी नौजवान ने बुरा काम किया. पीड़िता जब शिकायत दर्ज कराने थाने गई, तो उसे बदनामी का डर दिखा कर लौटा दिया गया.

ऐसे में आरोपी का हौसला बुलंद हो गया और उस ने दोबारा छेड़छाड़ शुरू कर दी.

बाद में पीड़िता मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट की अदालत में गई और कोर्ट ने पुलिस को 4 जनवरी को मामला दर्ज करने का आदेश दिया.

इसी तरह 11 मार्च को दिल्ली के

और चिकनौटा गांव

बीरेंद्र बरियार ज्योति

के दावों की छटांक भर भी मदद नहीं पहुंच सकी है.

तकरीबन 3 सौ घरों वाले इस गांव के लोगों का गुस्सा इस कदर हद पर है कि मनोज और उस के परिवार के बारे में पूछने पर हर कोई भड़क जाता है.

दिल्ली में 5 साल की मासूम बच्ची के साथ दरिंदगी की सारी हदें पार करने वाला मनोज इसी गांव का है.

गांव के मुखिया लालबाबू राय कहते हैं कि मनोज ने भरथुआ गांव को ही नहीं, पूरे बिहार और इनसानियत को शर्मसार कर दिया है. इतनी छोटी बच्ची के साथ जानवरों की तरह बरताव करने वाला इनसान हो ही नहीं सकता.

जिस दिन से मनोज को उस की ससुराल करजा थाने के चिकनौटा गांव से पुलिस उठा कर दिल्ली ले गई, उस दिन से चिकनौटा और भरथुआ गांव के लोगों का दिन का चैन और रात की नींद छिन गई है.

भरथुआ गांव की पंचायत ने तो मनोज के परिवार वालों का हुक्कापानी बंद करने और गांव से बाहर निकालने का फरमान सुना डाला.

मनोज के 75 साल के दादा हीरा साह, 72 साल की दादी महासुंदरी देवी, चाचा सुरेश साह और चाची रानी देवी को गांव छोड़ने का हुक्म सुनाया गया.

हीरा साह ने पंचायत के सदस्यों और गांव वालों के सामने गिड़गिड़ा कर कहा कि उस के कुकर्मी पोते की सजा पूरे
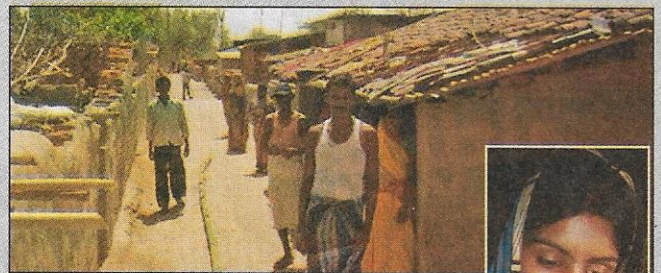
मनोज का गांव और उस की पत्नी अर्चना (इनसैट में)

परिवार को नहीं दी जाए. हीरा ने अपने परिवार के साथ गांव के हर दरवाजे पर जा कर अपने नालायक पोते की गलती के लिए माफी मांगी.

हीरा साह की मांग पर आखिरकार 21 अप्रैल को दोबारा पंचायत बैठी और सलाहमशवरा करने के बाद सरपंच सुरेश शर्मा ने फैसला सुनाया कि हीरा और उस का परिवार गांव में ही रहेगा.

पंचायत ने यह हुक्म भी सुनाया कि मनोज, उस के पिता बिंदेशर साह और भाई अंकित साह को भले ही देश की हर अदालत माफ कर दे, पर भरथुआ की पंचायत उन्हें कभी माफी नहीं देगी और वे लोग कभी गांव में नहीं घुस सकेंगे.

मनोज के पिता बिंदेशर साह पिछले

ही न्यू अशोक नगर में 12वीं जमात में पढ़ने वाली लड़की के साथ एक नौजवान ने रेप किया, पर पुलिस ने घर वालों को लड़की के भविष्य का वास्ता दे कर वापस भेज दिया.

मामला मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट के पास गया, पर मजिस्ट्रेट के आदेश के बाद भी फौरन अमल नहीं हुआ. पीड़िता की मैडिकल जांच रिपोर्ट आने के 24 दिन के बाद मामला दर्ज किया गया.

ऐसे में जनता का सारा गुस्सा पुलिस और सरकार के खिलाफ उमड़ा, लेकिन असली कुसूर पुलिस या सरकार का है या नहीं, यह अलग पहलू है, पर लड़कियों और औरतों को ले कर हमारी सोच भी काफी हद तक जिम्मेदार है.

औरतों को ले कर सदियों से समाज की सोच बहुत तंग रही है. गरीब, दलित, पिछड़े, निचले तबके में तो औरत की हालत और ज्यादा शर्मनाक है.

निचले तबके के परिवार के मर्द द्वारा औरत को महज मजा देने वाली मशीन माना जाता है, जिसे जब चाहा इस्तेमाल किया.

निचले तबकों में लड़कियों को ले कर गलत काम ज्यादा होते हैं, जो सामने नहीं आ पाते. पुलिस तक इन के जो मामले पहुंचते हैं, वे घरपरिवार या पड़ोसी के कम, बाहर वालों के ज्यादा होते हैं. कोई बाहर वाला आ कर अगर बगैर रजामंदी के किसी को पकड़ लेता है या सो जाता है, तब बात सामने आती है.

निचले तबके में तकरीबन हर घर, हर आदमी में गंदी गाली देने का चलन है. आम बोलचाल में भी औरत और मर्द के प्राइवेट अंगों के नाम निकलते हैं. मर्द तो हर बात में घर की औरतों, लड़कियों के सामने सीधे ऐसे शब्द बोल देते हैं, यानी वे सबकुछ गालियों में कह डालते हैं. इन गालियों में मर्द बहनबेटियों को सीधे बिस्तर पर ले गए हैं.

घर में गंदी गालियों का, औरतमर्द के जिस्मानी रिश्ते की बातों का कच्ची उम्र के लड़केलड़कियों पर असर पड़ता है. लड़की और लड़का दोनों प्राइवेट अंगों के नाम और उन के आपसी मिलन की गाली सुनेंगे, तो रोमांचित हुए बिना न रह सकेंगे.

नतीजतन, वे जल्दी ही जिस्मानी रिश्तों के आदी हो जाते हैं. उन्हें पहले गालियों में सैक्स का सा मजा आता है, बाद में असल में रिश्ता बना लेते हैं.

निचले तबकों में यही माहौल सैक्स अपराधों के लिए जिम्मेदार होता है.

बलात्कार के मामले के दोनों आरोपी ऐसे ही माहौल के हैं. शेखपुरा थाने के तहत अहियापुर का बाशिंदा 19 साल का प्रदीप अपने परिवार व गांव द्वारा निकाला जा चुका है.

प्रदीप अपने बड़े भाई दीपक, भाभी काजल देवी और मां के साथ जब भी अपने कच्चे घर में आता है, गालीगलौज, बदसुलूकी का बरताव करता है. जब वह अपने गांव में मजदूरी करता था, तब भी घर में माहौल ठीक नहीं रहता था.

निचले तबके का मर्द बाहर ऊंची जातियों में कितना ही दब्बू बन कर क्यों न रहता हो, अपने घर में औरतों के लिए वह ऊंचा बना रहता है. उस की बोलचाल औरत के प्रति आदर की नहीं, भोगविलास की सोच को दिखाती है.
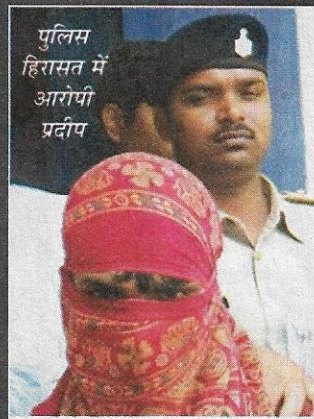
पुलिस हिरासत में आरोपी प्रदीप

समाज में दलित और औरत (चाहे ऊंचे तबके की हो) को एक ही दर्जे में रखा गया है. औरत अगर दलित है, गरीब है, तो उस की जिंदगी बड़ी मुश्किल होती है. उसे तो सब अपनी जायदाद मानते हैं, क्योंकि वह सब से कमजोर है.

ऊंचनीच हो जाती है, तो औरत को ही कुसूरवार मान लिया जाता है. उसे गिरी हुई करार दिया जाता है. मर्द का कुछ नहीं बिगड़ता. वह तो छुट्टा सांड़ है. कुकर्म की शिकार औरत तो न घर की रहती है, न घाट की.

निचले तबके के घर बहुत छोटे, संकरे होते हैं, जिन में शादीशुदा औरतमर्द जिस्मानी संबंध खुल कर नहीं बना सकते. 5 से 10-12 साल के उन के बच्चे अपने मांबाप, भाईभाभी, चाचाचाची को हमबिस्तर होते आसानी से देख लेते हैं. जगह की कमी के चलते उन के जिस्मानी रिश्ते छिपे नहीं रह पाते.

कभीकभी सोने के बहाने भी बच्चे छिपछिप कर देख लेते हैं. बाद में वे भी वैसा ही करने लगते हैं. बाद में यह डगर सैक्स अपराधों की ओर जाने वाली साबित होती है.

लिहाजा, औरतों पर बने तमाम कानूनों और सरकारी इंतजामों पर यह सामाजिक सोच और माहौल काफी हद तक हावी है.

ऐसा पहली बार हुआ है, जब एक निचले मजदूर तबके की बच्ची के लिए देश का हर तबका उठ खड़ा हुआ. यह अच्छी बात है.

विरोध करने वालों में महिला संगठन और औरतें बहुत ज्यादा तादाद में हैं. यह इसलिए कि बेटी चाहे निचले तबके की हो या ऊंचे तबके की, वह मर्दों की नजर में एक ही है.

लेकिन जनता का गुस्सा शासनप्रशासन की जिस जगह पर दस्तक दे रहा है, वह मुकम्मल तौर पर सही जगह नहीं है. शासनप्रशासन कानून के राज द्वारा कम, खुद सड़ीगड़ी सामाजिक सोच द्वारा चलाया जाता है.

क्या गुस्से से भिंची मुट्ठियां सामाजिक, धार्मिक या सांस्कृतिक ठेकेदारों के खिलाफ नहीं तानी जानी चाहिए? औरत की यह हालत बनाने वाली सोच के पहरेदारों को क्यों छोड़ा जा रहा है?

बदलाव समाज के भीतर से ही आएगा, संसद के अंदर से हल नहीं निकलेगा. ●

20 सालों से दिल्ली में ही रहते हैं और फलों का जूस बेच कर गुजारा करते हैं. उन की 6 औलादों में 4 बेटियां और 2 बेटे हैं.

गांव के लोग बताते हैं कि मनोज बचपन से ही काफी शरारती था और पढ़ाई में काफी फिसड्डी भी था.

गांव के स्कूल की एक टीचर माधुरी कुमारी बताती हैं कि साल 2003 या 2004 में वह चौथी क्लास में था. वह अकसर क्लास में मारपीट और हल्लाहंगामा करता रहता था. एक दिन उस ने क्लास के 2 लड़कों को पीटा, तो उसे जम कर डांट लगाई गई. उस दिन के बाद से वह कभी स्कूल नहीं आया.

मनोज के दादादादी : बुढ़ापे में शर्मिंदगी

मनोज की कारगुजारियों का एक किस्सा औराई थाने में भी दर्ज है. 3 फरवरी, 2011 को उस ने गांव में मारपीट की थी और राजेंद्र व उस के बेटे कामोद का सिर फोड़ दिया था.

गांव वाले बताते हैं कि 4-5 साल पहले मनोज ने दूर के किसी रिश्तेदार की लड़की के साथ बलात्कार करने की कोशिश की थी.

मनोज की ससुराल चिकनौटा गांव में भी उस के खिलाफ नफरत का माहौल देखने को मिला. उस के ससुर महेंद्र साह के घर के बाहर कई लोग जमा थे.

मनोज का जिक्र छेड़ने पर उन्होंने एक निगाह मुझ पर डाली और फिर खामोशी का लबादा ओढ़ लिया.

उन की जबान भले ही चुप थी, पर गुस्से और शर्म से मिलेजुले उन के चेहरे के भाव मानो कह रहे थे कि जिस के हाथ में उन्होंने अपनी लाड़ली का हाथ सौंपा था, वही इतना बड़ा हैवान निकला.

थोड़ी देर बाद महेंद्र साह ने बताया, "अगर पहले पता चल जाता कि मेरा दामाद बच्ची का बलात्कार कर के हमारे घर में छिपने की नीयत से आया है, तो मैं खुद उसे सजा देता."

इसी बीच घर की चौखट के पास खड़ी मनोज की सास निर्मला देवी बोल पड़ीं, "अब हम अपनी बेटी को कभी भी ससुराल नहीं जाने देंगे."

गांव वालों ने बताया कि 16 अप्रैल को मनोज 'स्वतंत्रता सेनानी ऐक्सप्रैस' ट्रेन से दिल्ली से चिकनौटा गांव पहुंचा था. उस के साथ प्रदीप नाम का उस का साथी भी आया था.

महेंद्र साह बताते हैं कि गिरफ्तार होने से थोड़ी देर पहले मनोज पास के ही शुभकरपुर गांव से नवरात्र का मेला देख कर लौटा था.

22 अप्रैल को मनोज का साथी प्रदीप भी लखीसराय जिले के बड़हिया गांव में अपने मौसा हरेराम के घर से पुलिस ने दबोच लिया था.

प्रदीप मूल रूप से शेखपुरा जिले के अहियापुर महल्ले का रहने वाला है. उस के चालचलन से उस के इलाके के लोग परेशान रहते थे.

मनोवैज्ञानिक विनोद पांडे कहते हैं कि बड़ी लड़की या औरत के साथ जबरन सैक्स करने की बात तो समझ में आ सकती है, पर छोटी बच्ची के साथ ऐसी घिनौनी हरकत करने वाले की दिमागी हालत किसी भी सूरत से ठीक नहीं कही जा सकती है. ●
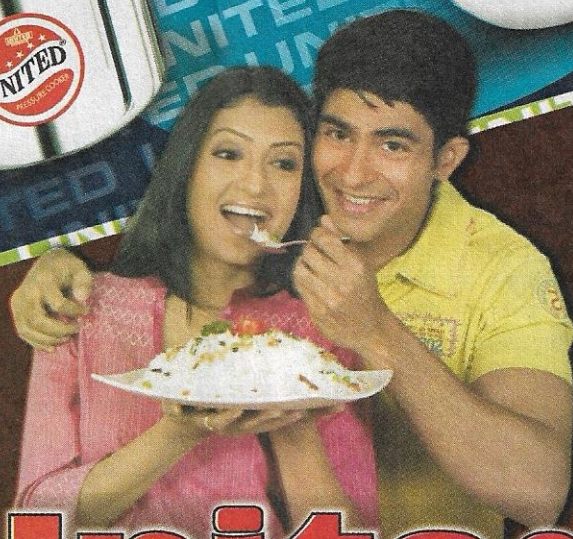
UNITED
GROUP OF INDUSTRIES
खाए जाओ खिलाए जाओ
यूनाईटेड® के गुण गाए जाओ
IS:2347
CM/L-8323165
United®
Pressure Cooker
सभी जगह सभी साईज़ों में उपलब्ध

शराब ने उजाड़ी जिंदगी

हरिनाथ यादव

3 बच्चों की विधवा मां अपनी बाकी जिंदगी गुजारने के लिए एक नशेड़ी प्रेमी के जाल में ऐसी फंसी कि वह भी शराब का स्वाद चखने लगी. उसे यह पता नहीं था कि उस का प्रेमी जायदाद हथियाने के इरादे से एक दिन उसे भी शराब पिला कर सुनसान इलाके में उस की हत्या कर देगा.

शराब के चलते उस विधवा की ही नहीं, बल्कि उस की दोनों मासूम बेटियों की भी जानें चली गईं.

एशिया की सब से बड़ी झोंपड़पट्टी मुंबई की धारावी में राजा से ले कर रंक तक अपनी जिंदगी गुजारते हैं. इसी इलाके में 40 साला विधवा आबिदा खातून अपने बच्चों के साथ जिंदगी गुजार रही थी. परिवार के नाम पर उस का 16 साला बेटा समीउल्ला, 11 साला साबिया और 7 साला आलिया थीं.

धारावी इलाके में चमड़े के पर्स व बैग बनाने का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है. इसी कारोबार से हजारों परिवारों की रोजीरोटी चलती है.

27 साला इश्तियाक शेख उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के शादी मदनपुर गांव से रोजीरोटी की तलाश में मुंबई आया था. कुछ दिन इधरउधर भटकने के बाद उसे धारावी में ही चमड़े के पर्स बनाने का काम मिल गया.

वहां मेहनतमजदूरी करने वाले ज्यादातर मजदूर थकान मिटाने के लिए शाम ढलते ही कच्ची शराब से ले कर विदेशी शराब तक का स्वाद चखने के लिए मयखाने की तरफ निकल पड़ते हैं.

इश्तियाक शेख भी पक्का शराबी बन चुका था. पहले तो दोस्तों का साथ था, पर धीरेधीरे वह अकेले ही मयखाने में नजर आने लगा.

धारावी पुलिस थाने के सीनियर पुलिस इंस्पैक्टर अशोक सुर्वेगंध ने बताया कि विधवा आबिदा खातून के नाम पर धारावी इलाके में ही एक मकान था, जहां वह अपने बच्चों के साथ रहती थी. इस बात की भनक जब इश्तियाक शेख को लगी, तब वह धीरेधीरे उस से पहचान बनाने में जुट गया.

आबिदा खातून और इश्तियाक शेख की पहचान धीरेधीरे प्यार में बदल गई. अब आएदिन की रात इश्तियाक शेख आबिदा खातून के घर में गुजारने लगा.

समय यों ही गुजरता गया. जायदाद हथियाने का सपना संजोए इश्तियाक शेख ने एक दिन मौका पाते ही आबिदा

से कहा, "क्यों न हम निकाह कर अपनी जिंदगी गांव में गुजारें? अगर मुनासिब समझो, तो यहां का मकान बेच कर तुम मेरे साथ गांव चलो."

प्यार में अंधी हुई आबिदा खातून इश्तियाक शेख के इरादे को भांप नहीं सकी. उस ने अपना धारावी का मकान बेचने का फैसला कर लिया. आबिदा खातून के मकान का सौदा 11 लाख रुपए में तय हुआ.

मुंबई आने के पहले इश्तियाक शेख कोलकाता में कुछ समय गुजार चुका था. शादीशुदा होने के चलते उत्तर प्रदेश जाने के बजाय उस ने आबिदा खातून व उस की 2 बेटियों साबिया और आलिया को ले कर कोलकाता की राह पकड़ी. आबिदा खातून का बेटा समीउल्ला उस के भाई के यहां धारावी में ही रहने लगा.

पुलिस के मुताबिक, कोलकाता में ही आबिदा खातून के साथ इश्तियाक शेख ने सितंबर, 2011 में निकाह किया. दोनों की जिंदगी मियांबीवी की तरह गुजरती गई.

एक समय ऐसा भी आया कि आबिदा खातून इश्तियाक शेख से जिद करने लगी कि वह उसे अपने गांव ले चले.

पहले से ही शादीशुदा इश्तियाक शेख गांव जाने से कतराने लगा, लेकिन जिद की हद पार होने पर उस ने एक खतरनाक फैसला कर लिया.

साबिया और आलिया को पड़ोसियों के सहारे कोलकाता में ही छोड़ कर आबिदा खातून अपने नए शौहर के साथ उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के लिए 17 जनवरी, 2012 को निकल पड़ी.

पुलिस उपायुक्त धनंजय कुलकर्णी ने बताया कि ललौली पुलिस थाने की हद में यमुना नदी पर बने पुल के नजदीक उतर कर दोनों पैदल जाने लगे.

इश्तियाक शेख ने आबिदा खातून को शराब पिलाई, जो पहले से ही उस ने खरीद रखी थी.

आबिदा खातून पर शराब जब अपना रंग दिखाने लगा, तब उसी की ओढ़नी से इश्तियाक शेख ने गला दबा कर हत्या कर दी.

आबिदा खातून की लाश लावारिस छोड़ इश्तियाक शेख अपने मूल गांव शादी मदनपुर चला गया. गांव में एक दिन गुजारने के बाद वह फिर कोलकाता लौट गया.

दूसरी तरफ पुलिस ने आबिदा खातून की लाश अपने कब्जे में ले कर सीआरपीसी की धारा 174/12 के तहत मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी.

कोलकाता पहुंचे इश्तियाक शेख से जब साबिया और आलिया ने अपनी मां के बारे में पूछा, तब उस ने जवाब दिया, "उसे मैं गांव में छोड़ आया हूं. तुम्हें भी अब वहां ले जाऊंगा."

इश्तियाक शेख ने साबिया और आलिया को कीड़े मारने वाली दवा पिला दी, जिस के चलते उन की भी मौत हो गई. उन की लाशों को उस ने कपड़े में लपेटा और ठिकाने लगाने के लिए घर से निकल पड़ा.

बड़ी बेटी साबिया की लाश लेक पुलिस थाने के तहत कचरे के डब्बे में फेंक कर वह फरार हो गया.

लेक पुलिस ने भारतीय दंड संहिता की धारा 302/201 के तहत अपराध संख्या 31/12 दर्ज कर जांच शुरू कर दी.

आलिया की लाश को वह पार्क सर्कस रेलवे स्टेशन के समीप छोड़ कर चला गया. बालीगंज जीआरपी पुलिस ने भारतीय दंड सहिता की धारा 302, 201 के तहत केस संख्या 7/12 दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी.

इश्तियाक शेख भाड़े के मकान की डिपौजिट रकम वापस ले कर फिर गांव लौट गया. काफी समय बाद वह फिर धारावी इलाके में पहुंचा.

शराब के नशे में धुत्त वह एक दिन अपनी काली करतूतों की शेखी बघारने लगा और पुलिस के हत्थे चढ़ गया.

पुलिस की पूछताछ में जब इश्तियाक शेख ने अपना यह काला चिट्ठा खोला, तब लोगों के होश उड़ गए. ●

घिनौना मजाक

डा. प्रमोद कुमार अग्रवाल

रामू ने ट्रैक्टर चलाना सीख लिया था. गांव के हरिजन टोले से वह उन 2-3 जोशीले नौजवानों में था, जिन्होंने अपने कुनबे के सफाई के काम से हट कर ड्राइवरी का पेशा चुना था.

रामू खुश था कि महीने के आखिर में वह अपने कांइयां जमीन मालिक से उतनी तनख्वाह लाता, जितनी उस की मां, बाप, भाई और बहन भी मिल कर नहीं कमा पाते थे.

रामू का मालिक श्याम गांव का पुश्तैनी किसान था, फिर भी गांव के लोग उसे 'मोदी' कहते थे. रामू 'सफाई वाला' ही कहलाता था, जबकि प्रदेश की दलित, पर अमीर मुख्यमंत्री ने उस की बस्ती का नाम बदल कर अंबेडकर नगर रख दिया था. देश की आजादी के बाद रामू के परिवार को 'हरिजन' नाम के अलावा शायद और कुछ हासिल नहीं हुआ था.

श्याम पहले खुद ही ट्रैक्टर चलाता था. उस ने अपने दम पर मेहनत कर के खेती से इतना पैसा कमा लिया था कि अपने बड़े लड़के के लिए पास के कसबे में बड़ा मकान बनवा दिया और छोटे लड़के को दूर के कसबे में एक 'गिफ्ट शौप' खुलवा दी.

अपनी आमदनी से खुश श्याम मूंछों पर ताव देता और सुबहशाम जा कर अपनी 40 बीघा खेती का जायजा लेता. उस ने रामू को ट्रैक्टर चलाने के लिए रख लिया, क्योंकि बनगुवां और उस के आसपास उस का ट्रैक्टर किराए पर उठने लगा था, जिस से उसे अच्छीखासी आमदनी होने लगी थी. यही पैसा वह खेती में लगाता, तो शायद उसे उतना फायदा न मिलता.

गांव में अपनी हैसियत के हिसाब से श्याम के लिए यह बेइज्जती की बात थी कि वह दूसरों के खेतों में ट्रैक्टर चलाए.

श्याम को रामू का काम पसंद आया और धीरेधीरे उस ने ट्रैक्टर का सारा काम रामू पर छोड़ दिया. अब गांव में लोग रामू को 'रामू हरजनिया' न कह कर 'रामू ट्रैक्टर वाला' कहने लगे. रामू भी नएनए ग्राहक लाता और उन के यहां ट्रैक्टर चला कर मालिक के लिए अच्छा मुनाफा कमा कर देता.
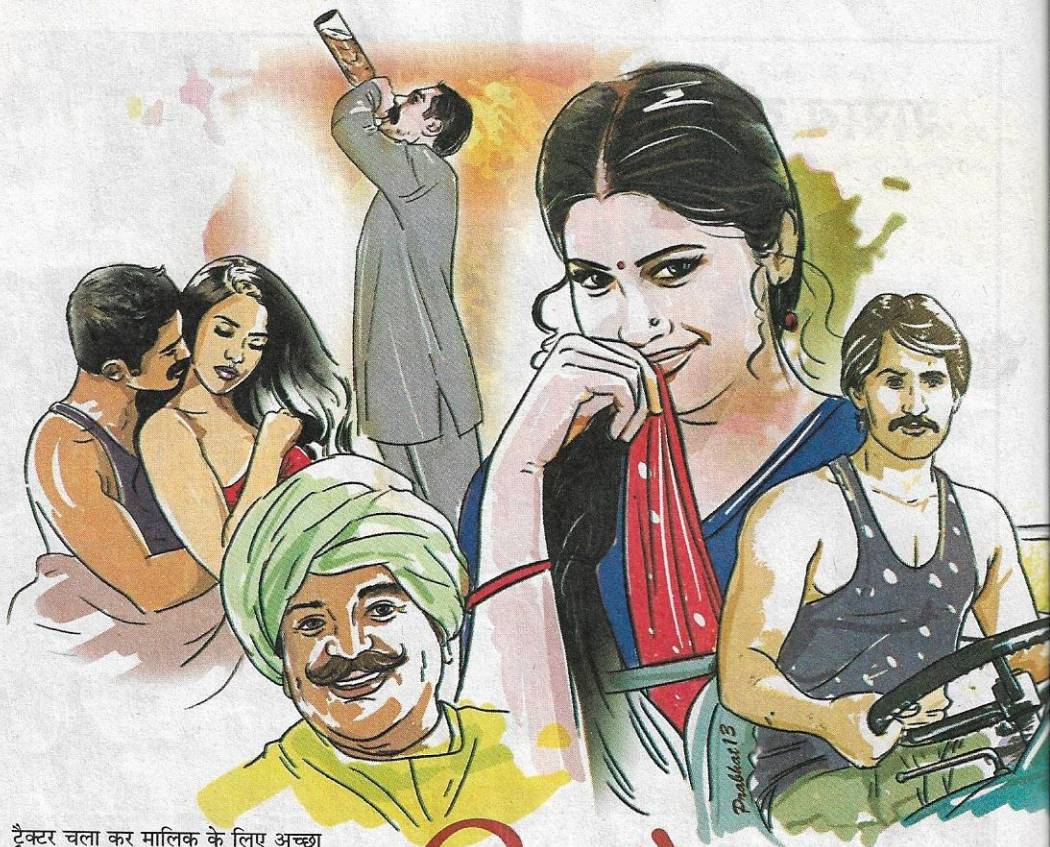
एक दिन रामू के खास दोस्त ने उसे समझाया, "अरे रामू, तू कहां का सतयुगी है, जो मालिक का घर भरता जा रहा है. आजकल तो सभी जगह दो नंबर का धंधा चल रहा है. सभी नेता चोर हैं. जो जहां पाता है, हाथ मार लेता है. जिस को कुछ नहीं मिलता, वही जमाने को कोसता रहता है. क्या हमारे गांव में किसी सिपाही या क्लर्क का मकान ईमानदारी से खड़ा हुआ है? तू भी बहती गंगा में हाथ धो ले. कौन जाने कि कब यह बनिया तुझे नौकरी से हटा दे.

"श्याम के लड़के बड़े हो गए हैं. आजकल के लड़के पुराने संबंध नहीं समझते. फायदा नहीं हुआ, तो तुम्हारी छुट्टी. फिर तुम क्या खाओगे? कैसे अपने बूढ़े मांबाप को पालोगे? फिर तुम बहन की शादी भी तो करनी है."

रामू के दिमाग में उस दोस्त की सलाह बैठ गई. अब वह इस उधेड़बुन में लग गया कि किस तरह आमदनी बढ़ाई जाए.

रामू को एक रास्ता दिखा. गांव के बाहर एक पंचर बनाने वाला व गाड़ियों में हवा भरने वाला एक टपरे में बोतलों में डीजल बेचता था. गांव के नए रईस व शौकीन नौजवान अपनी मोटरसाइकिलों के लिए उस से कम दामों पर डीजल खरीदते थे.

रामू से बातचीत के बाद वह उस से सस्ते दामों पर डीजल खरीदने के लिए तैयार हो गया.

रामू एक लिटर की बोतल में डीजल भर कर लाने लगा. श्याम जान ही नहीं पाता था, क्योंकि ट्रैक्टर सड़क पर तो चलता नहीं था. रामू हफ्ते में एक बार चोरी करने लगा. उस पैसे से वह बहन की शादी करने के सपने देखने लगा.

रामू के मातापिता खुश थे, क्योंकि रामू की ऊपरी आमदनी से उन के घर पर कभीकभी तेल में छोंक कर सब्जी बन जाती और महीने में 1-2 बार वे पूरी की दावत कर लेते थे. वे कभीकभी दावत में अपने दामाद और बेटी को भी बुलाते.

रामू का लालच बढ़ता गया. श्याम को चारों ओर से आमदनी हो रही थी. उसे भनक ही नहीं पड़ी कि रामू क्या गुल खिला रहा था.

पंचर की दुकान धीरेधीरे गांव के बेरोजगार व आवारा लड़कों का अड्डा बनती जा रही थी. वे कभीकभी मिल कर गांव से दूर हाईवे पर छोटीमोटी छिनताई करने लगे. कुछ महीनों बाद डीजल की बोतलें खाली होते ही उन में पास की दुकान से देशी शराब भर कर आने लगी और दुकान पर सिगरेट के कश निकलने लगे. रामू उस गलत सुहबत में पड़ गया. उसे भी शराब के नशे में मजा आने लगा.

रामू का संतोष नाम की एक लड़की से भी संबंध बन गया. वह 28 साल की खूबसूरत और बेहद चालाक लड़की थी. उस की मां सफाई का काम करती थी. बाप का पता नहीं था. वह रामू के पैसों पर ऐश करने लगी थी. रात को देर तक वह रामू की बांहों में पड़ी रहती थी. रामू उस की हर इच्छा पूरी करता और वह रामू की.
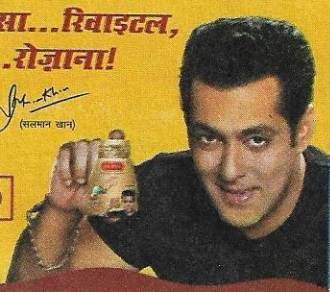
एक दिन श्याम किसी शादी में शामिल होने बाहर गया हुआ था. मैंथोल की फसल लगाने का समय था. गांव में चारों ओर पानी की तरह पैसा बह रहा था. लगातार ट्रैक्टर चलातेचलाते रामू थक जाता था. आज उसे ज्यादा शराब पीनी थी. उस ने ट्रैक्टर की टंकी से कुछ ज्यादा डीजल निकाला और उसे बेच कर ज्यादा शराब पी ली.

घर पहुंचते ही रामू की हालत गिरने लगी. उसे फौरन पास की डिस्पैंसरी में ले जाया गया. डाक्टर ने उस का इलाज करने से साफ मना कर दिया और जिला अस्पताल ने बिस्तर खाली न होने की वजह बता कर रामू को भरती नहीं किया.

कौन झमेले में पड़े? मरीज को मना करने पर कोई सजा नहीं, जबकि उस के मर जाने पर न जाने कितनी तरह की जांच और जवाबदेही होती है. सरकारी डाक्टर तो तनख्वाह लेने के लिए हैं, न कि इलाज करने के लिए.

रामू को झांसी के एक प्राइवेट नर्सिंग होम में भरती कराया गया. श्याम को मोबाइल फोन पर इस बात की जानकारी दी गई.

खबर मिलने के बाद श्याम के गले से शादी का भोज नीचे नहीं उतरा. अपना फर्ज निभाते हुए उस ने रामू के इलाज में पूरा खर्च देने के लिए फोन पर ही भरोसा दिया.

सभी कोशिशों के बावजूद रामू को बचाया नहीं जा सका. उस की लाश को गांव में लाया गया. यह पता नहीं चल सका कि रामू की मौत डीजल पीने से हुई या शराब पीने से.

'अंबेडकर बस्ती' के लोग एकजुट हो गए. उन्होंने तय किया कि वे रामू की मौत के लिए श्याम को जिम्मेदार ठहराएंगे और कम से कम 3 लाख रुपए का मुआवजा लेंगे.

एक आदमी ने धमकी दी, "अगर रामू की मौत के एवज में उस के मांबाप को उन की लड़की की शादी के लिए 3 लाख रुपए नहीं दिए जाते, तो हम श्याम के घर और ट्रैक्टर में आग लगा देंगे."

धमकी की यह खबर हरिजन टोली में बिजली की तरह फैल गई. श्याम परेशान हो गया. उस ने रामू के नुमाइंदों से अनेक मिन्नतें कीं, पर उन पर कोई असर न हुआ.

आखिर में वे इस बात पर राजी हुए कि अगर श्याम 3 लाख रुपए नकद नहीं दे सकता, तो रामू के मातापिता के नाम पर 5 बीघा जमीन लिख दे.

श्याम ने कहा, "पर अस्पताल की रिपोर्ट के मुताबिक रामू की मौत डीजल में मिली शराब पीने से हुई. अगर डीजल में कोई मिलावट थी, तो उस का जिम्मेदार रामू ही था, क्योंकि मेरा ट्रैक्टर पूरी तरह से उस के हवाले था."

भीड़ के शोर में श्याम की कही बात बेमतलब की हो गई, क्योंकि कोई उस की बात सुनने को तैयार नहीं था. प्रदेश का मुख्यमंत्री, जिला पुलिस सुपरिंटेंडैंट व कलक्टर सब हरिजन थे. केवल थाने का एसएचओ ही तिलकधारी पंडित था, पर उस ने भी श्याम की ओर से रिपोर्ट लिखने से मना कर दिया, "क्या मुझे अपनी नौकरी गंवानी है? मुझे भी अपना परिवार पालना है."

श्याम बिलख उठा. उस ने अपने जानपहचान वालों और सगेसंबंधियों से सलाहमशवरा किया. उधर हरिजन टोले के लोगों ने बर्फ मंगा कर रामू की लाश उस पर रख दी और वे श्याम के फैसले का इंतजार करने लगे.

मामला बिगड़ता देख श्याम को सलाह दी गई कि पैसा दे कर मामले को निबटा दिया जाए.

श्याम ने यहांवहां से रुपया इकट्ठा कर रामू के मातापिता को सब के सामने 3 लाख रुपए सौंपे.

रामू की तेरहवीं पर जम कर बकरे की दावत हुई. इस सब में एक लाख रुपए खर्च हुए. बाकी 2 लाख रुपए रामू की बहन ने दबोच लिए. उस की शादी एक ड्राइवर लड़के के साथ हुई थी, जिसे इलाके के 'दादा' का कर्ज चुकाना था. वह नंबर एक पियक्कड़ और जुआरी था.

रामू जीतेजी जो न कर सका, वह उस ने मर कर कर दिखाया.

संतोष को 2 महीने बाद पता चला कि वह पेट से है, तो उस की मां ने उसे घर से बाहर निकाल दिया. रामू के मातापिता के पास तो कुछ था नहीं. संतोष रामू की बहन के घर गई, तो उस ने धक्के मार कर निकाल दिया. बहन को डर था कि कहीं वह 2 लाख रुपए में से हिस्सा न मांगने लगे या उस के मर्द पर डोरे न डालने लगे.

6 महीने बाद जब संतोष ने सड़क किनारे बच्चा जना, तो कोई देखने तक न आया. 2 दिन बाद जच्चाबच्चा दोनों चल बसे, पर वहां कोई श्याम न था, जिस पर तोहमत लगाई जा सके, इसलिए पुरोहितों ने चिंता नहीं की.

अंबेडकर बस्ती के नए पुरोहितों ने अपनी जीत की खुशी में खूब नारे गाए. समाज जाए भाड़ में, नई पंडागीरी चमके, इस की नई कोशिशों पर एकदूसरे को जम कर बधाई दी गई. ●

अंधविश्वास

एमके मजूमदार

काले इल्म का काला कारोबार

भोपाल, मध्य प्रदेश के पिपलानी इलाके में रहने वाली ममता बाई (बदला नाम) की शादी को 10 साल हो चुके थे. उस के कोई औलाद नहीं थी. एक दिन वह अखबार में छपे गारंटी व मनचाही औलाद देने का दावा करने वाले एक तांत्रिक के पास गई और उसे अपनी समस्या बताई.

अगले दिन ही तांत्रिक उस के घर आया और पूजापाठ, तंत्रमंत्र का पाखंड कर के ममता से बोला, "घर में रखे जेवरों में खराबी आ गई है. उन में खतरनाक ब्रह्म राक्षस का वास हो गया है. उन्हें शुद्ध करना पड़ेगा."

तांत्रिक के कहने पर ममता घर में रखे सारे जेवर ले आई. जेवर देख कर तांत्रिक ने कहा, "घर में और भी जेवर रखे हैं, उन्हें भी ले आओ."

ममता ने बताया, "वे जेवर तो मेरी सास के हैं."

लेकिन तांत्रिक ने उन जेवरों को भी लाने के लिए कहा.

ममता ने सास के जेवरों का बौक्स ला कर तांत्रिक के सामने रख दिया. तांत्रिक ने जेवरों की पूजा की, जिस से कमरे में धुआं हो गया.

पूजा करने के बाद तांत्रिक ने जेवरों का बौक्स लौटाते हुए कहा, "3 दिन बाद तुम इस डब्बे को खोलना."

3 दिन बाद जब ममता ने जेवरों का बौक्स खोला, तो देखा कि उस में जेवर नहीं थे. वह तांत्रिक 6 लाख रुपए के जेवर ले कर चलता बना था.

मुंबई के एक तांत्रिक ने खुद को काले इल्म का जानकार बताया और एक तलाकशुदा औरत की परेशानी दूर करने के बहाने उस से रुपए ऐंठता रहा. इस के साथ ही वह उस का जिस्मानी शोषण भी करता रहा.

यही नहीं, उस तांत्रिक ने उस औरत की 2 बेटियों को भी नहीं छोड़ा. जब वे नाबालिग बेटियां पेट से हो गईं, तो वह वहां से फरार हो गया.

पुलिस ने जब उसे पकड़ा, तो पता चला कि वह करोड़ों रुपयों का मालिक है. मुंबई, सूरत और उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में उस की आलीशान कोठियां हैं, जिन की कीमत करोड़ों रुपए में है.

आज के जमाने में भी लोगों का वशीकरण व काला जादू जैसी बातों पर यकीन है. इस के चलते काले इल्म का कारोबार काफी बढ़ रहा है.

भारत के छोटेबड़े शहरों से निकलने वाले अखबारों, पत्रिकाओं और टैलीविजन में टोनाटोटका करने वाले बाबाओं के इश्तिहार सब से ज्यादा छपते हैं.

ऐसे इश्तिहारों में सौ फीसदी गारंटी, तुरंत असर, काम न होने पर पैसा वापस करने जैसी बातें कही जाती हैं. इन बातों को पढ़ कर लोग तांत्रिकों के पास दौड़ेदौड़े पहुंच जाते हैं. एक बार जो इन के पास पहुंच गया, तो समझो वह बरबाद हो गया.

बाबा समस्या दूर करने के बजाय उस की जिंदगी में नई समस्या पैदा कर देते हैं. वे पूजापाठ के नाम पर लोगों से पैसा वसूलते हैं.

समस्या का समाधान न होने पर बड़ी समस्या बता कर बड़ी पूजा यानी बड़ा खर्च बताते हैं. पूजा न करवाने पर उलटा लोगों पर असर होने का डर दिखा कर पैसा ऐंठते हैं.

ये तथाकथित बाबा अपने नाम के आगे मुल्ला, फकीर, तांत्रिक, पंडित, भक्त, उपासक, सूफी, काले इल्म के माहिर, आलिमों के आलिम, सच्चा फकीर, पहुंचे हुए तांत्रिक, खानदानी मियां जैसी बातें लिखते हैं.

इस के अलावा मुठमारन विशेषज्ञ, काली शक्ति के उपासक, बाबा सम्राट जैसी बातें लिखी होती हैं. इन्हें पढ़ कर लगता है, जैसे ये उन की डिगरियां हैं.

अब तो ये बाबा 100 परसैंट की गारंटी नहीं, बल्कि 5000-11000 परसैंट की गारंटी देते हैं. मेरे से पहले जो काम कर के दिखाएगा, उसे 51 लाख रुपए का इनाम दिया जाएगा. और तो और एक तांत्रिक ने तो 54 टाइम गोल्ड मैडल विजेता लिख रखा था. पता नहीं, इन्हें कौन गोल्ड मैडल बांट रहा है.

एक बाबा ने दावा किया है कि अब तक वह 76,586 केस हल कर चुका है. उस की बात पर यकीन करें, तो कह सकते हैं कि उस के पास इतने बेवकूफ पहुंच चुके हैं.

इन बाबाओं के चेले शहर या महल्ले में घूमघूम कर प्रचार करते हैं. पान की गुमटी, चाय की दुकान वगैरह जगहों पर इन बाबाओं की झूठी खूबियों का बखान कर के वे लोगों को अपनी ओर करते हैं.

इन बाबाओं का टारगेट ज्यादातर ऐसे लोग होते हैं, जिन के पास खूब पैसा होता है, पर परेशान रहते हैं. जो पति से परेशान हैं, प्यार में नाकाम हैं, जिस लड़की की शादी नहीं हो रही है, उन्हें अपनी बातों में ले कर वे बाबाओं तक पहुंचा देते हैं.

बाबा धीरेधीरे उसे अपने असर में लेने लगता है. इन बाबाओं की बातों के जाल में फंसा शख्स अगर इन्हें छोड़ने की कोशिश भी करता है, तो वे इतना डरा देते हैं कि उन से अलग होने की वह सोच भी नहीं सकता है.

ऐसे बाबाओं की नजर उस शख्स की जमीनजायदाद और औरतों के जिस्म पर भी होती है. अनेक बाबा तो मांबेटी के जिस्म लूटते पाए गए हैं.

काले इल्म की काट व पलट के बेताज बादशाह, बुखरी खानदान की खिदमत में 163 साल, बुजुर्गों के ताबे (काबू) में लिए हुए जिन्नात (जिन) के जरीए एक खास अमल (सिद्ध क्रिया) करता है, जिस में जीत के तमाम रास्ते खुल जाते हैं.

मेरी अमल से संगदिल से संगदिल महबूब बेपनाह मुहब्बत करने वाला बन जाएगा. आलिमों के आलिम, जिन्नात द्वारा मनचाहा काम करवाने की बात लिखी होती है. उन का दावा है कि किसी की आवाज, हाथ से लिखा परचा, पहना हुआ कपड़ा, शरीर के किसी भी हिस्से के बाल या नाखून, फोटो होने पर उस के ऊपर कोई भी काम किया जा सकता है.

कहा जाता है, बेवकूफ बनने के लिए लोग तैयार बैठे हैं. बस, उन्हें बेवकूफ बनाने वाला चाहिए. इस की वजह से काले इल्म वाले बाबाओं की काली दुकानदारी जम कर चल रही है. ●
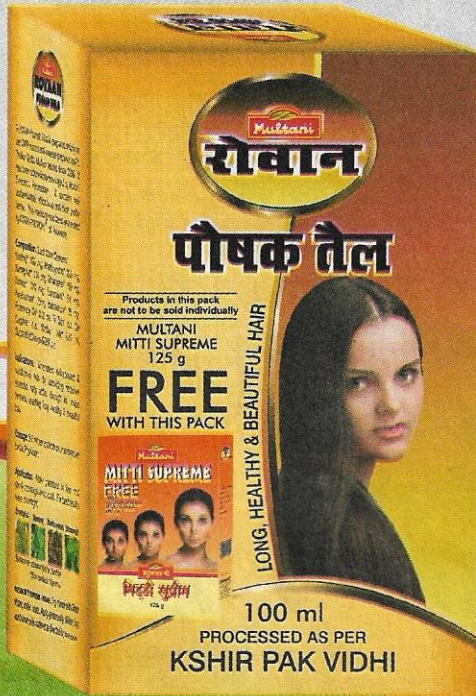
नेपाल

जिस्मफरोशी और तस्करी

प्रदीप कुमार नायक

नेपाल में जिस्म का धंधा काफी तेजी से फैल रहा है. संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र मोरचा के पार्षद सदस्य और पेशे से टीचर संतोष कुमार गणेश का कहना है कि पैसे बनाने के चक्कर में राजधानी काठमांडू समेत धरान, विर्तामोड़, विराटनगर, लहान, जनकपुर, वीरगंज समेत कई और छोटेबड़े शहरों, बाजारों के आसपास के इलाकों में बीयरबार और होटल तेजी से खुलते जा रहे हैं.

इन बीयरबारों और होटलों में शराब परोसने के नाम पर जिस्मफरोशी का धंधा भी चलता है, पश्चिमी पहनावे और तौरतरीकों की नकल हो रही है.

नेपाल में शराब पर किसी तरह की पाबंदी नहीं है. वहां शराब खुलेआम बनाई, बेची और पी जाती है. होटलों, बीयरबारों और छोटीछोटी गुमटीनुमा दुकानों में औरतें और जवान लड़कियां शराब बेचती और पिलाती नजर आती हैं.

होटलों और बीयरबारों में जवान लड़कियां शराब परोसने के अलावा अगर कोई ग्राहक पैसा खर्च करे, तो वे अपना जिस्म भी परोसती हैं.

इन में स्कूलकालेज की लड़कियां भी शामिल हैं. ज्यादातर लड़कियां अपनी मरजी से ऐशोआराम के लिए इस धंधे में उतरी हैं. वे सुखसुविधाओं के साधनों को इस्तेमाल करने के लिए ही इन बीयरबारों में काम करती हैं. ऐक्स्ट्रा इनकम के नाम पर अब अच्छे घरों की लड़कियां भी इस धंधे को अपनाने में नहीं हिचकिचाती हैं.

रोजाना सैकड़ों लोग भारत के किशनगंज, कटिहार, पूर्णिया, अररिया जिलों से नेपाल के विराटनगर, धरान, विर्तामोड़, काकड़भिट्ठा, दमक वगैरह शहरों के बीयरबारों और होटलों में आते हैं, तो दूसरी ओर भारत के ही मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी, समस्तीपुर जिलों से लोग नेपाल के जनकपुर, सिरहा, लहान, वीरगंज वगैरह शहरों के बीयरबारों और होटलों में जाते हैं, जहां 15-16 साल की लड़की से ले कर 30-35 साल की औरतें आसानी से मिल जाती हैं.

भारत के सफेदपोश लोग, अफसर और रईसों के बेटे वहां जाते हैं. इन में से कई तो वहां की पुलिस के हत्थे भी चढ़ चुके हैं, पर उन्हें ऐसा चसका लग चुका है कि वे वहां जाना नहीं छोड़ते हैं.

कई बार इसी तरह के रईसों को नेपाल पुलिस ने विराटनगर, जनकपुर, विर्तामोड़ के बीयरबारों और होटलों में जिस्मानी संबंध बनाते वक्त पकड़ा, तो पुलिस ने उस लड़की को कुछ नहीं कहा, लेकिन रईसजादों को पकड़ कर थाने ले गई, जहां घूस ले कर मामले को खत्म कर दिया गया.

नेपाल की पुलिस इस तरह के धंधे पर रोक नहीं लगाती, क्योंकि अपनी मरजी से देह धंधा करने पर रोक नहीं लगाई जा सकती. अगर कोई बीयरबार या होटल मालिक जबरदस्ती इस धंधे में किसी लड़की को धकेलता है, तो उस पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही जरूर हो सकती है.

जिस्मफरोशी के इस धंधे में कम उम्र की लड़कियों का ज्यादा भाव होता है, लेकिन इस में परेशानी की बात यह होती है कि कम उम्र में लड़कियों के अंग भी कम विकसित होते हैं.

इस परेशानी को दूर करने के लिए होटल व बीयरबार चलाने वाले कम उम्र की लड़कियों को समय से पहले जबरन जवान बनाने वाले हार्मोनों के इंजैक्शन लगा देते हैं.

इस के असर से कम उम्र में ही लड़कियों के

अंग जल्दी बड़े हो जाते हैं. स्कूलकालेज जाने वाली लड़कियों से ले कर कैरियर बनाने में नाकाम लड़कियां अपनी देह की कामयाबी का शौर्टकट तरीका मान कर जिस्म का धंधा करने में जुट जाती हैं.

मौडलिंग और ग्रुप डांस जैसे पेशे से जुड़ी कुछ लड़कियां भी इस धंधे में आ जाती हैं. इन की कीमत भी दूसरी लड़कियों से ज्यादा होती है.

इस धंधे को बढ़ावा देने के लिए यह सोच कम जिम्मेदार नहीं है कि यह मेरा बदन है, चाहे जैसे इस्तेमाल करूं. आज जिस्मफरोशी से जुड़ी लड़कियां इस तरह की बातें कर के इस काम को सही ठहराना चाहती हैं.

नेपाल में देह धंधे पर काबू पाने संबंधी उदार कानून से बीयरबार और होटल चलाने वाले चांदी काट रहे हैं.

इसी के साथ नेपाल में एड्स जैसी भयानक बीमारी भी फैल रही है. मगर पैसा कमाने के लालच के बावजूद एड्स का खौफ धंधे वालियों में कम नजर आता है, क्योंकि एड्स के प्रति जागरूक करने वाली संस्थाएं समयसमय पर उन्हें एड्स के बचाव के तरीके बताती रहती हैं, जिस का फायदा वे जिस्म का धंधा करने में उठाती हैं.

नेपाल की 'माइती नेपाल' और 'भरूका कम्यूनिटी केयर सैंटर' जैसी स्वयंसेवी संस्थाएं इन लड़कियों को इस दलदल में जाने से रोकने और इस से बाहर निकालने में जुटी हैं. -*क्रमश :* ●

आपसे मिलिये

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति एवं मान्यता प्राप्त साइको सेक्सोलोजिस्ट

लाइफटाइम एचीवमेन्ट अवार्ड से लन्दन में सम्मानित

B.S.c.(Lko. Univ.), Ayurvedacharya(Delhi), M.R.S.H. (London),M.W.A.S.(USA)

यौन रोग विशेषज्ञ डॉ. पी.के. जैन को सबसे लोकप्रिय कामयाब एवं वैज्ञानिक इलाजों के लिए **Jain TV** ने आमंत्रित किया तथा अपोलो हॉस्पिटल दिल्ली के वरिष्ठ यूरोलॉजिस्ट ने इस विषय पर डॉ. साहब से चर्चा की। इस विधा के सबसे सफलतम् चिकित्सक डॉ. पी.के. जैन साहब को सर्च वेबसाइट **www.google.co.in** ने अपनी रैंकिंग में टॉप साइको सेक्सोलोजिस्ट में रखा है। प्रस्तुत हैं उन से एक भेंट वार्ता:

❖आपके अनुसार कमजोरी क्यों होती है, इनके लक्षण क्या हैं और इनको दूर करने से रोगी क्या–क्या लाभ उठाता है?

अज्ञानतावश प्रायः कुछ लोग अपने अमूल्य रत्न वीर्य को अत्यधिक नष्ट कर देते हैं एवं रोगी पहले मानसिक कमजोरी एवं पौरुषहीनता महसूस करता है। अतः यौन शक्ति एवं स्वास्थ्य का दिनों दिन घटना प्रमुख लक्षण है। हमारे इलाज द्वारा निरन्तर स्वास्थ्य वृद्धि, आत्मविश्वास का बढ़ना तथा पौरुष शक्ति बढ़ती है।

❖डा० साहब, आप डा० पी. के. जैन क्लीनिक प्रा०लि० के डायरेक्टर हैं तो आप बांसमंडी क्लीनिक और महाराणा क्लीनिक, दोनों जगह मरीजों से एक साथ कैसे मिलते हैं?

एक इन्टरनेशनल क्लीनिक के डायरेक्टर होने के नाते मेरा सबसे बड़ा कर्तव्य है कि अपनी फैक्ट्री में बनने वाली दवाओं की गुणवत्ता विश्वस्तरी हो और मरीज को ज्यादा से ज्यादा लाभ हो अतः मेरा ध्यान दवाइयों के निर्माण पर रहता है। महाराणा क्लीनिक के हेड डॉक्टर पियूष जैन हैं और बांसमण्डी क्लीनिक के हेड डॉक्टर संचय जैन हैं। इनके अलावा मेरे निर्देशानुसार बांसमण्डी एवं महाराणा क्लीनिक में बेहद कुशल एवं क्वालीफाइड टीम पूरी तन्मयता के साथ मरीजों को पूर्णतया संतुष्ट करने की पूरी कोशिश करती है।

❖डॉ. साहब, कृपया अपने विश्व के एकमात्र सफल लिंग वृद्धि कोर्स के बारे में जानकारी दें?

यह कोर्स मेरे वर्षों के अनुभव के आधार पर स्वनिर्मित अनमोल दवाओं (स्वर्ण, हीरक तथा रजत भस्मों) का ऐसा खजाना है जिनका प्रयोग करने पर आप अनुभव करेंगे चार बहुत महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन... 1. लिंग की सख्ती में वृद्धि, 2. सेक्स के दौरान ज्यादा देर तक जोश बना रहना, 3. वीर्य स्खलन की मात्रा तथा समय में वृद्धि, 4. सेक्स के लिए किसी भी उम्र में भरपूर इच्छा और जोश कायम रहना।

डॉ.पी.के जैन को लन्दन में लार्ड विस्काउन्ट स्लिम (मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स) ब्रिटिश गवर्नमेंट द्वारा लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करते हुए

❖डॉ. साहब, मैंने पढ़ा है कि आपको 'इन्टरनेशनल लाइफ टाइम एचीवर' अवार्ड प्राप्त हुआ है। इसके अलावा आपको "भारत गौरव सम्मान" से सम्मानित किया गया। कब और कहां?

हां, लन्दन में मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स लार्ड विस्काउन्ट स्लिम द्वारा मुझे यौन रोगों के सफल एवं सबसे कामयाब इलाजों हेतु इन्टरनेशनल लाइफ टाइम एचीवर अवार्ड तथा नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री शाहनवाज हुसैन द्वारा भारत गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया है।

❖ लखनऊ में आपके मिलते–जुलते नाम से कई लोग डुप्लीकेट प्रैक्टिस में संलग्न हैं तो लोग आपके पास आने से पहले भटक न जायें इसके लिए लोगों को क्या करना चाहिए?

विश्व प्रसिद्ध गुप्तरोग चिकित्सक डॉ. पी. के. जैन जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय गुप्तरोग विशेषज्ञों की श्रृंखला में आते हैं से मिलने के लिए बांसमण्डी क्लीनिक स्टेशन परिसर से 1 कि0मी0 आगे बांसमण्डी चौराहे पर है। क्लीनिक के बगल में होटल आशा एवं होटल कॉन्टिनेन्टल के नीचे देखकर आश्वस्त हो लें कि आप असली डॉ. पी. के. जैन बांसमण्डी क्लीनिक पहुंच गये हैं। हमारी निःशुल्क पेशेन्ट मोबाइल वैन (एम्बुलेन्स) आपको पार्सल ऑफिस के सामने सुबह 8.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक उपलब्ध रहती है। उसकी निःशुल्क सेवा प्राप्त कर सकते हैं। असुविधा होने पर मोबाइल नं0 9415402646 पर तुरन्त सम्पर्क कर सकते हैं। आज यौन रोग, शिथिलता, कमजोरी एवं संतानहीनता के लिए डॉ. पी. के. जैन का नाम अन्तर्राष्ट्रीय साइको सेक्सोलाजिस्ट की श्रृंखला में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। डॉ. साहब के इलाज की सफलता को देखते हुए इलाज खर्च बिलकुल वाजिब है। *प्रस्तुति डॉ. नलिनी*

INTERVIEW

सेक्स रोग	संतानहीनता	गुप्त रोग
● पुरुषों में यौन कमजोरी, शीघ्रपतन, धातुरोग, स्वप्नदोष, इच्छा में कमी, सेक्स पावर में कमी का सफलतम इलाज। ● स्त्रियों में सेक्स की इच्छा न होना, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, का सफल इलाज।	●शुक्राणुओं की कम संख्या (Oligospermia), गतिशीलता में कमी, शुक्राणुहीनता (Azoospermia), वीर्य न बनना या कमी होने पर सफल इलाज। (Asemenosis)	●सिफलिस(फिरंग,आतशक) ●गोनोरिया(सुजाक, प्रमेह)।

इलाज खर्च 9,500/- से 15,500/- तक हो सकता है हमारे यहां इन इलाजों के अलावा कुछ विशिष्ट इलाज भी किये जाते हैं जो कि 35,500/- तथा इससे ऊपर भी होते हैं जो कि रोग की दशा पर निर्भर करते हैं। हमारी दवाओं के कोर्स 21 दिन के होते है। डॉ0 साहब का पता नोट कर लें।

Facts based on Ayurved shastra Results may vary Person to Person
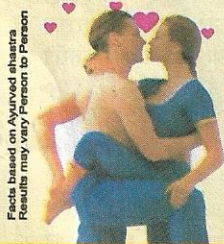
सब से बड़े वाले डा॰ साहब, डा॰ पी॰के जैन केवल लखनऊ मे निम्न पते पर ही मिलते है।

ORIGINAL CLINIC AT LUCKNOW ONLY ESTD.1926

BEST SEX CLINIC OF THE MILLENIUM एवार्ड से सम्मानित

डा. पी. के. जैन'S बांसमण्डी क्लीनिक प्रा०लि०

लाटूश रोड, बांसमण्डी चौराहे पर, लखनऊ–226018

लखनऊ के बाहर हमारी कोई शाखा नहीं है।

Subject to Lucknow Jurisdiction

DR.P.K.JAIN B. Sc. (Lko. Univ.), Ayruvedacharya (Delhi), M.R.S.H. (London), M.W.A.S. (U.S.A.)

DR.PIYUSH JAIN B.Sc.(Lko.Univ.), B.A.M.S. Ayurvedacharya (Vinoba Bhave Univ.) M.R.S.H. (London)

DR.SANCHAY JAIN B.Sc.(Lko.Univ.), B.A.M.S. Ayurvedacharya (Topper of Nagpur Univ.) M.R.S.H. (London)

Mobile:9415027773, 9415402646, 9838599444

Phone :0522-2637823, 0522-2681417, 0522-2638932

visit us at : www.drpkjainclinic.com E-mail : drsanchay@rediffmail.com/drpiush@rediffmail.com

असुविधा से बचने के लिये मोबाइल पर एपाइंटमेन्ट अवश्य ले लें। विस्तृत जानकारी के लिये डाक्टर साहब से मिलें

एशिया का नं० 1 टॉप अल्ट्रामॉडर्न क्लीनिक

इनाम जीतिए

प्रतियोगिता

हर बार हजारों रुपए के इनाम

कोई फीस नहीं

पहले खास विजेता को यूनाईटेड परिवार की ओर से यूनाईटेड प्रेशर कुकर और बाकी को नकद इनाम

प्रतियोगिता नं. 485

कूपन भेजने वालों से: नीचे दिए गए 5 सवालों के हरेक के 4 जवाब दिए जा रहे हैं. आप जिस जवाब को ठीक समझें, उस पर सही (✓) का निशान लगाएं.

सभी सवालों के सही जवाब देने वाले को हजारों रुपए का नकद इनाम. सही जवाब देने वाले ज्यादा होंगे तो 14 लोगों के नाम लाटरी से निकाले जाएंगे. रकम बांट कर दी जाएगी. *यहां छपे कागज को काट कर साधारण डाक से भेजें.*

आखिरी तारीख 5 जून, 2013 है.

प्रतियोगिता नंबर 485

A. मास्को किस देश की राजधानी है?

(B) अमेरिका ☐ (C) यूनान ☐
(D) इटली ☐ (E) रूस ☐

F. भारत के कानून मंत्री का नाम?

(G) पी. चिदंबरम ☐ (H) कपिल सिब्बल ☐
(I) अश्विनी कुमार ☐ (J) नवीन जिंदल ☐

K. 'विश्व दूरसंचार दिवस' कब मनाते हैं?

(L) 17 मई ☐ (M) 20 मई ☐
(N) 22 मई ☐ (O) 24 मई ☐

P. क्रिस गेल किस खेल का खिलाड़ी है?

(Q) कुश्ती ☐ (R) कबड्डी ☐
(S) पोलो ☐ (T) क्रिकेट ☐

U. फिल्म 'आशिकी 2' की हीरोइन?

(V) श्रद्धा कपूर ☐ (W) अमृता राव ☐
(X) असिन ☐ (Y) आलिया भट्ट ☐

इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पता है:

सरस सलिल, इनाम प्रतियोगिता-485, पोस्ट बाक्स - 5814, नई दिल्ली-110055.

नाम.. उम्र..............

पूरा पता (फोन सहित)..

....

इनाम प्रतियोगिता-482 के उत्तर

प्रतियोगिता 482 के उत्तर : A. (B), F. (J), K. (N), P. (Q), U. (W).

प्रतियोगिता 482 के विजेता : 1. विमलेश कुमार, जोधपुर, 2. भूरी देवी, बाड़मेर, 3. किशोर कुमार, पटना, 4. सुशीला कुमारी, आसनसोल, 5. पी. उमा शंकर राव, सुंदरगढ़, 6. विजय कुमार, हमीरपुर, 7. एके रावत, जबलपुर, 8. मदन लाल, शहीद भगत सिंह नगर, 9. सत्यम कुमार सिंह 'चौहान', वेल्लूर, 10. उमेश कुमार राय, मुंबई, 11. राखी झा, कोलकाता, 12. हरजीत आहूजा, बेंगलुरु, 13. कमलेश कुमार, सिकंदराबाद, 14. गौरव कुमार, नालंदा.

यूनाईटेड प्रेशर कुकर विजेता : गीता देवी, कानपुर.

कमाल की चीज है मार्शल आर्ट

वीके सिंह
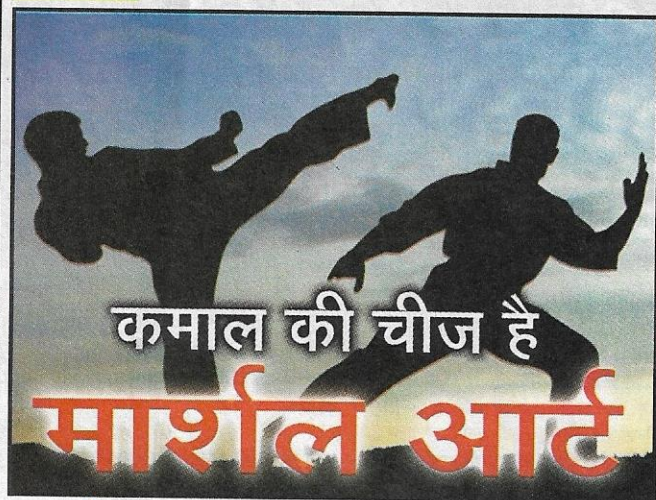
मार्शल आर्ट लड़ने की एक बहुत पुरानी कला है, जो बिना हथियार के लड़ी जाती थी. यह एक ऐसी आर्ट है, जिस में एक शख्स अनेक लोगों से अपनी हिफाजत करते हुए उन्हें मात दे कर खुद को बचा सकता है.

आखिर मार्शल आर्ट होती क्या है? तकनीकी भाषा में कहें, तो बिना किसी हथियार का इस्तेमाल किए अपनी हिफाजत करने की कला को ही मार्शल आर्ट कहा जाता है.

मार्शल आर्ट जैसे खेल से इनसान में आत्मविश्वास और अपनी हिफाजत करने की भावना का विकास होता है. यह आर्ट दिमागी ताकत को भी विकसित करती है.

जब भी मार्शल आर्ट की बात की जाती है, तो ब्रूस ली, जैकी चैन जैसे फिल्मी लोगों का नाम जेहन में आता है. इन्हीं लोगों ने किशोरों में मार्शल आर्ट के प्रति उत्सुकता और इसे सीखने की लालसा जगाई है.

अगर आप भी ब्रूस ली और जैकी चैन की तरह मार्शल आर्ट के काबिल खिलाड़ी बन कर स्कूल में, कालेज में सब को मार्शल आर्ट से अपना दीवाना बनाना चाहते हैं, तो इसे सीखने में देर न करें. कुछ ही महीनों की ट्रेनिंग के बाद ही आप इस आर्ट के मास्टर बन जाएंगे.

आप को याद होगा कि कुछ साल पहले टैलीविजन पर 'शक्तिमान' नाम के सीरियल को देख कर देशभर में स्टंट सीन को दोहराने के चलते काफी हादसे हुए थे.

इस की वजह यह थी कि किसी को भी इस कला के बारे में अभ्यास तो था नहीं और न ही किसी तरह की उन लोगों ने कोई ट्रेनिंग ली थी. लेकिन अब आज के नौजवान और किशोर मार्शल आर्ट के तकनीकी गुर सीख रहे हैं.

वे अब मार्शल आर्ट से आत्मनिर्भरता और आत्मरक्षा का दोहरा मजा ले रहे हैं. तभी तो आज भारत में इस कला को सिखाने वाले इंस्टीट्यूट खुलते जा रहे हैं.

मार्शल आर्ट को किसी भी उम्र में सीखा जा सकता है, पर इसे किशोरावस्था में ही सीख लिया जाए, तो आगे चल कर इसे कैरियर के रूप में अपनाया जा सकता है.

मार्शल आर्ट में ट्रेंड होने पर सेना, अर्धसैनिक बलों, पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों में रोजगार के अलावा जिम, हैल्थ क्लब, फिटनैस सैंटर में इंस्ट्रक्टर के रूप में भी काम मिल सकता है.

इस की ट्रेनिंग के शुरू में फिजिकल ट्रेनिंग, हाथपैर चलाने की कला और उछलकूद ही सिखाई जाती है. लेकिन आखिरी दौर में दांवपेंच, स्टाइल और सामने वाले को चोट पहुंचाने की कला सिखाई जाती है. इसे 'ब्लैक बैल्ट' भी कहा जाता है.

मार्शल आर्ट के तहत आने वाले जूडोकराटे को फर्स्ट राउंड से ले कर 'ब्लैक बैल्ट' तक पहुंचने में 3 से 4 साल का समय लग जाता है.

मार्शल आर्ट के जरीए हम मुश्किल समय में अपनी सुरक्षा खुद कर सकते हैं. अगर आप को कोई बिना वजह परेशान करे, तो उसे सबक सिखाने का बेहतरीन तरीका है मार्शल आर्ट.

मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग लड़कियों के लिए बहुत कारगर साबित हो सकती है. वैसे, इसे सीखने के लिए इंस्टीट्यूट में लड़कियों की तादाद बढ़ रही है, इसलिए लड़कियों को बढ़चढ़ कर मार्शल आर्ट सीखनी चाहिए, ताकि वे बिना डरे खुद की रक्षा कर सकें.

देश में गैंगरेप की बढ़ती घटना के बाद तो मार्शल आर्ट को सीखने के लिए लड़कियों की तादाद में काफी बढ़ोतरी हुई है. ●

बालों का गिरना व डैंड्रफ की समस्या

ASWINI

अब आप के शहर में

अश्विनी होम्यो हेयर औयल, बालों का गिरना और डैन्ड्रफ को रोकने के लिए एशिया का सबसे ज्यादा बिकने वाला अश्विनी हेयर औयल.

दक्षिणी भारत, पूर्वी भारत, महाराष्ट्र और गोआ के **3 मिलियन** से अधिक संतुष्ट उपभोक्ता **अश्विनी होम्यो हेयर औयल** पिछले 23 वर्षों से प्रयोग कर रहे हैं. **सिंगापुर, मलेशिया, श्रीलंका, दुबई व कतर** में भी प्रसिद्ध.

हमारे हेयर केयर टेलीक्लिनिक पर श्रीमति वरालक्ष्मी का फोन आया. वे अपने गिरते बालों की समस्या से परेशान थीं. हमने उन्हें **अश्विनी होम्यो हेयर औयल** प्रयोग करने की सलाह दी और नतीजा आपके सामने है.

प्रयोग से पहले

प्रयोग के बाद
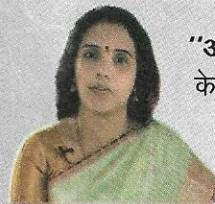
"**अश्विनी होम्यो हेयर औयल** से न केवल मेरे बालों का गिरना बंद हुआ, बल्कि अब मेरे बाल तेजी से बढ़ भी रहे हैं."

श्रीमति **वरालक्ष्मी**, गृहणी, त्रिची, तमिलनाडू.

45/- only for 100ml

ASWINI®
HOMEO ARNICA **HAIR OIL**

ASWINI HOMEO & AYURVEDIC PRODUCTS PVT. LTD.
Moosapet, Hyderabad-500018.
Customer Care : 040-23711175, Email: customercare@aswini.com, Web: www.aswini.com

कहानी

आकर्षण

डा. कुंवर गुलाब सिंह

न जाने कितने लोगों ने हुस्न की उस मलिका को अपना दिल देना चाहा होगा, लेकिन चांद हर किसी को नहीं मिलता. जब वह तंग टीशर्ट और मिनी स्कर्ट पहनती थी, तो देखने वालों का दिल मचल जाता था.

जहां एक ओर निशा नशीली आंखों वाली खूबसूरत लड़की थी, वहीं दूसरी ओर हरी चमकीली आंखों वाली रिया की अदा भी मोहक थी.

घर से भागी हुई निशा को जब कोई महफूज ठिकाना नहीं मिला, तो उस ने खुराना फर्म में 5 हजार रुपए महीने की नौकरी कर ली.

धीरेधीरे निशा का फर्म के मालिक निशांत से मेलजोल का सिलसिला बढ़ने लगा और वह उस की ललचाई निगाहों में बसने लगी.

यह फर्म विदेशों में माल सप्लाई करती थी. उस माल की जांचपड़ताल के लिए विदेशी अफसर 2-4 महीने में दिल्ली पहुंच कर पूरा हिसाबकिताब करते थे.

20 साला रिया भी खुराना फर्म में पहले से काम करती थी. एक दिन जब निशा देर से दफ्तर पहुंची, तो रिया उस पर ताना मारते हुए बोली, "आ गई हुस्नपरी. भला यहां कौन तुम से देर से आने की वजह पूछने की हिम्मत करेगा? तुम बौस की चहेती जो बनती जा रही हो."

"जलन होती है क्या?" निशा ने तिलमिला कर कहा.

"लगता है, तुम बुरा मान गई. मैं तो यों ही मजाक कर रही थी. दरअसल, बौस के कमरे से 2 बार बुलावा आ चुका है. उन्हें किसी फाइल की जरूरत है, जो तुम्हारी टेबल की दराज में बंद है.

"चाबी तुम्हारे पास है, इसलिए उसे खोला कैसे जा सकता था. अब तुम आ गई हो, तो झटपट निकाल कर ले जाओ."

"मैं जरा बाथरूम में जा कर मुंह धो लूं. बस में इतनी भीड़ थी कि पसीने से तरबतर हो गई हूं," इतना कह कर निशा बाथरूम से जल्दी निबट कर बौस के केबिन की ओर गई. चपरासी ने मुसकरा कर दरवाजा खोल दिया.

निशा के अंदर जाते ही किसी दूसरे को बौस से मिलने का मौका कम ही मिलता था. अंदर क्या गुल खिलता था, यह बात शायद रिया जानती थी.

केबिन में घुसते ही होंठों पर मुसकराहट लाते हुए निशा बोली, "सर, मुझे कुछ देर हो गई. कैसे याद किया?"

बौस ने निशा की ओर देखा. उस ने अपने काले घुंघराले लंबे बालों को कसने के लिए पतला आसमानी रंग का रेशमी फीता बांध रखा था. उस के टौप के ऊपरी 2 बटन खुले थे.

"आओआओ, वहां क्यों खड़ी हो? कुरसी पर बैठो," बौस बोला.

सामने कुरसी पर अदा के साथ बैठते हुए निशा बोली, "क्या करूं सर, खचाखच भरी बस सामने से निकल गई, चढ़ने का मौका ही नहीं मिला."

"कोई बात नहीं. तुम जा कर कुछ देर आराम कर लो, फिर कल वाली दी गई फाइल ले कर आना."

कोई दूसरा होता, तो बौस भड़क कर सारा गुस्सा उस पर उतार देते, लेकिन मामला एक हसीना का था, इसलिए वे चुप रह गए.

अपनी सीट पर बैठते ही निशा ने टेबल की दराज खोली, फाइल निकाली. उसी समय बगल में बैठी रिया ने हंसते हुए पूछा, "क्या कहा बौस ने?"

"बोलता क्या, मुझ पर नजरें टिकाईं, तो सबकुछ भूल गया," निशा बोली.

"वह तो मैं जानती थी. तेरी नजरों के तीर ने जब उसे पहले ही घायल कर दिया, तो बोलने के लिए गले की आवाज का रुक जाना कोई बड़ी बात नहीं."

"तुम्हें क्यों जलन होती है रिया?"

"जब किसी से इश्क होता है, तो होंठ सिल जाते हैं और निगाहें बोलना शुरू कर देती हैं. तुम कुछ दिनों में बौस को पहचान लोगी."

"मुझे तो नहीं लगता कि बौस की नीयत में कुछ खोट है," निशा बोली.

"यह तुम्हारा भरम है. सच जल्दी ही तुम्हारे सामने आ जाएगा."

शाम के 6 बजे तक दफ्तर से तकरीबन सभी लोग जा चुके थे. निशा ने रिया से कहा, "चलो, हम चल कर किसी पास के रैस्टोरैंट में कुछ खापी लेते हैं. वहीं पर बातें भी होती रहेंगी."

"ठीक है," और दोनों बाहर जाने की तैयारी करने लगीं, तभी बौस ने निशा को अपने कमरे में बुलाया.

"लो, बौस को तुम्हारी याद आ गई. अब तो घंटेभर से पहले तुम्हें फुरसत नहीं मिलेगी. तुम बौस से निबटती रहना, मैं अपने क्वार्टर पर जा रही हूं. फिर किसी दिन रैस्टोरैंट में चलेंगे," इतना कह कर रिया चली गई.

"कैसे याद किया सर?" निशा ने बौस के कमरे में जा कर पूछा.

"बैठो. आज तुम्हें कुछ जरूरी काम से देर तक रुकना पड़ेगा. तुम थकी होगी, इसलिए मैं ने कौफी मंगाई है."

निशा ने अपना हैंडबैग अलग रखा और बौस की टेबल के सामने कुरसी पर इतमीनान से बैठ गई.

थोड़ी देर बाद किसी होटल का बैरा कौफी सैट और नाश्ता डाइनिंग टेबल पर सजाने लगा. साथ में अंगरेजी शराब की बोतल, कांच के गिलास और बर्फ भी थी.

दूसरे दिन रिया ने निशा से 2 घंटा देर से आने की वजह जाननी चाही, तो वह चुप रही. उस दिन बौस भी बहुत देर से दफ्तर पहुंचा था.

"मेरी जान, तुम ने बौस के साथ रातभर क्या गुल खिलाया?"

"जो भी समझ लो."

"उस ने तुम्हें रात को कितने बजे छोड़ा?"

"3 बज रहे थे. बौस मुझे खुद अपनी कार से घर तक छोड़ने गए थे."

"यह तो होना ही था. रातभर काफी परेशान किया होगा, जैसा कि तुम्हारे मुरझाए चेहरे से लग रहा है."

"घर पहुंच कर मुझे देर तक नींद नहीं आई. तुम्हारी चेतावनी भी याद आने लगी थी."

"और क्या हुआ?"

"हम दोनों शाम को रैस्टोरैंट में बातें करेंगे. मुझे कुछ जरूरी काम सौंपा गया है," निशा ने धीमी आवाज में कहा.

रिया दिनभर यह जानने को बेचैन थी कि बौस ने निशा पर किस तरह फंदा डाला और उस के साथ क्याक्या हुआ, लेकिन निशा टालती रही.

शाम को दफ्तर खत्म होने के बाद जब लोग घर जाने की तैयारी करने लगे, तब चपरासी ने रिया को खबर दी, "बौस आप को बुला रहे हैं."

उसे जाते देख कर निशा ने कहा, "लो, आज तुम्हारी बारी है. अच्छी तरह निबट लेना. मैं तो चली."

जब रिया बौस के केबिन में पहुंची, तो बौस ने कहा, "रिया, स्कौटलैंड से वहां की बड़ी फर्म का सचिव पीटर फेरी हमारी कंपनी के माल और फाइलों की जांच करने आया है. दिन में मैं ने उसे फैक्टरी में घुमाफिरा कर तो खुश कर दिया, लेकिन रात में वह होटल नाज में फाइलों की चैकिंग करेगा.

"उस का कमरा नंबर 120 है. तुम्हें फाइलों की चैकिंग इस तरह करानी है, ताकि उसे कोई गड़बड़ी न मिले. तुम इस मामले में काफी होशियार हो. पिछली रात मैं ने निशा से सारी फाइलें ठीक करा दी हैं."

"सर, अगर आप निशा को ही मेरी
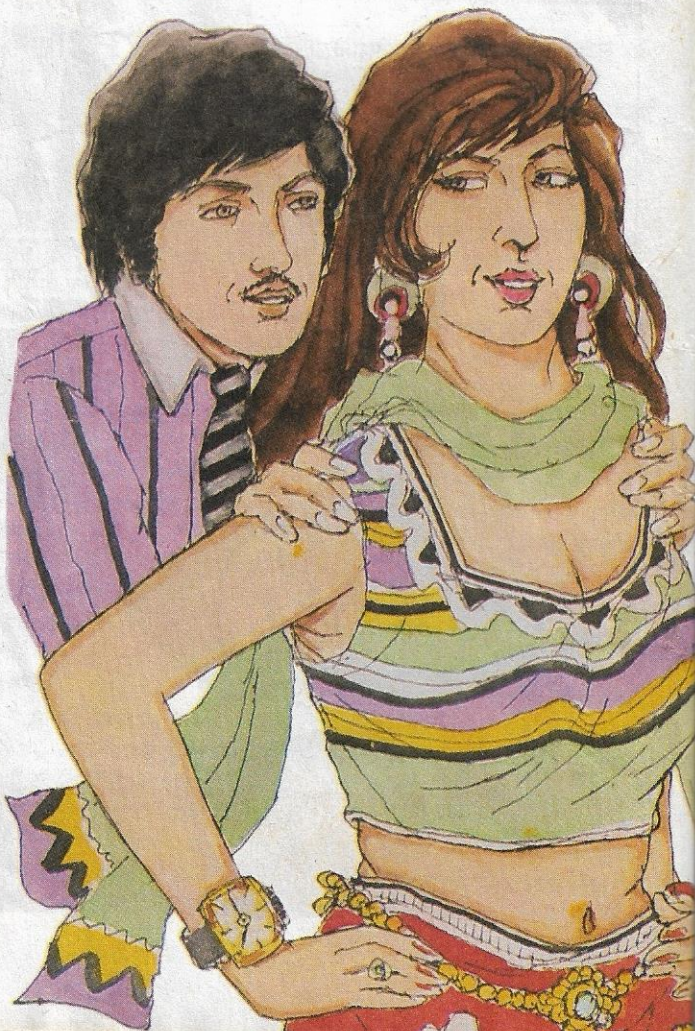
जगह भेज देंगे, तो अच्छा रहेगा. विदेश से आए लोगों के पास हर बार मुझे ही जाना पड़ता है," रिया ने अपनी बात रखी.

"इसलिए कि तुम उन्हें बेहतर तरीके से खुश करती रही हो. निशा तो अभी ठीक से सीख भी नहीं पाई है."

"उन में कुछ लोग ज्यादा ही परेशान करते हैं," रिया ने कहा.

"नौकरी करनी है, तो यह सब भी बरदाश्त करना पड़ेगा. तुम्हें 10 हजार की तनख्वाह यों ही नहीं दी जाती. मेरा ड्राइवर तुम्हें तुम्हारे घर से होटल पहुंचाएगा. वहां का काम खत्म होने पर वह तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ देगा.

"तुम्हारे खानेपीने का इंतजाम पीटर फेरी के साथ ही रहेगा. अगर वह तुम्हारी सेवा से खुश हो गया, तो अपनी फर्म को और ज्यादा माल विदेश भेजने में सहूलियत होगी," बौस ने समझाया.

"अब मैं जाऊं सर?" रिया ने पूछा.

"जाओ. खयाल रखना," बौस ने मुसकरा कर उसे विदा किया.

दूसरे दिन रिया दफ्तर नहीं आई. रातभर उसे होटल नाज में रहना पड़ा था.

तीसरे दिन रिया चहकते हुए निशा से बोली, "मैं बहुत खुश हूं. मैं तुम से अपनी खुशी का इजहार रैस्टोरैंट में करना चाहती हूं. चलो, वहां चलें."

"लेकिन..."

"इस समय मूड मत खराब करो," कहते हुए रिया निशा को खींच कर रैस्टोरैंट ले गई.

रैस्टोरैंट में रिया ने निशा के लिए कौफी और अपने लिए ह्विस्की और नाश्ते का और्डर दिया.

"आज मैं दफ्तर नहीं जाऊंगी. तुम जा कर बौस को बता देना कि मैं बहुत थकी हुई हूं. वे समझ जाएंगे कि मुझे स्कौटलैंड से आए पीटर फेरी की रातभर सेवा करनी पड़ी थी."

"अब मैं समझी," निशा हंसते हुए रिया से बोली.

रिया ने मुसकराते हुए बताया, "यार, पीटर फेरी तो गजब का मर्द निकला. मैं ने आज तक ऐसा दिलदार मर्द नहीं देखा. वह पूरी रात मेरे जिस्म से खेलता रहा.

"मैं ने उसे कई बार फाइल पढ़ने के लिए कहा, लेकिन नशे में वह केवल हर पन्ने पर सही का निशान लगाते हुए दस्तखत करता रहा.

"वह बारबार मेरी तारीफों के पुल बांधता रहा. उस की बातें सुन कर मैं भी मन ही मन खुश थी. हर औरत अपनी खूबसूरती की तारीफ सुन कर मर्द पर ज्यादा मेहरबान होती है.

"न जाने कब किस मोड़ पर किसी से प्यार हो जाए, यह कहा नहीं जा सकता. हम लाख अपने दिल को समझाएं, नियम और मर्यादा में खुद को बांध कर रखें, मगर दिल अगर किसी पर मरमिटना चाहे, तो दिमाग कुछ नहीं सुनतासोचता.

"उस मर्द के बच्चे ने मेरा सारा जिस्म निचोड़ डाला. जवानी एक ऐसा नशा होती है, जिस में औरत हो या मर्द, दोनों में मदहोशी बनी रहती है.

"सच कहूं, पीटर फेरी इतना खुश था कि वह जातेजाते मेरे पर्स में 20 हजार रुपए रख गया और दोबारा मुझ से ही मिलने का वादा लेता गया."

इस के बाद कुछ देर तक दोनों में खामोशी रही, फिर रिया ने निशा से पूछा, "यार, तुम्हारी रात बौस के साथ कैसी कटी थी?"

"मेरे साथ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था, क्योंकि जिस दिन ऐसी नौबत आएगी, मैं नौकरी से इस्तीफा दे दूंगी. वैसे, मैं तुम्हें बता दूं कि बौस मेरे साथ शादी करना चाहता है.

"उस रात वह मुझे बारबार यही समझाता रहा कि उस से शादी कर के मैं बेहद खुश रहूंगी, क्योंकि अभी तक उसे ऐसी कोई लड़की पसंद नहीं आई, जिसे वह अपना हमसफर बना सके.

"उस ने मुझे यह भी बताया कि तुम ने उस पर कई बार डोरे डालने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रही.

"सच पूछो, तो तुम ऐसे ही काम निबटाने के लिए फर्म में रखी गई हो. जैसेजैसे फर्म की आमदनी बढ़ेगी, तुम्हारी तनख्वाह भी बढ़ेगी.

"एक बात याद रखना. इस नौकरी को छोड़ने के बाद तुम्हें ऐसा सुनहरा मौका नहीं मिलेगा. विदेशी लोग तो कभीकभी आते हैं, लेकिन तुम ने दूसरों को ज्यादा जोश दिखाया, तो कहीं की नहीं रहोगी, इसलिए बेहतर होगा कि किसी को अपना जीवनसाथी बना कर इस काम को छोड़ दो.

"कुछ नहीं तो अपने बौस पर ही फंदा कसना शुरू करो. शायद वह तुम्हारे बस में आ जाए, क्योंकि इस कला में तुम काफी माहिर हो."

"वह ऐसा नहीं है, जिस पर मेरे हुस्न का जादू चल सके," रिया बोली.

"फिर तुम ने कैसे सोच लिया कि मैं एक ही रात में उस की गुलाम बन गई थी. वह चाहता तो नशे में मेरे साथ बदसुलूकी कर सकता था, पर हिम्मत नहीं बटोर सका.

"जिंदगी में हर किसी का एक सपना होता है. उसे पूरा करने के लिए कुछ लोग तुम्हारा रास्ता चुनते हैं, तो कुछ मेरी तरह कड़ी मेहनत करते हैं," इतना कह कर निशा वहां से चली गई. ●
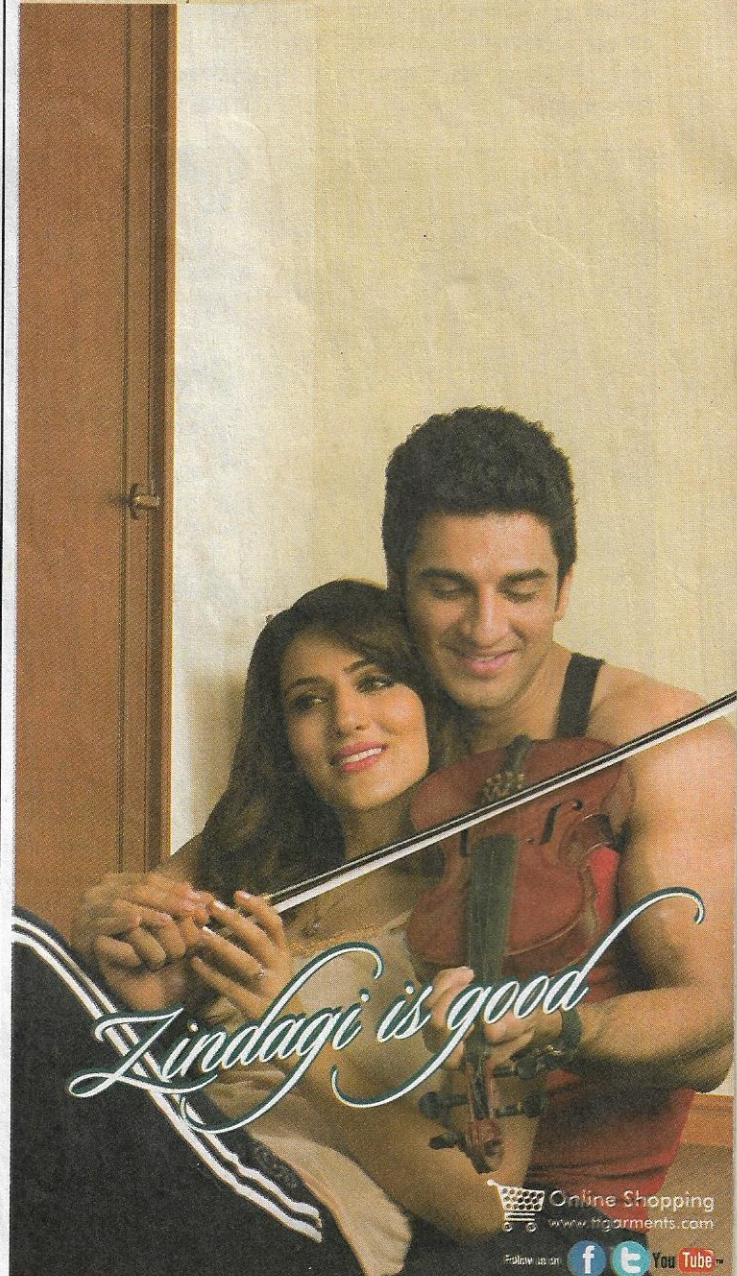
मसला

हफ्तेभर की 'सैक्स स्ट्राइक'

रमाकांत 'कांत'

पूरी दुनिया में जिस अहिंसक क्रांति के लिए भारत को जाना जाता है, उस का पहला प्रयोग दक्षिण अफ्रीका में हुआ था. इस क्रांति को लाने वाले मोहनदास करमचंद गांधी थे. दक्षिण अफ्रीका से लौट कर उन्होंने उसी अहिंसक क्रांति को हम पर राज कर रहे अंगरेजों पर आजमाया और देश को गुलामी की जंजीरों से छुड़वाने में कामयाबी हासिल की.

आज उसी अफ्रीकी उपमहाद्वीप के एक छोटे से देश टोगो में नई क्रांति देखी गई है, जो अहिंसक होने के साथसाथ दिलचस्प भी है.

टोगो एक छोटा सा देश है, जो अफ्रीका उपमहाद्वीप में है. आजकल वहां सत्ता के खिलाफ क्रांति का बिगुल बजा हुआ है.

इस समय टोगो के राष्ट्रपति फाउरे ग्नासिंगबे हैं, जो पिता की मौत के बाद 7-8 साल से इस पद पर हैं. इस से पहले उन के पिता ग्नासिंगबे इयादेम 38 साल तक सत्ता की बागडोर संभाले रहे थे.

जाहिर है, विरोध की अहम वजह देश को परिवार की तानाशाही से छुड़ाना है. इस क्रांति का सूत्रधार अमेगांवी का वह समूह है, जो तकरीबन 50 साल से जारी ग्नासिंगबे परिवार की सरकार को उखाड़ फेंकना चाहता है.

बहुत समय से टोगो में विरोध की चिनगारी सुलग रही थी, जिस ने अब बड़े विरोध का रूप ले लिया. हजारों लोग राष्ट्रपति फाउरे ग्नासिंगबे के इस्तीफे व सत्ता में सुधारों व हिस्सेदारी की मांग को ले कर देश की राजधानी लोम की सड़कों पर उतर आए हैं.

हर दिन सैकड़ों विरोधियों को कुचलने के लिए सत्ता पक्ष हर मुमकिन कोशिश कर रहा है. विरोधियों को हिरासत में ले कर सख्त सजाएं दी जा रही हैं. इस के बावजूद प्रदर्शनकारी अपनी मांग पर डटे हुए हैं.

टोगो में लोकतंत्र की कहानी के लिए लोग अपनेआप को न्योछावर कर देने की नीयत से सड़कों पर पूरे जोश से उतर रहे हैं. इस मामले में कोई भी पक्ष झुकने को तैयार नहीं है.

प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच हुई झड़पों में कई आंदोलनकारी मारे जा चुके हैं. सुरक्षा बलों ने विपक्ष के खास 120 नेताओं को अपनी गिरफ्त में ले लिया, जो आंदोलन को दिशा दे रहे थे. उन्हें हिरासत में लेने के बाद जनता ने अपना गुस्सा दिखाया, जिस से सहम कर शासन ने 8 बड़े विरोधी नेताओं को छोड़ कर सभी को जेल से रिहा कर दिया. मगर दूसरी ओर आंदोलन से जुड़े आम समर्थकों को बड़ी तादाद में बंदी बनाना शुरू कर दिया.

आंदोलन की बागडोर टोगो के राष्ट्रपति फाउरे ग्नासिंगबे की सब से बड़ी विरोधी और विपक्षी पार्टी की नेता मादाम इसाबेल के हाथ में है. वे पूरी हिम्मत के साथ तानाशाह शासक का मुकाबला कर रही हैं.

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था लागू कराने की मांग पर अड़ी मादाम इसाबेल ने इस आंदोलन को 'चलो टोगो को बचाएं' नाम दिया है. आंदोलन को और ज्यादा कामयाब बनाने के मकसद से उन्होंने एक अजीबोगरीब अपील कर के सब को चौंका दिया है.

उन्होंने देश की औरतों से अपील की कि एक हफ्ते के लिए उन्हें अपने पति या पार्टनर से बिस्तर पर दूरी बना लेनी चाहिए.

वे आगे कहती हैं कि मैं सभी औरतों को एक हफ्ते की सैक्स स्ट्राइक और उपवास करने के लिए आमंत्रित करती हूं, ताकि हमारे गिरफ्तार लोगों को रिहा कराया जा सके.

हर ओर चर्चा का मुद्दा बनी मादाम इसाबेल की अपील तानाशाही सत्ता पर क्या असर छोड़ेगी, यह तो समय ही बताएगा, मगर इस के दूरगामी असर जरूर देखने को मिलेंगे.

अगर अपील मान ली गई, तो क्रांति की तेजी में भूचाल आ जाएगा. मुमकिन है, ऐसे बहुत सारे मर्द जो अब तक आंदोलन से अलग बने रहे, वे अपना पक्ष रखने के लिए मजबूर हो जाएंगे.

यह स्वाभाविक है कि सैक्स को आधार बना कर लड़ी जा रही इस लड़ाई में औरतों का पलड़ा भारी साबित हो, क्योंकि फ्रौयड के अनुसार, सैक्स के बलबूते औरत आसानी से मर्द को अपने पक्ष में करने में कामयाब हो जाती है. अगर ऐसा हुआ, तो यकीनन यह अपील रंग ले आएगी और आंदोलन को और बड़ा कर देगी.

जहां तक अपील के असर का सवाल है, यह कहा जा सकता है कि किसी देश की 50 फीसदी आबादी अगर किसी मुहिम में इस तरह (सैक्स करने की अनदेखी के जरीए से) शामिल हो जाए, तो उस का असर बाकी 50 फीसदी जनता पर पड़े बिना नहीं रहता.

इस बात में शक नहीं कि अफ्रीका उपमहाद्वीप के गरम देशों में, जहां सैक्स के प्रति बहुत ज्यादा खिंचाव पाया जाता है, ऐसे आंदोलन के कामयाब होने की उम्मीद और भी बढ़ जाती है. यह आंदोलन की कामयाबी के लिए कोई कम बात नहीं.

दूसरी ओर इस आंदोलन के चलते कुछ नुकसानदेह बातें भी हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. मान लीजिए, मादाम इसाबेल की अपील के मुताबिक अपने नेता की बात मनवाने के लिए औरतें सैक्स स्ट्राइक वाला कदम उठाती हैं, तो जरूरी नहीं कि उन के मर्द साथी भी इस फरमान के आगे झुक जाएं.

मुमकिन है कि मर्दों के दिमाग में आंदोलन के खिलाफ वाली बातें चल रही हों. दोनों के अपनी बात पर अड़े रहने के चलते अनेक जोड़ों व परिवारों में बिखराव वाली हालत आ जाएगी.

मान लीजिए, इस के चलते कुछ फीसदी परिवार भी टूटे, तो छोटे से देश में टूटे हुए परिवारों व अनाथ बच्चों की तादाद एकदम बढ़ जाएगी, जिस का नतीजा समूचे देश को भुगतना होगा.

जहां तक कानूनी नजरिए की बात है, इस अपील को किए जाने व उसे मानने में कानून के उल्लंघन जैसी बात नजर नहीं आती और न ही इस में हिंसा या हकों के हनन जैसी कोई बात दिखती है.

हां, यह जरूर है कि अपील के मुताबिक जो औरत बिस्तर पर सहयोग न करने के प्रति अडिग है और उस का साथी जबरन सैक्स करता है, तो अवश्य ही वह औरत के अधिकारों के उल्लंघन का कुसूरवार माना जाएगा, क्योंकि औरत की इच्छा के खिलाफ मर्द द्वारा की जाने वाली जोरजबरदस्ती, भले ही वह पति द्वारा की गई हो, कानूनन दंडनीय है.

टोगो का आंदोलन इस अपील के बलबूते अगर कामयाब हो गया, तो मुमकिन है कि अनेक आंदोलन इस पटरी पर चल निकलें. ऐसा हुआ, तो यह अच्छा संकेत नहीं होगा.

माना कि सैक्स स्ट्राइक एक अहिंसक आंदोलन है, पर इस के द्वारा पतिपत्नी के निहायत निजी रिश्तों को दांव पर लगाना बिलकुल भी ठीक नहीं. ●

गज़ब का स्वाद
जैसे चाय पीने की चाह,
तब भी थी, आज भी है।
और फिर पताका चाय हो
तो क्या कहने!
''हो जाए, पताका चाय''
PATAKA
Premium
LEAF TEA
PATAKA
TEA

सौगात शरारती ठुमकों की. महाराष्ट्र के गंवई नाच में लावणी की बड़ी अहम जगह है. 9 गज की साड़ी में लिपटी औरतें जब ढोलकी की थाप पर बिंदास हो कर अपने लटकेझटके दिखाती हैं, तो माहौल में अजीब सी मस्ती भर जाती है.

इन कलाकारों की घायल कर देने वाली अदाओं और मुसकराहटों ने तो जैसे इस नाच से देखने वालों को अपना दीवाना बना दिया. क्यों सही कहा न?
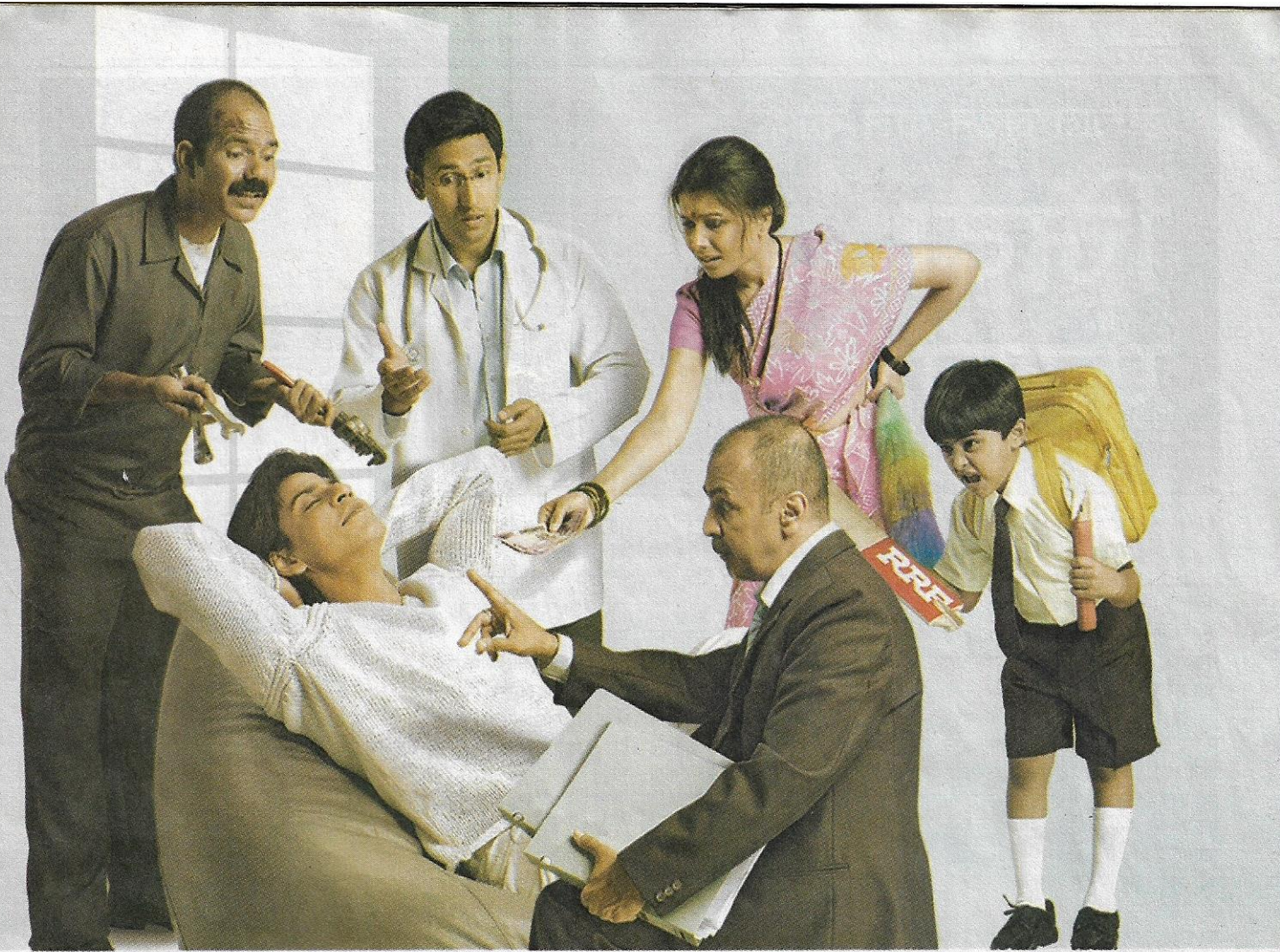
ज़िन्दगी है, तो स्ट्रैस भी होगा!

नवरत्न लगाओ, सीटी बजाओ।

रोज़ की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी लाती है थकान और तनाव। ऐसे में हर शाम करोड़ों लोग विश्वास करते हैं सिर्फ नौ दुर्लभ जड़ीबूटियों वाले नवरत्न तेल की मालिश पर। यह थकी नसों को आराम पहुचायें और सुकून दिलाये। क्लिनिकल परिक्षणों में भी इसे सरदर्द, थकान, तनाव और अनिद्रा के लिये अनूठा और प्रभावशाली माना गया है।

हिमानी

नवरत्न

तैल

इज्जत लूटने वाले को जिंदा फूंका

वीरेंद्र बरियार

आरोपी सुनयना देवी का जला हुआ घर और एक नजदीकी रिश्तेदार

"उस राक्षस ने मेरी इज्जत लूट ली... अब मैं अपने बच्चों और गांव वालों को क्या मुंह दिखाती... मैं ने सोचा कि अपनी जान देने के सिवा और कोई चारा नहीं रह गया है... यही सोच कर मैं उठी और अपने ऊपर केरोसिन छिड़कने लगी...

"इसी बीच खयाल आया कि अगर मैं मर गई, तो मेरे साथ गलत काम करने वाले पापी का पाप छिपा रह जाएगा... वह इज्जत की जिंदगी जिएगा... उस के गुनाह का पता किसी को नहीं चल पाएगा और न ही उसे उस के गंदे कामों की सजा मिल सकेगी...

"इसी के बाद मैं ने अपनी जान देने का इरादा बदल दिया और नशे की हालत में लुढ़के पड़े बलात्कारी भोला की देह पर ही केरोसिन डाला और उस पर जलती हुई ढिबरी फेंक दी...

"जब उस की देह जलने लगी, तो कमरे से निकल कर मैं ने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया. वह मर गया... ऐसे लोगों को तो ऐसी ही कठोर सजा मिलनी चाहिए," इतना कह कर सुनयना देवी फूटफूट कर रोने लगी.

इस के बाद सुनयना देवी सिसकते हुए कहती है, "मुझे जो सजा देनी है, दे दो. मैं ने जो किया, ठीक किया. औरतों और लड़कियों की इज्जत लूटने वालों को जिंदा जलाने की सजा भी उस के साथ रहम करने के बराबर है. उन की देह के अंगों को काटकाट कर चील और कौओं को खिला देना चाहिए.

"मैं तो उस कलमुंहे को मार कर खुद थाने पहुंच गई. अगर मैं गलत होती, तो रात में ही गांव से भाग नहीं जाती."

पटना मैडिकल कालेज अस्पताल में मैडिकल जांच के लिए लाई गई सुनयना देवी अपना दुखड़ा सुनाते हुए हिचकियां लेने लगी.

सुनयना देवी को इस बात का ज्यादा दुख है कि पुलिस उसे ही गलत समझ रही है. वह कहती है कि उसे अकेला देख कर भोला उस पर गंदी नजर रखता था और हमेशा कई तरह के लालच देता रहता था.

दरअसल, मामले की जांच कर रहे पुलिस वालों को यह मामला सीधासपाट इसलिए नहीं लग रहा है, क्योंकि भोला की लाश से एक फुट की दूरी पर शराब की बोतल सहीसलामत पाई गई.

सिटी एसपी जयंतकांत कहते हैं कि बलात्कार और मारपीट के दौरान शराब की बोतल सहीसलामत कैसे रह गई? इसी बात को ले कर जांच टीम का माथा ठनका है और उसे भी ध्यान में रख कर जांच की जा रही है.

बिहार की राजधानी पटना से 15 किलोमीटर की दूरी पर बसे परसा बाजार थाने के सुईथा गांव में यह दिल दहलाने वाली वारदात हुई.

बलात्कार की शिकार होने के बाद गुस्से और बेइज्जती की आग में जल रही सुनयना देवी ने नशे में धुत्त पड़े बलात्कारी भोला ठाकुर के शरीर पर केरोसिन छिड़क कर उसे आग के हवाले कर दिया और हल्ला मचा कर गांव वालों को जगा भी दिया.

उस के बाद सुनयना ने पुलिस थाने में जा कर सारी बातें बता दीं और खुद को पुलिस के हवाले कर दिया. पुलिस ने बताया कि भोला की जली हुई लाश के पास से शराब की बोतल, केरोसिन का डब्बा और ढिबरी मिली.

बलात्कार की शिकार बनी 45 साल की विधवा सुनयना देवी और मारा गया आरोपी भोला ठाकुर सुईथा गांव के ही रहने वाले थे.

सुनयना के पति की तकरीबन 15 साल पहले मौत हो चुकी थी. उस के 3 बच्चे हैं. 2 बेटियों की शादी हो चुकी है और बेटा लुधियाना, पंजाब में मजदूरी करता है.

सुनयना देवी ने पुलिस को बताया कि 1 अप्रैल की रात को वह अपनी झोंपड़ी में सो रही थी कि आधी रात को भोला ठाकुर नशे की हालत में लड़खड़ाता हुआ उस के कमरे में घुस आया. इस के बाद उस ने उस के साथ जबरदस्ती की और मना करने पर मारपीट करने लगा. इस के बाद भोला ने उस की इज्जत लूटी और वहीं पर लुढ़क गया.

पहले तो सुनयना देवी ने सोचा कि वह परिवार और समाज को क्या मुंह दिखाएगी, इसलिए उस ने अपनी जान देने की ठानी. इस के बाद उस के मन में खयाल आया कि वह मर जाएगी, तो भोला ठाकुर को तो सजा ही नहीं मिल सकेगी, इसलिए उस ने यह रास्ता अपनाया.

सुईथा पंचायत समिति के सदस्य भरत कहते हैं कि सुनयना देवी ने आधी रात को गांव के कई घरों का दरवाजा पीटपीट कर लोगों को जगाया. इस के बाद उस ने गांव वालों को सारी बातें बताईं और फिर पुलिस को सूचना दी गई.

गांव के कई लोगों ने बातचीत के दौरान दबी जबान में बताया कि भोला ठाकुर दबंग आदमी था और वह 'लंगोट का काफी कमजोर' था. वह गांव की लड़कियों और औरतों को बुरी नजरों से देखता था, पर डर के मारे कोई उसे कुछ कह नहीं पाता था. उस का छोटा भाई अतेंद्र ठाकुर भी बलात्कार के मामले में जेल जा चुका है.

भोला ठाकुर की पत्नी शोभा ने सुनयना देवी पर अपने पति की हत्या का आरोप लगाते हुए परसा बाजार थाने में एफआईआर दर्ज कराई है.

शोभा का कहना है कि किसी काम के बहाने सुनयना ने ही उस के पति को फोन कर के बुलाया था और साजिश रच कर उन्हें जान से मार डाला.

गांव के ज्यादातर लोग सुनयना देवी को सही ठहरा रहे हैं और भोला ठाकुर को गलत करार दे रहे हैं.

पुलिस अभी सुनयना देवी की ही तरफ खड़ी दिख रही है और वह चाहती है कि एक गरीब विधवा को इंसाफ मिल सके. ●

कानून जो कहता है

__पटना__ हाईकोर्ट के वकील उपेंद्र प्रसाद बताते हैं कि भारतीय दंड संहिता की धारा-100 की उपधारा में कहा गया है कि अपनी आबरू बचाने के लिए औरत बलात्कारी की जान ले सकती है. सुनयना देवी को इस का फायदा मिल सकता है, लेकिन कानून का पूरा फायदा तभी मिल सकता है, जब घटना का कोई चश्मदीद गवाह भी हो.

इस मामले का दूसरा पहलू यह भी है कि अगर सोते हुए या नशे की हालत में पड़े हुए आदमी की जान लेने की नीयत से आग लगाने की बात साबित होती है, तो सुनयना देवी को हत्या का आरोपी करार देते हुए सजा दी जा सकती है.

अगर आरोपी नींद में या नशे में था, तो वह पड़ोसी या पुलिस की मदद से उसे गिरफ्तार करवा सकती थी. कानून को अपने हाथ में ले कर सुनयना देवी ने भी गुनाह किया है.

कुपोषण भारत छोड़ो

आज से बहुत साल पहले हमने एक प्रण किया था, आज़ाद होने का। और हम इसमें क़ामयाब हुए। पर एक चीज़ और है जिससे हमें अभी भी आज़ाद होना बाक़ी है। वो है कुपोषण। कुपोषण न दिखाई देने वाला वो दुश्मन है जो दबे पांव, चुपचाप आता है और हमारे बच्चों को हमेशा के लिए शरीर और दिमाग़ से कमज़ोर कर जाता है। और जब बच्चे ही मज़बूत नहीं होंगे तो देश कैसे मज़बूत होगा? यह कुपोषण अपने आप नहीं जाएगा, हम सबको मिलकर इसके ख़िलाफ़ एक जंग छेड़नी होगी।

कुपोषण का मतलब है सही पोषण की कमी। गर्भ से लेकर जन्म के पहले दो साल, बच्चों में कुपोषण का सबसे ज़्यादा ख़तरा होता है। इस दौरान अगर हम कुछ सही कदम उठाएँ तो बच्चों को इस ख़तरे से बचाया जा सकता है।

मिलकर प्रण लेंगे तो कुपोषण को भारत छोड़ना ही होगा।

अधिक जानकारी के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, 'आशा' या ए.एन.एम. से संपर्क करें या www.akshayaposhan.gov.in या www.poshan.nic.in पर लॉग ऑन करें।

Technical support from unicef

davp 46104/13/0003/1314

मुझे पसंद है आइटम डांस

अमृता शर्मा, भोजपुरी हीरोइन

बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के नौजवानों के लिए भोजपुरी फिल्में फिल्मी दुनिया में कदम रखने की सीढ़ी बन गई हैं. अपने स्कूली दिनों में लारा दत्ता और ऐश्वर्या राय बनने का सपना देखने वाली जमशेदपुर की अमृता शर्मा ने कालेज में पढ़ाई करते हुए बिहार की राजधानी पटना में 'मिस दिवा' का खिताब जीता था. इस के साथ ही उन्होंने 'मिस फोटोजैनिक', 'बैस्ट आइज' और 'बैस्ट फिगर' के अवार्ड भी जीते थे.

अमृता शर्मा की मां चाहती थीं कि उन की बेटी श्रीदेवी की तरह ऐक्टिंग की दुनिया में नाम कमाए. ऐसे में अमृता ने बीए तक की पढ़ाई करने के बाद फिल्मों की तरफ अपने कदम बढ़ाए और आज उन की पहचान भोजपुरी फिल्मों की एक उभरती हुई कलाकार और आइटम डांसर के रूप में की जाती है.

अपनी कामयाबी के सफर पर अमृता शर्मा से बातचीत हुई. पेश हैं, उसी के खास अंश :

शैलेंद्र सिंह

आप झारखंड की रहने वाली हैं. आप ने एक नागपुरी फिल्म से अपने कैरियर की शुरू कैसे की?

मैं स्कूल के समय से ही डांस, ऐक्टिंग और दूसरी बहुत सी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेती रही हूं.

मेरी लंबाई अच्छी है, इसलिए स्कूलकालेज में मैं कैप्टन भी रही. स्कूल में स्टेज कार्यक्रम करते हुए ही मुझे मौडलिंग का शौक लग गया.

मेरा डांस भी बहुत अच्छा था. ऐसे में मौडलिंग के साथ मैं स्टेज पर डांस शो भी करने लगी. यहीं से मैं ने एक नागपुरी फिल्म में आइटम डांसर का रोल किया, जिसे बहुत पसंद किया गया.

इस के बाद भोजपुरी फिल्म 'मुखियाजी' में भी मेरा आइटम डांस पसंद किया गया. मेरे पास अभी कई और भोजपुरी फिल्में हैं. इन में 'सेजिया भईल अजोर', 'नैनों से गोली चलाइबो', 'नारी पाप निवारणी' और 'सैंया अरब गईल' खास हैं.

आप इन फिल्मों में किस तरह के रोल कर रही हैं?

मैं ने अब तक भले ही कम फिल्मों में काम किया है, पर हर तरह का रोल कर लिया है.

फिल्म 'नारी पाप निवारणी' में मैं पाखी हेगड़े के साथ हूं. इसी तरह भोजपुरी के कई दूसरे बड़े कलाकारों के साथ भी मैं काम कर रही हूं.

आज आइटम डांस फिल्मों की कितनी बड़ी जरूरत बन गए हैं?

जिस तरह से फिल्मों में कहानी, डायलौग, म्यूजिक को पसंद किया जाता है, उसी तरह से आइटम डांस को भी पसंद किया जाता है. केवल भोजपुरी फिल्मों में ही नहीं, बल्कि हिंदी फिल्मों की कामयाबी में भी आइटम डांस की खास अहमियत होती है. ऐसे में आइटम डांस को बुरा नहीं कहा जा सकता है.

आइटम डांस ऐसे होने चाहिए, जो परिवार के साथ बैठ कर देखे जा सकते हों.

मैं ने डांस सीखा है. कुछ बच्चों को डांस की ट्यूशन भी दी है. शिल्पा शेट्टी मेरी पसंदीदा आइटम डांसर हैं. मुझे उन के जैसा आइटम डांस करना पसंद है.

भोजपुरी फिल्मों पर खुलेपन का बहुत आरोप लगता है. इस बारे में आप क्या सोचती हैं?

फिल्मों में खुलापन कहां नहीं है? क्या हिंदी फिल्मों में खुलापन नहीं है? केवल भोजपुरी फिल्मों पर आरोप लगता है, यह सही बात नहीं है. भोजपुरी फिल्मों में गांव की कहानी होती है. वहां का पहनावा, बोलचाल सबकुछ अलग होता है. गांव के लोग ही भोजपुरी फिल्मों के सब से बड़े दर्शक हैं. यह सब उन को पसंद है. शायद इसी वजह से ऐसी फिल्में बनती हैं.

अगर कभी आप को ऐक्सपोज करने वाले सीन करने पड़ें, तो क्या आप करेंगी?

अगर कहानी की मांग होगी, तो मुझे ऐक्सपोज करने में परहेज नहीं होगा. यह सिनेमा है. यहां दर्शकों को कुछ अलग हट कर देना पड़ता है. फिल्मी दुनिया में उस की जरूरतों के हिसाब से काम करना पड़ता है.

फिल्मी दुनिया के लोगों के प्रेम संबंधों के खूब खुलासे होते हैं. इन की सचाई क्या होती है?

हम लोग जहां काम करते हैं, वहां हर तरफ कैमरा हम पर नजर रखता है. ऐसे में छिप कर कुछ भी किया नहीं जा सकता. कई बार अफवाहों के चलते ऐसी बातें फैलाई जाती हैं. यह फिल्मों के प्रमोशन का एक जरीया भी होता है. कुछ कलाकार भी इस के जरीए प्रचार पाना चाहते हैं.

प्रेम संबंध तो हर जगह होते हैं. फिल्मी कलाकारों के बारे में लोग पढ़ना चाहते हैं, इसलिए उन की चर्चा ज्यादा होती है.

क्या परिवार वालों ने आप के द्वारा फिल्मी कैरियर अपनाने की खिलाफत नहीं की?

नहीं. मैं बंगाली परिवार से हूं. वहां लड़कियों को कुछ आजादी भी होती है. ऐश्वर्या राय और तनुश्री दत्ता जैसी बंगाली लड़कियों को देख कर मेरी मां ने मुझे फिल्मी दुनिया में कैरियर बनाने के लिए आगे बढ़ने दिया. उन को श्रीदेवी बहुत पसंद थीं.

मेरे पिता कारोबारी हैं और मेरा छोटा भाई बीटैक की पढ़ाई कर रहा है. मुझे परिवार का हर तरह से सहयोग मिलता रहा है.

आप की पसंद की और चीजें?

मुझे घूमना, डांस करना और गाड़ी चलाना बहुत अच्छा लगता है. मैं लिखने और पढ़ने के लिए भी समय निकाल लेती हूं. मुझे कहानी लिखने का शौक है.

मैं 'सरस सलिल' की पाठक रही हूं. इस में जिस तरह से लोगों को समझाया जाता है, वह मुझे पसंद आता है.

कुछ दिनों पहले तक हीरोइनों में जीरो फिगर का बड़ा जोर रहता था. इस बारे में आप की क्या राय है?

मेरी समझ में जीरो फिगर की बात सही नहीं है. अब हिंदी फिल्मों में भी जीरो फिगर पुरानी बात हो चली है. भोजपुरी फिल्मों में तो यह कभी नहीं रहा.

हीरोइन के लिए सही शेप वाली फिगर की जरूरत होती है. 36-24-36 फिगर ही सब से अच्छी मानी जाती है. खासतौर से साड़ी पहनने के लिए अच्छी फिगर जरूरी होती है. मुझे तो भारतीय औरतों की फिगर सब से अच्छी लगती है. ●

अपनेअपने राम

शंकराचार्य स्वरूपानंद खुलेतौर पर कांग्रेसी खेमे के माने जाते हैं. बीते दिनों वे भोपाल आए, तो मुख्यमंत्री शिवराज सिह चौहान का उन के दर्शन करने जाना और पैर छूना एक तरह की सियासत ही थी.

अकसर भोपाल आने वाले स्वरूपानंद ने इस दफा चौंका देने वाली बात यह कही कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोगों को राम मंदिर बनाने की बात ही नहीं करनी चाहिए, क्योंकि राम एक साधारण आदमी थे, भगवान नहीं.

ऐसे में शिवराज सिह चौहान का स्वरूपानंद के पास जा कर झुकना संघ के लोगों और भाजपाइयों को रास नहीं आया है. राजनाथ सिंह ने अपनी टीम में शायद इसीलिए शिवराज सिंह चौहान को जगह नहीं दी है.
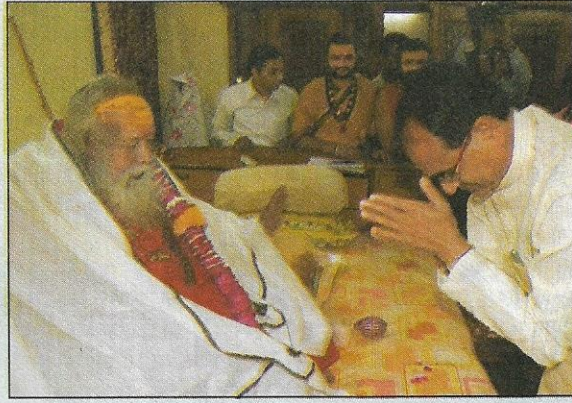
गौर एक चुनौती

सूबे के नगरीय प्रशासन मंत्री बाबूलाल गौर के बोलने पर किसी का जोर नहीं चलता है. वे जब बोलते हैं, तो बात दोटूक कहते हैं, जिस से काफी हलचल मच जाती है.

बीते दिनों मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पर निशाना साधते हुए उन्होंने यों ही कह डाला कि शिवराज तो अपने दम पर एक ही दफा जिता पाए हैं, गुजरात में नरेंद्र मोदी ने अपने बूते भाजपा को 3 दफा जिताया है.

इस बयान से शिवराज सिंह की तकलीफें और बढ़ी हैं. गौर जानबूझ कर बोले, तो उन की मंसा साफ है कि सियासी और गैरसियासी जलसों में तो वे शिवराज सिंह चौहान के साथ दिखेंगे, पर टांगखिंचाई करने के मामले में कोई समझौता नहीं करेंगे.

बधाई हो दीदी

उमा भारती जब भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाई गईं, तो इस का साफ असर सूबे की सियासत पर पड़ता दिख रहा है. उमा भारती के बंगले पर बधाई देने वालों का तांता लग रहा है और अखबार उन के समर्थकों द्वारा छपवाए बड़ेबड़े इश्तिहारों से रंगे पड़े हैं.

प्रदेश में अब तक भाजपा पर शिवराज सिंह चौहान का एकलौता दबदबा माना जाता था, पर उमा भारती की शानदार वापसी ने उन्हें ताकत का दूसरा बड़ा केंद्र बना दिया है.

10 साल पहले दिग्विजय सिंह की बादशाहत उखाड़ने में उन का रोल अहम रहा था. अब वे एक नए रोल में हैं और सामने उन की ही पार्टी के शिवराज सिंह हैं, तो देखना दिलचस्प रहेगा कि अब वे कैसे धीरेधीरे भीतर पैर जमाती हैं.

रंगारंग जलसे के जलवे

खेल एवं युवा कल्याण महकमे द्वारा 'मानस' भवन में सूबेभर के कलाकारों के लिए कई प्रतियोगिताएं कराई गईं. डांस के आइटम

खासतौर पर सराहे गए, जिन में सागर की लड़कियों ने बुंदेलखंड का परंपरागत डांस पेश किया. रीवां की लड़कियों ने राजस्थान का कालबेलिया डांस पेश किया, तो इंदौर की लड़कियों ने घूमर डांस दिखा कर लोगों का दिल जीत लिया.

तपेदिक भगाओ

हर साल 24 मार्च को 'विश्व तपेदिक दिवस' मनाया जाता है. यह खतरनाक बीमारी है, जिस की गिरफ्त में निचले तबके के लोग ज्यादा आते हैं. भोपाल में कई संगठनों ने इस से बचने के लिए प्रदर्शन किए.

लगातार खांसी होना इस बीमारी की खास पहचान है. ऐसे में तुरंत डाक्टर को या नजदीकी अस्पताल में दिखा कर कफ की जांच करानी चाहिए.

तंबाकू खाने वालों और बीड़ीसिगरेट पीने वालों में यह बीमारी ज्यादा पाई जाती है. लिहाजा, नशे से दूर रहना ही बेहतर होता है. इस के सेवन से कैंसर होने का डर भी बना रहता है.

दिखावे में भाईभाई

हिंदू, मुसलिम, सिख और जैनियों की देखादेखी ईसाई समुदाय के लोगों ने भी सड़कों पर तड़कभड़क वाले धार्मिक जलसे करने शुरू कर दिए हैं. भोपाल में 29 मार्च को ईसाइयों के त्योहार 'गुड फ्राइडे' के मौके पर शहर ईसाइयों से भरा दिखा.

धार्मिक जलसों में काफी वक्त व पैसा बरबाद होता है और किसी को कुछ हासिल नहीं होता. चंद लोगों की दुकानदारी चमकाने के लिए हजारों की भीड़ सड़कों पर आती है, तो मुसाफिरों को ट्रैफिक जाम हो जाने से परेशानी होती है. इस का फायदा आयोजकों को मिलता है, जो चंदा उगाहते हैं, पर उन से हिसाब कोई नहीं मांगता. ●

लालू के लाल चले सियासी सफर पर

बिहार में हर दल के नेता सफर पर निकले हुए हैं. नीतीश कुमार, लालू प्रसाद यादव, रामविलास पासवान समेत कांग्रेस और कई छोटे दल जनता की नब्ज टटोलने और जनता के बीच अपनी पैठ बनाने के लिए सियासी सफर कर रहे हैं.

बड़े नेताओं की देखादेखी राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के बेटे तेजस्वी यादव भी नए सफर पर निकल चुके हैं. वे अपने पिता की खोई हुई साख और सरकार को दोबारा बहाल करने के लिए 'जनसमर्थन यात्रा' पर निकले हुए हैं. अपने इस सफर में वे नौजवानों को पार्टी में शामिल होने की अपील कर रहे हैं. देखना है कि क्रिकेटर से नेता बने तेजस्वी राजनीति में कितने चौके और छक्के लगा पाते हैं?

12 हजार करोड़ का लौलीपौप

भारतीय जनता पार्टी के साथ ऊहापोह की हालत से जूझ रहे नीतीश कुमार को पटाने के लिए कांग्रेस ने आखिरकार उन्हें 12 हजार करोड़ रुपए के पैकेज का लौलीपौप थमा ही दिया है.

नीतीश कुमार पिछले 5-6 सालों से बिहार को 'स्पैशल स्टेट' का दर्जा देने की मांग केंद्र सरकार से कर रहे थे और कई मौकों पर वे यह ऐलान भी करते रहे थे कि जो भी उन की इस मांग को पूरा करेगा, वे उसे ही समर्थन देंगे. कांग्रेस पहले उन की इस मांग को पूरा करने में कन्नी काट रही थी, पर भाजपा और जद (यू) की लड़ाई को देखते हुए वह अब सियासी फायदा उठाने में लग गई है.
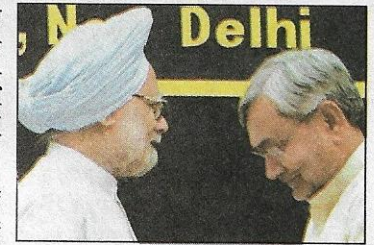
नन्ही गायिका साक्षी राज

'पापाजी ऐसन काहे कईला, जीतेजी हमके मुअएला. ऐसन न करे के चाहीं कैसे हम जिंदगी निबाही, हो पापा हो बड़ा धोखा दईला, हमरा से कहे मुंह मोड़अला...' गीत गा कर 12 साल की वह लड़की ऐसा समां बांधती है कि सुनने वालों की आंखें भर आती हैं.

अपनी मासूमियत और दमदार आवाज के जरीए वह हर बेटी के दर्द को बयां कर देती है. वहीं 'ऐ रामा सैंया के नौकरिया भइले सौतनिया, बस गईले पिया परदेसवा...' गीत में वह उस औरत के दर्द को उजागर करती है, जिस का पति कमाई के लिए परदेश जा बसा है.

बिहार के भोजपुर जिले के शाहपुर ब्लौक के बेनबलिया गांव की रहने वाली साक्षी राज की उम्र तो महज 12 साल है, पर गायकी में वह अच्छेअच्छे गायकों को टक्कर देने की कूवत रखती है. काफी कम समय में ही वह भोजपुरी और हिंदी भाषा के सैकड़ों गीत गा कर बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में गीतसंगीत के चहेतों को अपना दीवाना बना चुकी है.

सच से सामना

राज्य में सुशासन और तरक्की का ढोल पीटने वाले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का उस समय सच से सामना हो गया, जब वे बिहारनेपाल बौर्डर पर बसे रतनपुरवा अनुसूचित जनजाति आवासीय स्कूल में पहुंचे. स्कूल के एक ही कमरे में क्लासरूम और उसी में बच्चों के रहने का इंतजाम देख कर नीतीश कुमार भड़क गए और अफसरों की जम कर क्लास लगा डाली. उन्होंने आननफानन स्कूल को मिडिल स्कूल से हाईस्कूल में अपग्रेड करने का ऐलान तो कर डाला, पर उन्हें यह तो पता चल ही गया कि उन के अफसर उन्हें सूबे की तरक्की के बारे में झूठी रिपोर्ट ही पेश करते रहे हैं.

बिहार पर आतंकियों की नजर

हाल के दिनों में बिहार में कई आतंकियों के पकड़े जाने के बाद से केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों की प्रदेश में चहलकदमी बढ़ गई है. पटना में आतंकवाद निरोधी थाने और दस्ते को शुरू करने की हरी झंडी मिलने से साफ हो गया है कि आतंकियों ने बिहार को अपना सेफ जोन बना लिया है.

पुलिस हैडक्वार्टर से मिली जानकारी के मुताबिक, राज्य पुलिस लोकल लैवल के अपराधों और समस्याओं में ही उलझी रह जाती है और आतंकी कानून के शिकंजे से बच निकलते हैं.

पहले फेज में 2 सौ पुलिस वालों को एटीएस में शामिल किया जाएगा, जो केवल आतंकी मामलों की ही जांचपड़ताल करेंगे. ●
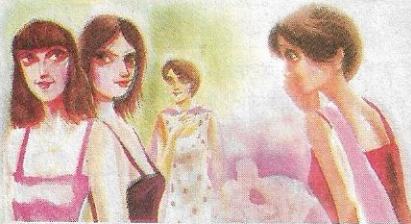
बिस्तर पर सोए पति ने अपनी पत्नी से कहा, "राजा दशरथ की 3 रानियां थीं. इस लिहाज से मैं अभी 2 शादियां और कर सकता हूं."

इस पर पत्नी बोली, "सोच लो, द्रौपदी के भी 5 पति थे."

●

सुहागरात पर नईनवेली दुलहन अपने पति से बोलती है, "सुनोजी, आज से आप के बिना मैं नहीं और मेरे बिना आप नहीं."

4 साल बाद वही औरत अपने पति से कहती है, "रुक जा कामचोर, आज या तू नहीं, या मैं नहीं."

●

एक आदमी भागाभागा एक दफ्तर में पहुंच कर बोला, "सर, मेरी पत्नी खो गई है."

दफ्तर में बैठा आदमी बोला, "यह पोस्ट औफिस है, पुलिस स्टेशन नहीं."

यह सुन कर उस आदमी ने कहा, "माफ करना, खुशी के मारे समझ में नहीं आ रहा कि कहां जाऊं."

●

धनंजय : यार संजय, कल मैं बहुत मुश्किल में फंस गया था.

संजय : ऐसा क्या हुआ था?

धनंजय : यार, मैं बिजली जाने के बाद मोमबत्ती ले कर शौचालय जा रहा था कि कोई कमबख्त फूंक मार कर कह गया, 'हैप्पी बर्थडे टू यू.' बताओ, ऐसे वक्त में भी कोई मजाक करता है.

●

पिताजी : बेटा, अगर ससुराल वाले स्कूटर दें, तो तुम कार मांगना. अगर वे दुकान दें, तो घर मांगना. कूलर दें, तो एयरकंडीशनर मांगना.

बेटा : और अगर वे लड़की दें, तो क्या उस की मम्मी मांग लूं?

-मुन्ना विद्यार्थी ●

अक्षय ने खोला राज

आरती सक्सेना

आप की नजर में फिट रहना कितना जरूरी है?

मेरा मानना है कि आप पैसों से हर चीज खरीद सकते हैं, लेकिन अच्छी सेहत आप तभी पा सकते हैं, जब आप का रहनसहन, खानापीना ठीक हो.

क्या आप के हिसाब से डाइटिंग करना जरूरी है?

नहीं, बिलकुल नहीं. डाइटिंग करने के तो मैं सख्त खिलाफ हूं. मेरे कहने का मतलब है कि खाने का तरीका और खाने की चीजें सही होनी चाहिए. जैसे रात में कम से कम खाना खाएं और सुबहसवेरे हलका नाश्ता जरूर करना चाहिए. दोपहर का खाना भरपेट खाना चाहिए. लेकिन मिठाई, तली हुई चीजें और फास्ट फूड खाने से परहेज करना चाहिए. सब से खास बात यह है कि खाने के साथसाथ नियमित तौर पर कसरत करना भी जरूरी है.

आजकल तो बौलीवुड में कई सितारे बहुत ज्यादा कसरत करने की वजह से अस्पताल तक पहुंच गए हैं?

मैं आप से यही कह रहा हूं कि किसी भी चीज की अति बुरी है. अगर आप बेइंतिहा कसरत करेंगे और चाहेंगे कि आप एक महीने के अंदर पतले हो जाएं, तो यह भी मुमकिन नहीं है. अगर आप अपनी ऐनर्जी बढ़ाने के लिए ताकत बढ़ाने वाली दवाएं लेंगे, तो वह भी गलत है.

तो फिर आप के हिसाब से कसरत करने का सही तरीका क्या है?

अपनी जिस्मानी बनावट और उम्र के हिसाब से कसरत करनी चाहिए. अगर आप बहुत मोटे हैं, तो आप को सब से पहले तेज चलने से शुरुआत करनी चाहिए. फिर वही कसरत करनी चाहिए, जो आप का शरीर झेल सकता है.

बहुत सारा वजन उठाना या बहुत ज्यादा कसरत करने से कई बार मांसपेशियों में खिंचाव आने लगता है, इसलिए बेहतर है कि अगर आप किसी जिम में कसरत कर रहे हैं, तो वहां के ट्रेनर के हिसाब से कसरत करें.

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि बहुत ज्यादा मांसाहार और तली हुई चीजें खाने से भी सेहत खराब होती है?

अगर मांसाहार खाना है, तो चिकन और मछली खाने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि इस में प्रोटीन होता है. जहां तक घीतेल का सवाल है, तो मैं आप को बता दूं कि अगर आप सुबहसुबह 2 चम्मच देशी घी का सेवन करेंगे, तो आप की हड्डियां मजबूत होंगी.

क्या आप भी देशी घी खाते हैं?

हां, बिलकुल. मैं रोज सुबह 2 चम्मच देशी घी खाता हूं और आप देखिए कि मैं एकदम फिट हूं.

आजकल बीमारियां बहुत बढ़ रही हैं. कैंसर जैसी बीमारी तो अब आम हो गई है. इस की वजह क्या है?

सब से पहले तो ताजा हवा और अच्छी आबोहवा तकरीबन खत्म सी हो गई है. दूसरा, लोगों का लाइफ स्टाइल भी बहुत आरामपसंद हो गया है. पहले मशीनें इनसानों पर निर्भर थीं, पर आज इनसान मशीनों पर निर्भर है. यही वजह है कि लोग ताकतवर नहीं हैं, बल्कि अंदरूनी तौर पर कमजोर हैं. इस वजह से बीमारी उन को जल्दी दबोचती है.

सुना है कि आप ने कई सालों से मिठाई नहीं खाई है?

हां, मैं ने बहुत सालों से मीठा खाना छोड़ दिया है. सिर्फ अपने बच्चे के पैदा होने की खुशी में हाल ही में मैं ने थोड़ी सी मिठाई खाई थी.

क्या आप पार्टी वगैरह में जाने से परहेज करते हैं?

हां, मुझे पार्टी में जाना पसंद नहीं है. मैं प्राइवेट पर्सन हूं, इसलिए मेरी यही कोशिश रहती है कि शूटिंग करने के बाद ज्यादा से ज्यादा वक्त अपने परिवार के साथ गुजारूं. ●

मायावती की मुसकान का राज

बहुजन समाजवादी पार्टी की प्रमुख मायावती कम ही मुसकराती हैं. लेकिन जब कभी वे मुसकराती हैं, तो उस की कोई न कोई खास वजह जरूर होती है. लखनऊ में हुई एक मीटिंग के समय वे अपनी बात कहते समय खुल कर हंस रही थीं.

राजनीतिक जानकार मानते हैं कि जिस तरह से उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की अखिलेश सरकार ने काम किया है, उस से प्रदेश की कानून व्यवस्था खराब ही होती गई है. उन्हें लगता है कि सपा सरकार से परेशान प्रदेश के लोग लोकसभा चुनाव में उस के विरोध में वोट डालेंगे.

मायावती इस बात से और खुश हैं कि लोग उन के कार्यकाल की कानून व्यवस्था को बेहतर मान रहे हैं. यही वजह है कि मायावती ने अखिलेश सरकार को हटा कर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग तक कर डाली.

अंधविश्वास के खिलाफ अलख

दिल्ली प्रैस समूह द्वारा प्रकाशित बच्चों की पत्रिका 'चंपक' पूरे देश में 'चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटैस्ट' करा रही है. इस में गांव में पढ़ने वाले बच्चों को भी मौका देने के मकसद से बस्ती जिले में सरदार पटेल समाजवादी विद्यालय, अमरौली शुमाअली गांव में पेंटिंग प्रतियोगिता रखी गई.

बस्ती जिले से तकरीबन 28 किलोमीटर दूर इस गांव के स्कूल में 'चंपक' पत्रिका के प्रति बच्चों का उत्साह देखने वाला था. 250 बच्चों ने इस में भाग लिया. कक्षा 6 से 8 में पढ़ने वाले इन बच्चों ने 'अपना गांव अपनी सफाई' थीम पर पेंटिंग की. इन में से 8 बच्चों ज्योति, अर्चना वर्मा, सविता वर्मा, लता वर्मा, राधिका चौधरी, रीता चौधरी, अखिलेश यादव और आकाश कुमार को विजेता चुना गया.

युवा विकास समिति का संचालन करने वाले बृहस्पति कुमार पांडेय ने बच्चों के मन से अंधविश्वास को भगाने के लिए उदाहरण दे कर बताया कि कैसे जादू दिखा कर ढोंगी बाबा लोगों को बेवकूफ बनाते हैं.

परेशान हैं कारोबारी

उत्तर प्रदेश की खराब कानून व्यवस्था का असर कारोबारियों पर पड़ता है. वे अपना कारोबार सही तरह से नहीं कर पाते हैं. उन को पैसा ले कर आनेजाने में परेशानी होती है. उन की दुकानों में लूटपाट और चोरी होती है.

सर्राफा कारोबारी संगठन के नेता विनोद माहेश्वरी कहते हैं, "लूट और चोरी संगठित अपराध हैं. पुलिस अगर सही ढंग से काम करे, तो इन को रोका जा सकता है."

देखा जाए, तो कारोबारी अपनी हिफाजत के तमाम उपाय खुद ही करने लगे हैं. वे प्राइवेट सिक्योरिटी का इंतजाम करते हैं. कई तरह के सीसीटीवी कैमरे और अलार्म भी लगवाते हैं. इस के बाद भी वे महफूज नहीं हैं.

कारोबारियों का कहना है कि सरकार उन से तमाम तरह के टैक्स तो ले लेती है, पर हिफाजत के कोई ठोस उपाय नहीं करती है. ●

कोई भी काम छोटा नहीं होता

विजय कुमार सिंह

शहर के बहुत बड़े कारोबारी रमणजी का बेटा निशांत कचहरी में अफसर के पद पर तैनात था. उस की उम्र तकरीबन 26-27 साल की रही होगी. वह स्वभाव से नेक था, लेकिन दुनिया के सच से उस का सामना अभी तक नहीं हुआ था. वजह, वह बड़े बाप का बेटा जो था, इसीलिए शायद वह गरीबी के दर्द से अभी तक अनजान था.

एक दफा निशांत को किसी जरूरी काम से नजदीक के शहर में जाना पड़ा. वह पास ही बहने वाली गोमती नदी के किनारे चला आया. एक नाव में बैठ कर उस ने सफर शुरू किया. तब नाव में नाव चलाने वाला रघु और निशांत ही थे.

नाव धीमेधीमे चलती हुई अपनी मंजिल की तरफ बढ़ रही थी. नाव के एक किनारे पर निशांत बैठा था और दूसरे पर रघु.

निशांत कोट को कंधे पर रखे हुए चारों ओर के नजारों को देख रहा था. कहीं ऊंचेऊंचे पेड़ थे, तो कहीं लहराते पौधे या हरीभरी घास से सजी धरती. दूर से दिखाई देती पहाड़ियां. कुछ काली तो कुछ भूरी, कुछ सफेद भी.

हवा के हलकेहलके बहते झोंकों से निशांत का मन खुश हो रहा था. दूर कहीं भेड़बकरियों का झुंड दिखाई दे जाता, तो कहीं उछलकूद करते हिरन और कहीं इधरउधर फुदकते सफेद खरगोश. निशांत ऐसे नजारों को देख कर मस्ती में खोया हुआ था.

रघु चप्पू चलाते हुए एक लोकगीत गुनगुनाए जा रहा था. उसे इन नजारों से कोई सरोकार न था.

निशांत ने बातचीत के मकसद से रघु की ओर देखा. काला रंग और पतला शरीर. मैलीकुचैली सी पैंट. गले पर लिपटा गमछा, जो गंदा हो कर उस के शरीर से मेल खा रहा था. उस के शरीर से अजीब सी बदबू भी आ रही थी.

निशांत ने रघु का ध्यान तोड़ते हुए कहा, "अरे भैया, तुम तो कुछ बात ही नहीं कर रहे. चुपचाप बैठे रह कर तो मेरे लिए यह रास्ता तय करना मुश्किल हो जाएगा."
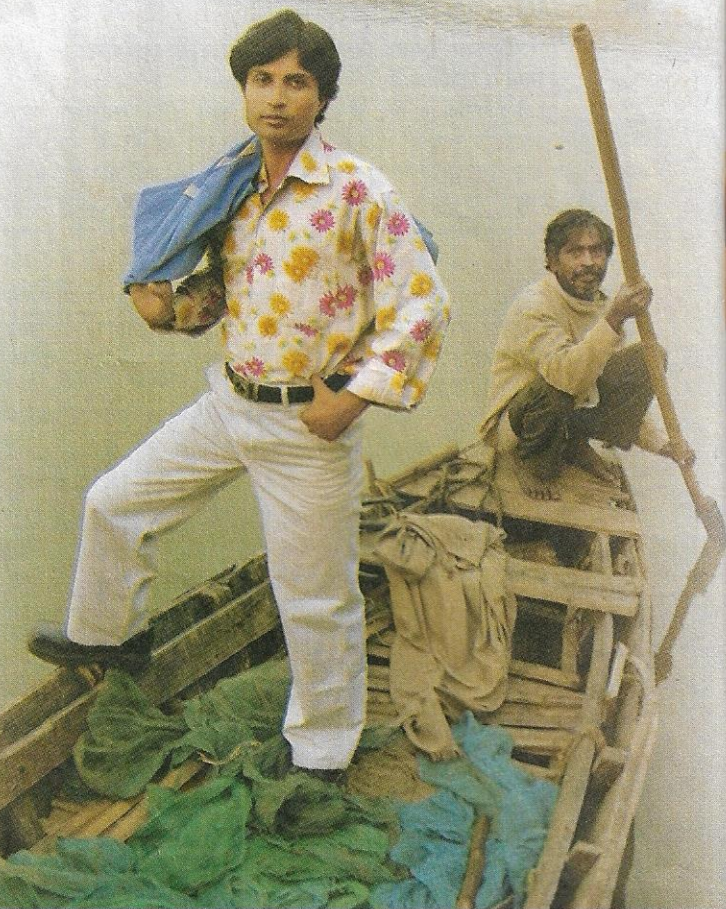
रघु मुसकराता हुआ बोला, "साहब, क्या बात करूं? आप ही कुछ बोलिए."

निशांत ने कहना शुरू किया, "तुम नाव चलाने का यह क्या छोटा सा काम करते हो? तुम्हें तो पढ़लिख कर कुछ बनना चाहिए था. रोज नाव ले कर मीलों तक चुपचाप सफर करते हुए क्या तुम ऊबते नहीं? इस से तो बढ़िया है कि तुम शहर में जा कर मजदूरी करो. कम से कम अकेलेपन से तो छुटकारा मिलेगा."

रघु बोला, "सरकार, लगता है कि आप किताबी जानकारी पा कर बड़े अफसर बने हो. लेकिन माफ कीजिएगा, मैं तो कहता हूं कि आप की बात पूरी तरह बेतुकी है.

"मैं तो यही मानता हूं कि इनसान के लिए कोई भी काम छोटा नहीं होता. उस की सोच छोटी होती है. किसी भी नौकरी से खुद के हाथों का हुनर ज्यादा अच्छा होता है.

"मैं नदी में से मछलियां पकड़ कर बेचता हूं. मैं मछलियां पकड़ने का जाल बुन सकता हूं. सवारियां ढोता हूं. नाव की मरम्मत कर के उसे फिर चलाने लायक बना सकता हूं. साथ ही, मैं किसी भी तरह की मजदूरी कर सकता हूं.

"बुरा न मानना, पर आप इन में से कोई भी काम नहीं कर सकते. हर काम की अपनी अहमियत होती है."

निशांत रघु की बातें ध्यान से सुन रहा था. रघु थोड़ी देर के लिए रुका, फिर बोला, "सरकार, अगर सभी मछुआरे पढ़लिख कर नौकरी करने लग गए, तो इस नदी में से मछलियां कौन पकड़ेगा? एक दिन इस नदी में पानी से ज्यादा मछलियां हो जाएंगी," इतना कह कर रघु घूम कर पहले की तरह बैठ गया.

निशांत को रघु की सारी बातें सही लग रही थीं. उसे महसूस हो रहा था कि वह जिसे गिरी हुई नजरों से देख रहा था, वह अनपढ़ जरूर है, पर समझ के हिसाब से उस से कहीं ज्यादा आगे है.

वह सोचने लगा कि किताबों के अलावा भी इनसान के पास ढेर सारा तजरबा और जानकारी होना जरूरी है. यह जानकारी समय और हालात के मुताबिक अपनेआप इनसान के पास आ जाती है.

निशांत ने रघु की बातों पर रजामंदी दिखाते हुए कहा, "हां भाई, तुम ठीक कह रहे हो. कोई भी काम छोटा नहीं होता. यह मैं ने आज तुम से सीखा है."

रघु को इस बात की तसल्ली हुई कि निशांत ने उस के कहे का बुरा नहीं माना. वह खुशी महसूस कर रहा था. ●

जरूरी है पैन कार्ड

शैलेष माहेश्वरी

आजकल पैन कार्ड की बड़ी अहमियत है. चाहे आप को इनकम टैक्स देना हो या नहीं, मगर फिर भी कई खास कामों में पैन कार्ड की जरूरत पड़ती है.

पैन नंबर यानी परमानैंट अकाउंट नंबर (स्थायी खाता संख्या). यह अकाउंट नंबर हर अर्जी देने वाले को इनकम टैक्स महकमे द्वारा मिलता है.

जरूरत : पैन नंबर 10 अंकों का होता है, जिसे इनकम टैक्स महकमा जारी करता है. जिस शख्स का यह कार्ड होता है, उस पर उस का फोटो भी होता है.

इनकम टैक्स अधिनियम के मुताबिक, इनकम का ब्योरा भरने वाले शख्स, जिस की कुल आमदनी सालाना 2 लाख रुपए से ज्यादा हो, उस का पैन कार्ड बनना जरूरी है.

इस के अलावा अचल संपत्ति को खरीदनेबेचने, बैंक में खाता खुलवाने, गाड़ी की खरीदफरोख्त हेतु 25 हजार रुपए से ज्यादा का बिल चुकाने, औन लाइन ट्रेडिंग और खाते में 50 हजार रुपए से ज्यादा रकम जमा कराने में भी पैन कार्ड काम में लिया जाता है. आजकल आईडी प्रूफ में भी पैन कार्ड मांगा जाता है.

फायदा : इस कार्ड के तमाम फायदे हैं, जैसे :

☛ इस कार्ड का इस्तेमाल आप पहचानपत्र के रूप में भी कर सकते हैं.

☛ यह कार्ड इनकम टैक्स में आने वाली मुसीबतों से हमें बचाता है.

☛ माली साल के आखिर में टीडीएस (टैक्स डिडक्शन औन सोर्स) यानी जो टैक्स आप भर रहे हैं, उस में छूट हासिल करने के लिए पैन कार्ड का होना जरूरी है.

इस के तहत इनकम टैक्स महकमा जितनी रकम आप को जमा करने को कहता है, उस में आप अपनी बचत, बीमा पौलिसी, प्रोविडेंट फंड, लोन वगैरह की जानकारी दे कर इनकम टैक्स में छूट ले सकते हैं.

टीडीएस क्लेम करने के बाद इनकम टैक्स महकमा द्वारा आवेदक को लौटाई जाने वाली रकम में तय समय (टैक्स चुकाने से ले कर महकमे द्वारा रकम लौटाए जाने की समय सीमा) तक का ब्याज भी मिलता है.

अर्जी दाखिल करने का तरीका : पैन कार्ड बनवाने के लिए इनकम टैक्स महकमा द्वारा जारी फौर्म 49 भर कर जमा करना पड़ता है. यह फौर्म आप www.incometaxindia.gov.in पर जा कर डाउनलोड भी कर सकते हैं.

आवेदन करने के बाद आवेदक को एक नंबर दिया जाता है, जिस से वह यह पता लगा सकता है कि उसे पैन कार्ड कितने दिनों में मिल जाएगा. 25 से 30 दिनों के भीतर पैन कार्ड आवेदक द्वारा दिए गए पते पर पहुंच जाता है.

बनवाने की फीस : पैन कार्ड बनवाने की फीस 96 रुपए है.

जरूरी कागजात : पैन कार्ड बनवाने के लिए आवेदनपत्र के साथ 2 फोटो, घर के पते का प्रमाणपत्र, पहचानपत्र की कौपी जमा करानी पड़ती है.

इस तरह सही समय पर पैन कार्ड बनवा कर हम बहुत सी मुश्किलों से बच सकते हैं. ●

कहानी

गिरती दीवारें

मदन मोहन पांडेय

गांव के उस छोर पर चहलपहल थी, पर इस छोर पर मास्टर बलदेव सिंह का मन बेहद दुखी था. उन की सगी भतीजी बिमला का ब्याह होने जा रहा था, पर वे इस ब्याह में जा भी नहीं सकते थे.

राज सिंह उन का छोटा भाई था. न्योता न भेजता तो यों ही कह देता. क्या वे मीनमेख निकालते? नहीं. बिमला के ब्याह में जाने को तो एक बहाना चाहिए था. कम से कम बेटों को बताने को तो हो जाता, वरना वे कहते, 'आदमी बिना बुलाए तो 'भगवान' के घर भी नहीं जाता. वे छोटे हो कर न झुके, पर आप बड़े हो कर झुक गए. यह कहां की अक्लमंदी है?'

जब परिवार इकट्ठा था, तो बिमला उन की कितनी दुलारी थी. जब रोती थी, तब ताऊजी के पास आ कर ही चुप होती थी. ताई के अलावा किसी और के साथ उसे नींद ही नहीं आती थी.

मास्टर बलदेव सिंह के बेटे भी चाचाजी से ही अपनी जरूरत के लिए ठुनकते थे. दोनों भाइयों में बहुत प्यार था. पासपड़ोस वाले उन की एकता की मिसाल देते थे.

मास्टर साहब बच्चों को पढ़ा कर चार पैसे कमाते थे, तो राज सिंह खेतों में सोना उगाता था. घर में खुशहाली थी. पर अब वह सब गुजरे जमाने की बात हो गई थी.

मास्टर बलदेव सिंह के कलेजे में हूक सी उठी. गुजरे दिनों की न जाने कितनी तसवीरें उन की आंखों के आगे सिनेमा की रील की तरह उभरने लगीं. पर वह एक तसवीर सामने आने पर आंखों के सामने से हटने का नाम ही नहीं ले रही थी.

यह तसवीर तब की नहीं थी, जब बाप के न रहने पर 13 साल के राज सिंह को मास्टर बलदेव सिंह ने अपने बेटे की तरह पालापोसा और वह भी मां से ज्यादा सगी भाभी को मानता था.

वह तसवीर राज सिंह की शादी की भी न थी, जब बलदेव सिंह का मन झूम उठा और नई बहू ने घर में आ कर अपनी बोलीबानी से मास्टर साहब पर जादू सा कर दिया था. उन की पत्नी ने देवरानी को छोटी बहन से कम कब समझा था.

यह तसवीर तो अपने भीतर अपनी अलग कहानी छिपाए थी.

हुआ यह कि इस परिवार का सुख कुछ जलने वालों से देखा नहीं गया. चंपा चाची को खीर बनाने को दूध चाहिए था और बलदेव सिंह की पत्नी ने दे भी दिया था, मगर वहीं से चिनगारी भड़की थी.

वह अभीअभी 4 भैंसें दुह कर आई थी. थक गई थी और दम फूल रहा था. वह बैठ भी नहीं पाई थी कि चाची ने अपना फरमान दाग दिया.

तब वह बोली, 'चाची, बैठ तो लेने दो, अभी दूध देती हूं...'

हालांकि चाची दूध लेने के बाद ही गई थीं, मगर मन में एक गांठ भी ले गई थीं. उन्होंने छोटी को न जाने कैसी पट्टी पढ़ाई कि वह जेठानी के स्नेह को भूल कर रूखा सा बरताव करने लगी. तब से घर की शांति को जैसे ग्रहण लग गया.

छोटी बहू की 3 बेटियां थीं. उन्हें दूध पिलाने के बाद वह हांडी खुली छोड़ देती, तो कुत्ता रसोई जूठी कर जाता. कभी दाल में नमक ज्यादा, कभी कम. टोकने पर वह सिर पर सवार हो जाती.

कुछ दिन तो सब सह कर भी बड़ी बहू और मास्टर साहब ने मुंह बंद रखा, पर जब एक दिन बिमला को बड़ी बहू के पास जाने से इसलिए रोक दिया कि वह कहीं जहर दे देगी, तो उन से जब्त न हुआ.

राज सिंह के आने पर वे उस से बोले, 'क्यों भैया, क्या अब तेरी भाभी इतना गिर गई कि बिमला को जहर दे देगी?'

राज सिंह ने तपाक से कहा था, 'दादा, अब मैं ही क्या, गांव का बच्चाबच्चा यह बात कहता है.'

'साफसाफ कहो, पहेलियां न बुझाओ. मैं बहुत...' आगे के शब्द मास्टर साहब के रुंधे गले से निकले ही नहीं. अलबत्ता, उन की आंखों में नमी तैर गई.

'मेरी बेटियां भाभी पर बोझ हैं. आप की कमाई इन की शादी में खर्च हो जाएगी, लड़कों के लिए कुछ बचेगा नहीं. भाभी के मन में आता है कि इन्हें जहर दे दें. जो मन में आता है, कभी न कभी हो भी जाता है, इसलिए अब हम लोगों का अलग रहना ही ठीक है,' राज सिंह ने ऊंची आवाज में कहा.

'अरे, घर में क्या मेरी ही कमाई है? खेतों में तो तू ही अनाज पैदा करता है. फिर बिमला क्या मेरी बेटी नहीं है? इस की शादी में अगर खर्च भी होगा, तो क्या वह कोई कुकर्म में जाएगा? मैं तो सोचता था कि इस की शादी...' आगे फिर मास्टर साहब का गला रुंध गया.

'बस, अब तो मेहरबानी कर के यह मोहनी मंत्र डालना बंद कर दीजिए. 'भैयाभैया' कह कर भैया को बैल की तरह हल में जोता और पैसाटका अपने हाथ में रखा... मुझे भिखारी बना कर छोड़ दिया. अब कुछ और भी चाहते हैं क्या?' छोटी बहू ने हाथ जोड़ कर कहा.

मास्टर साहब का दिल जानता था कि किस तरह बाहर से कमाकमा कर राज सिंह की शादी न होने तक उन्होंने अपनी औलाद पैदा करने तक का विचार नहीं किया था. फिर राज सिंह की शादी कर के कच्चे घर को पक्का कराया था.

राज सिंह पैसा तो लेता नहीं था, पर जेवर, कपड़े या दूसरी सूरतों में उसे कुछ तो मिलता ही था. बैल, भैंस, ट्रैक्टर खरीदना क्या आसान होता है. उन के पास नकद पैसा नहीं था. हैसियत जरूर सब के सामने थी और यही उन के लिए काफी था.

पर उस दिन छोटी बहू की बात ने उन का दिल घायल कर दिया था. सुलह की सारी कोशिशें तब बेकार हो गईं, जब राज सिंह ने कड़क कर कहा था, 'अब हम एक घर में नहीं रह सकते. न मैं अपनी सूरत किसी को दिखाना चाहता हूं, न दूसरे की देखना चाहता हूं.'

'औरतों की बात हो, तो उन्हें समझाओबुझाओ. घर में बंटवारा हो, मगर दिल में न हो, तो कोई बात नहीं.'

'नहींनहीं, मैं जान दे दूंगी, मगर इन मायावी लोगों का मुंह नहीं देखूंगी,' छोटी बहू तड़पी.

जेठानी हैरानी से देवरानी को देख रही थी, पर उस ने गुस्से में भी पुराना रिश्ता भूला नहीं. सोचा, इस ने अगर

अपनी जान को कुछ कर लिया, तो मैं इसे कैसे देख सकूंगी. लोगों की कहासुनी से उस का दिमाग फिर गया है, वरना मैना की तरह 'दीदीदीदी' कहते जबान न थकती थी. खैर, जहां भी रहे, जीतीजागती रहे. इसी भाव से उस ने फिर कोई बात ही नहीं की.

मास्टर साहब भी शायद ऐसा ही सोच रहे थे. बिमला बारबार ताई के बहते आंसू पोंछ रही थी और उस से अलग न होने को कह रही थी.

मास्टर साहब का कलेजा मुंह को आ रहा था. पर जो बात 5 साल की बिमला समझती थी, उसे उस के मांबाप न समझ सके.

बंटवारा हुआ और पक्का मकान राज सिंह को दे कर मास्टर साहब गांव के दूसरी ओर खेत पर बने ट्यूबवैल के छप्पर और कोठरी में चले गए.

बाद में ट्यूबवैल पर मकान बन गया था. मास्टर साहब के बेटे नौकरी तो न पा सके, पर खेती में जुटे. 2-3 साल में ही फिर ढर्रा चल निकला. उन के पास सबकुछ था, मगर राज सिंह का मुंह फुला कर निकल जाना उन्हें किसी कमी का एहसास करा जाता.

पत्नी और मास्टर साहब दोनों ब्याह में जाना चाहते थे, मगर जवान लड़कों के सामने मुंह खोल कर कहने में संकोच हो रहा था. बिमला सोचेगी कि उस के ताऊ खर्चे के डर से नहीं आए, पर बाप की मक्कारी नहीं समझेगी.

आह, ब्याह में परजापाहुन से भी कहा गया होगा, क्या वे उन से भी गएबीते हैं? उन का कलेजा मुंह को आ रहा था.

सांझ हुई, बाजे बजे और उन दोनों की आंखों से आंसू बहने लगे.

जिस तरह दोनों ने रात काटी, वही जानते होंगे. मगर एकदूसरे से मन का दर्द कह भी नहीं सकते थे.

सवेरे मास्टर साहब सिरदर्द का बहाना कर के दरवाजे पर नीम के पेड़ की छांव में पड़ी खाट पर लेट गए.

पत्नी जल्दीजल्दी बरतन मल रही थी, लेकिन उस के कानों में गूंजते दुख भरे विदाई गीत जाने कब उस की आवाज में घुल कर गुनगुनाहट से कुछ ऊपर की आवाज पा गए.

मास्टर साहब इस आवाज को साफसाफ सुन रहे थे. पत्नी के मुंह से एक गीत निकल रहा था, 'बाबुल निबिया का पेड़ जनि काट्यो, निबिया चिरैया बसेर हो...'

गातेगाते उस का गीत हिचकियों में डूब गया. उसे लगा, जैसे संयुक्त परिवार के संबंध ही नीम का पेड़ हैं, जिस पर भावनाओं के समान कोमल और प्यारी बेटियों का बसेरा होता है.

इस पेड़ को काटना नहीं चाहिए. हरियाली बरकरार रखने के लिए इस पेड़ की झुकी हुई शाखाओं के नीचे झुक कर निकलना झुकना नहीं, बल्कि प्रेम की परंपराओं को निभाना है.

अगले पल वह बरतनों की कालिख से सने हाथ लिए मास्टर साहब के सामने खड़ी कह रही थी, "तुम्हारे जैसा आदमी मैं ने नहीं देखा. बेटी की डोली उठ रही है और तुम यहां पड़ेपड़े सो रहे हो. बताओ, बिमला खुद को तुम्हारी बेटी कहती थी कि भैया की?"

पत्नी के आंसुओं की धारा मास्टर साहब को मानो नहला कर तनमन के सारे दुख धो गई.

वह फिर बोली, "अब चलोगे भी कि यहीं पड़े रहोगे?"

गाजेबाजों की आवाज तेज हो गई थी. मास्टर साहब पत्नी समेत तेज कदमों से चले जा रहे थे कि कहीं उन के पहुंचने तक बेटी विदा न हो जाए.

राज सिंह बिमला को मां के गले से छुड़ा कर कार में बैठाने वाले ही थे कि बिमला में पता नहीं कितना बल आ गया. वह उन की गिरफ्त से छूट कर सामने आते मास्टर साहब से जा कर लिपट गई, "मैं जानती थी कि मेरे ताऊ जरूर आएंगे..." आगे के शब्द क्या मुंह से कहने के थे. दोनों के दिलों के फफोले जैसे आंसुओं के शीतल लेप से एकदूसरे को सहला कर सबकुछ पा गए थे.

दामाद संकोच में पूछ रहा था, "ये कौन हैं?"

मास्टर साहब की पत्नी ने आगे बढ़ कर दामाद को अंगूठी पहनाई और कहा, "बेटे, तेरी असली सास तो मैं हूं और यह जो गले मिल रहे हैं, तेरे सगे ससुर हैं. हालांकि बिमला इन्हें ताऊ और मुझे ताई कहती है, पर खुद को बेटी हमारी ही कहती थी. इतने दिनों तक अलग घरों में रहने से क्या रिश्ते बदल जाते हैं."

फिर पत्नी ने मास्टर साहब से कहा, "अब क्या खाली आंसुओं में टरका दोगे? वह हार, जो मैं ने तुम्हारी जेब में डाला था, क्यों नहीं पहनाते?"

बिमला तो ताऊ से मिल रही थी, लेकिन इतने दिन तक जिद पर अड़ी रहने वाली छोटी बहू को जाने क्या हुआ कि वह जेठानी के गले लग कर बिमला से ज्यादा जोर से रोने लगी.

राज सिंह को लग रहा था, जैसे मन में पड़ी दीवारें एकबारगी ही गिर गई हों और उन के गिरने का वेग तनमन की सारी सुधबुध ही हर ले गया हो. ●

कहानी

लाइसैंस

डा. सुरेश मोहन प्रसाद
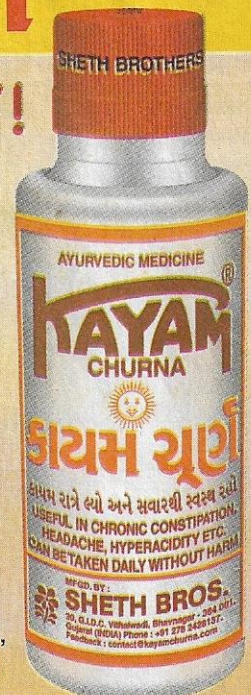
कोकिला चुलबुली और खूबसूरत लड़की थी. अपनी बड़ी बहन सुशीला की शादी में उस की मुलाकात सुरेंद्र से हुई थी. सुरेंद्र ने उन्हीं के शहर के एक इंजीनियरिंग कालेज में दाखिला ले लिया था. वह वहां कालेज के होस्टल से बरात में शामिल होने आया था.

कोकिला सुशीला से तकरीबन 3 साल छोटी थी. अपनी बड़ी बहन की शादी में वह खूब सजीधजी थी. वह अपनी सहेलियों के संग भागदौड़ कर रही थी, शरारतें भी कर रही थी.

सुरेंद्र सुशीला का होने वाला चचेरा देवर था. उसे चंचल और चुलबुल कोकिला अच्छी लगी थी.

शादी के बाद सुशीला के साथ कोकिला भी उस की ससुराल गई थी. 5 दिनों तक सुरेंद्र उस के आगेपीछे मंडराता रहा था. बाद में भी कालेज से समय निकाल कर वह कई बार उस से मिलने आया था. नतीजतन, कोकिला सुरेंद्र को अपना दिल दे बैठी थी.

सुशीला की शादी को 2 साल हो गए थे. उस की गोद में एक प्यारी सी बेटी आ चुकी थी. उसे ससुराल में सभी का प्यार और अपनापन मिला था. वह बेहद खुश थी.

इस बीच कोकिला और सुरेंद्र एकदूसरे के काफी करीब आ चुके थे. एक दिन सुरेंद्र ने कोकिला से जिस्मानी रिश्ता भी बनाना चाहा था.

"इस के लिए लाइसैंस की जरूरत होती है..." कोकिला ने मजाकिया लहजे में कहा था और सुरेंद्र को अपने नजदीक आने से रोक दिया था.

सुशीला कुछ दिनों के लिए मायके आई थी. उसे कोकिला और सुरेंद्र के रिश्तों की जानकारी थी.

"दीदी, आप अपने देवर सुरेंद्र से मेरी शादी करा दो..." कोकिला ने दीदी की खुशामद की थी.

"मैं तुम्हारे जीजा से बात करूंगी... अपनी ओर से भी कोशिश करूंगी," सुशीला ने भरोसा दिलाया था.

सुशीला के ससुर रामनारायण 3 भाई थे. राजनारायण और देवनारायण उन से छोटे थे. सुरेंद्र देवनारायण का एकलौता बेटा था. तीनों भाइयों में बंटवारा हो चुका था, लेकिन उन में अभी भी आपसी प्यार बरकरार था.

बंटवारा मिलबैठ कर रजामंदी से हुआ था. किसी को किसी से कोई शिकायत नहीं थी.

"इंजीनियरिंग की पढ़ाई में मैं ने हजारों रुपए लगाए हैं... मैं तो भरपूर दहेज लूंगा... कोकिला के पिता किशोरीलाल के बस का इतना खर्च उठाना नहीं है..." सुरेंद्र के पिता देवनारायण ने इस शादी से साफ मना कर दिया था.

"मैं आप की मांगें पूरी करने की कोशिश करूंगा..." किशोरीलाल ने उन से मिन्नत की थी.

अपने समधी के बहुत ज्यादा कहने पर रामनारायण ने देवनारायण से सलाहमशवरा किया. देवनारायण सुरेंद्र के रिश्ते के लिए तैयार नहीं हुए.

परिवार में बातचीत के बाद राजनारायण के बड़े बेटे देवकांत से कोकिला के रिश्ते पर सहमति बनी.

देवकांत ने ज्यादा पढ़ाई नहीं की थी. उस का खेतीबारी में लगाव था. गांव के एक अच्छे किसान के रूप में उस की पहचान थी. उस की सब्जियों की बड़े पैमाने पर खेती करने में खासा दिलचस्पी थी.

देवकांत की उगाई गई सब्जियां बिचौलियों द्वारा बड़े शहरों में भेजी जाती थीं. वह खेतों में खुद ट्रैक्टर चलाता था. वह खूबसूरत तो नहीं था, पर उस का गठीला बदन जरूर था.

कोकिला सुरेंद्र की दीवानी थी. वह देवकांत से रिश्ते के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी. लेकिन सुशीला कोकिला को समझाने में जुटी रही.

कोकिला ने देवकांत को देखा तो था, पर उसे कुछ याद नहीं आ रहा था. सुरेंद्र से रिश्ते की कोई उम्मीद नहीं बची थी.

कुछ महीनों की नानुकर के बाद कोकिला ने देवकांत से शादी करने की हामी भर दी.

गरमी की लंबी छुट्टी में सुरेंद्र गांव आया था. शादी के बाद कोकिला बेहद खूबसूरत हो गई थी. उस के भरे बदन में गजब का निखार आ गया था.

देवकांत के गठीले बदन के बोझ में दब कर उस की मांसल बांहों में सिमट कर कोकिला खुश हो गई थी.

कोकिला ने गर्मजोशी से सुरेंद्र का स्वागत किया. कोकिला इतनी खूबसूरत है, इस का सुरेंद्र को पहली बार एहसास हुआ था.

कोकिला सुरेंद्र को भुला चुकी थी. देवकांत के प्यारदुलार ने उसे निहाल कर दिया था. देवकांत कोकिला को अपने साथ खेतों पर ले जाता था.

कोकिला को देवकांत के साथ ट्रैक्टर पर बैठ कर हंसतेखिलखिलाते देख सुरेंद्र पागल हो गया. कोकिला को अपनी बांहों में भर लेने को उस का मन मचल उठा. वह अपनी हद पार करने पर उतारू हो गया. बस, उसे मौके की तलाश थी.

गांव में बिजली ठीक से नहीं आती थी. काफी गरमी पड़ रही थी. सभी आंगन में सोते थे. कोकिला दोमंजिले मकान की छत पर सोती थी. देवकांत सुबहसवेरे उठ कर खेतों की ओर निकल जाता था और देर से लौटता था.

सुबहसुबह सुरेंद्र की नींद खुल गई. उस का ध्यान देवकांत के जाने की आहट की ओर था.

दरवाजे पर आइट हुई. देवकांत खेतों की सैर पर निकल चुका था. सुरेंद्र ने हिम्मत जुटाई और सीढ़ियां चढ़ कर छत पर आ गया.

कोकिला बिस्तर पर बेसुध पड़ी थी. कपड़े इधरउधर थे. सुरेंद्र कोकिला के गोरेचिकने बदन को देख रहा था. पागलपन की हालत में वह कोकिला के बिस्तर पर आ बैठा और उस ने उस के उभारों पर हाथ फेरा.

कोकिला ने अंगड़ाई ली. सुरेंद्र कोकिला को अपनी बांहों में भरने को उतावला हो उठा.

अनजानी छुअन से कोकिला की नींद खुल गई. सुरेंद्र को अपने बिस्तर पर देख वह हैरान रह गई.

"तुम इतना नीचे गिर चुके हो... तुम्हें क्या रिश्ते की पहचान नहीं है..." कोकिला ने सुरेंद्र को बुरी तरह लताड़ा.

"मैं तुम्हारा प्यार पाने आया हूं. प्लीज, निराश मत करो... अब तुम्हारे पास लाइसैंस भी है... प्यार लुटा सकती हो..." सुरेंद्र ने कोकिला को बरगलाने की कोशिश की.

"मैं ने मंडप में पति के साथ सात फेरे लिए हैं... कसमें खाई हैं... हमारा रिश्ता आपसी प्यार और भरोसे का है... मैं इसे हर कीमत पर निभाऊंगी... अच्छा हुआ कि मेरा तुम से रिश्ता नहीं हुआ," कोकिला ने सुरेंद्र के बहकावे में आने से साफ मना कर दिया था.

सुरेंद्र कुछ सुनने को तैयार नहीं था. उस ने कोकिला को अपनी बांहों में भरने की नाकाम कोशिश की. कोकिला सुरेंद्र की जबरदस्ती सहन न कर पाई. उस ने सुरेंद्र को जोरदार चांटा जड़ दिया.

चांटा खा कर सुरेंद्र तिलमिला उठा. उस का पागलपन उतर चुका था. वह कुछ देर सिर झुकाए चुपचाप खड़ा रहा, फिर दबे पांव छत से नीचे उतर गया.

सुरेंद्र के जाने के बाद कोकिला गहरी सोच में डूब गई. देवकांत सुरेंद्र की इस घिनौनी हरकत को कतई बरदाश्त नहीं कर पाएगा. वह सुबह देर तक बिस्तर पर बैठी सोच में डूबी रही.

खेतों की सैर कर के देवकांत दोपहर को घर आया. कोकिला ने बड़े प्यार से खाना परोसा.

"सुरेंद्र जल्दी वापस चला गया... वैसे तो वह लंबी छुट्टी पर आया था... होस्टल में ही रह कर पढ़ाई करने की बात कह रहा था वह... शायद आखिरी साल है उस का..." देवकांत ने कोकिला को सुरेंद्र के शहर जाने की खबर दी.

सुरेंद्र के शहर चले जाने की खबर से कोकिला को राहत मिली थी. ●

कहानी

डा. गोपाल नारायण आवटे

मन नहीं लग रहा था. सोच रही थी कि तकिए में मुंह छिपा कर जी भर के रो लूं, लेकिन मैं रो भी नहीं सकती थी. सोचा, हाथ में प्रोजैक्ट का जो काम है, उसे छोड़ दूं, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती थी. मुझे इस प्रोजैक्ट को पूरा कर के ही सोना है.

लेकिन मन क्यों परेशान है? ऐसी परेशानी, जिसे मैं चाह कर भी अपनेआप से नहीं हटा पा रही थी. एकएक सीन याद आ रहा था.

मैं जिंदगी में कभी इतना गहराई से सोच भी नहीं पाती, पर सबकुछ बदल गया है. मेरे रहने में, खाने में. सोचने पर मैं बरसों पीछे जा कर सोच भी नहीं पाती हूं. मैं लगातार ऊंचाइयों पर चढ़ती गई.

उस समय जब अपने ही लोगों ने मेरी खिलाफत की थी, तब 'पापाजी' ने कहा था, 'तुम किसी की परवाह मत करो. जब तुम पहाड़ पर चढ़े होते हो, तो नीचे के लोग खुद ही छोटे हो जाते हैं. एकदम बौने हो जाते हैं. तुम चलती रहो. ऊपर और ऊपर चढ़ती जाओ. यही तुम्हारी जिंदगी का मकसद है.'

ये बातें सुन कर मुझे काफी तसल्ली हुई थी, लेकिन जिंदगी इतनी सपाटसरल थोड़े ही होती है.

पुरानी यादें मुझे कचोट रही थीं. मैं उन से बचना चाह रही थी, पर पुरानी यादों की धूल आंखों में चुभ रही थी. मैं कुछ भी याद करना नहीं चाहती थी, लेकिन यह सब मेरे बस में कहां था.

मैं कंप्यूटर के सामने से हट गई और खिड़की के पास जा कर खड़ी हो गई.

गरमी का मौसम था. नीम के पेड़ों पर ढेरों फल लदे थे. सब हवा में हिल रहे थे. लैंप पोस्ट की रोशनी में पूरी सड़क उजाले में नहाई हुई थी.

पुरानी यादों का एकएक पल आंखों के सामने घूम रहा था. न जाने कहां से आ कर आंखों से आंसू बरस रहे थे.

मुझे नहीं रोना चाहिए था, लेकिन कुछ बातों पर मेरा बस बिलकुल नहीं है. बचपन में भी मैं अपने बारे में कुछ न कह कर चुपचाप आंसू बहा लेती थी.

मैं जिस समुदाय में रहती थी, उस समाज को बाकी समाज अच्छी नजर से नहीं देखता था.

मुझे मालूम है कि मेरे पिताजी की मौत एक छोटी सी चोरी करते हुए हुई थी, लेकिन हमारे परिवार ने यह बात छिपा ली थी.

मेरा परिवार में चौथा नंबर था. हम ने जब भी कुछ खानेपीने की जिद की, अम्मां सौ रुपए का नोट निकाल कर दे देती थीं. पिताजी जब कहीं बाहर जाते, तो हम बहुत खुश होते थे कि लौट कर वे ढेर सारे रुपए लाएंगे और होता भी यही था.

लेकिन हम ने कभी साफ कपड़े नहीं पहने. हफ्ते 2 हफ्ते तक नहाते भी नहीं थे, ताकि गंदे दिखाई दें और किसी की नजर में हम आएं भी नहीं.

पुलिस परेशान करती, तो हम उस जगह को छोड़ देते और कहीं दूसरी जगह चले जाते, लेकिन काम कहीं भी नहीं करते थे. हमें कोई काम पर रखने को तैयार भी नहीं था.

समाज तो हम से उम्मीद करता था कि हम गलत काम न करें, लेकिन हमें अपने साथ रखने को तैयार भी नहीं था. आखिर कब तक यह सब चलेगा?

मैं कभी ऐसी बातें सोच भी नहीं पाती थी. जानती थी कि मैं कुछ बरसों में बड़ी हो जाऊंगी, मेरी शादी भी हो जाएगी. मेरा घर वाला भी चोरीचकारी करेगा. मैं 2-4 बच्चे पैदा करूंगी और कीड़ेमकोड़े की तरह मर जाऊंगी.

जहां हम रहते थे, वहीं बगल में एक स्कूल था. सुबह प्यारेप्यारे बच्चे पढ़ने के लिए आते थे. मैं उन्हें देखती, तो मन ही मन में ऐसी जगह जाने की बड़ी इच्छा होती. लेकिन स्कूल कोई हमारे लिए थोड़े ही बने हैं, ऐसा सोच कर मैं मन मार कर रह जाती थी.

जब स्कूल खुलता, तो मैं उस की बाउंड्री के बाहर खड़ी हो कर ए फौर एप्पल जरूर बोलती थी.

एक दिन वहां के मास्टरजी ने मुझे देख लिया था. उन्होंने मुझे बुलाया, तो मैं भाग कर अपने डेरे में जा छिपी.

2-3 दिन बाद मैं फिर वही ए फौर एप्पल वाली जगह पर खड़ी थी.

मास्टरजी ने मुझे फिर बुलाया, मैं फिर भाग खड़ी हुई.

मास्टरजी मेरे पीछेपीछे मेरे डेरे तक आए. पिताजीअम्मां ने हाथ जोड़ कर माफी मांगी कि आज के बाद कभी हमारी बेटी स्कूल तक नहीं जाएगी. लेकिन मास्टरजी ने समझाया कि वे मुझे स्कूल में भरती करने के लिए आए हैं.

यह सुन कर मेरे पिताजीअम्मां जोर से हंस दिए थे.

पिताजी ने मास्टर साहब से कहा था, 'हमारी जातिबिरादरी में कोई भी बच्चा स्कूल नहीं जाता है साहब.'

'जाति की बात छोड़ो, आप तो अपनी बेटी को स्कूल भेजो. उसे पढ़ने का शौक है, वह खूब आगे जाएगी...'

मेरे पिताजीअम्मां के लिए यह बात आसमान छूने जैसी थी, लेकिन उन्होंने इसे गंभीरता से नहीं लिया.

इधर मेरा रोज का नियम हो गया था. जब सुबह स्कूल खुलता, तो मैं बच्चों को स्कूल जाते देखती और फिर मैं स्कूल के बाहर खड़ी हो कर वन, टू, थ्री बोलती.

मेरी दिलचस्पी देख अम्मांपिताजी ने मास्टर साहब से बात कर के मुझे स्कूल भेजने की ठान ली. लेकिन मैं ने स्कूल जाने से मना कर दिया. अम्मां ने 2 थप्पड़ मारे और पिताजी मुझे घसीट कर स्कूल तक ले गए.

मैं स्कूल के एक कमरे में किसी अजायबघर के जानवर की तरह बैठी रो रही थी और घबरा रही थी.

मास्टर साहब ने बड़े प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा, तो मैं डर गई थी.

अगले दिन अम्मां ने एक थप्पड़ मारा. मैं रोई, लेकिन स्कूल चली आई. अपने गंदे कपड़ों को देख कर मुझे शर्म आती थी. मास्टरजी ने स्कूल की 2 जोड़ी ड्रैस मुझे दिलवा दी और मैं उसे पहन कर राजकुमारी सी लगने लगी थी.

किताबों की दुनिया बड़ी अजीब थी.

अक्षर जोड़े, तो शब्द बन गए. शब्द जोड़े, तो वाक्य बन गए. वाक्य जोड़े, तो विषय समझ में आने लगा.

5वीं बोर्ड में मैं अव्वल आई. यहां कसबे में 5वीं जमात तक स्कूल था. अब आगे कहां जाऊं?

परिवार वाले भी चाह रहे थे कि मैं आगे पढ़ूं. मास्टरजी ने उस दिन राज खोला कि जो स्कूल की फीस, ड्रैस, किताबें वगैरह तुम्हें मिल रही थीं, वे हैडमास्टर साहब अपनी जेब से दे रहे थे. उन्हें सब सम्मान से 'पापाजी' कहते थे.

मेरा मन उन के आगे झुक गया था. मास्टरजी ने ही बताया था, 'तुम्हारे आगे की पढ़ाई और होस्टल का इंतजाम 'पापाजी' करने वाले हैं.'

मेरे परिवार के सदस्यों को बहुत खुशी हुई, लेकिन मैं वहां अकेली कैसे रहूंगी, यह सोच कर घबरा रही थी.

एक शाम हमारे टूटे झोंपड़े में 'पापाजी' आए. मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरा, फिर परिवार के सदस्यों से बात की.

'पापाजी' मुझे और अम्मां को ले कर होस्टल दिखाने भी ले गए. वह बड़ी सी इमारत थी. उस में कई कमरे थे.

लौटते समय 'पापाजी' ने मुझ से कहा था, 'तुम्हें आगे बढ़ना है, तो एक ही उपाय है चलते रहो. सिर्फ चलते रहो... तुम्हारा छोटा सा कदम मंजिल को एक कदम पास लाता है.'

मैं ने मन ही मन सोचा कि मैं खूब पढ़ूंगी.

होस्टल में मेरा दाखिला हो गया और मैं पढ़ाई में जुट गई. अम्मां हर हफ्ते मिलने आती थीं और 'पापाजी' महीने में एक बार. वे भी मुझ से जरूरतों का सामान पूछ कर चले जाते थे और अगले दिन वह सब सामान मेरे पास पहुंच जाता था.

अम्मां एक रविवार को आईं. उन्होंने बताया था, 'पिताजी कहीं चोरी करने जा रहे थे, तो करंट लगने से उन की मौत हो गई.'

मैं सुन कर रोने लगी. अम्मां भी रो रही थीं. अम्मां न आगे मुझे दुखभरी खबर दी, 'हम यह कसबा छोड़ कर जा रहे हैं.'

'मैं यहां किस के भरोसे रहूंगी?' मैं ने रोतेरोते पूछा था.

अम्मां ने भी अपने आंसू पोंछ कर कहा था, 'तुम्हारे 'पापाजी' हैं न... फिर बेटी, मैं तुम से मिलने आती रहूंगी.'

'तुम ने पिताजी के मरने की खबर मुझे देर से क्यों दी?'

'तुम्हारे 'पापाजी' ने मना जो कर दिया था.'

'क्यों?' मैं ने पूछा.

'क्योंकि तुम्हारे इम्तिहान जो चल रहे थे.'

'तो?'

'उन्होंने कहा था कि किसी के खत्म होने पर दुनिया रुकती नहीं है. जो चला गया, उस की खाली जगह को भरने के लिए हमें दोगुनी रफ्तार से काम करना चाहिए.'

'क्या कह रही हो...' मैं ने हैरानी से कहा था.

'उन्होंने तो यहां तक कहा था कि मेरी मौत पर तुम अपना काम मत रोकना, सिर्फ चलती रहना... जीनामरना तो कुदरत का नियम है. हमें खुश होना चाहिए कि कोई इनसान हमारे साथ इतने समय तक रहा. दुखी नहीं होना चाहिए कि खुशियां ले कर चला गया, बल्कि यह सोचना चाहिए कि वह हमें कितनी सारी खुशियां दे गया...'

अम्मां बता रही थीं और मैं उन के चेहरे को देख रही थी. यकीनन, पिताजी की मौत का दुख अम्मां को कम हुआ होगा, क्योंकि 'पापाजी' ने जो कहा था, सच ही तो था. लेकिन न जाने क्यों फिर भी पिताजी की याद में दिल दुखी हो रहा था. अम्मां चली गई थीं. मैं यहां 'पापाजी' के भरोसे रह गई थी.

छुट्टियों में 'पापाजी' मुझे घर ले गए. पूरे परिवार ने मुझे सिरआंखों पर लिया. मुझे नहीं लगा कि मैं कोई दूसरी जाति या समुदाय की हूं. हफ्तेभर रह कर फिर होस्टल में आ गई.

पढ़ाई पूरी होने के बाद 'पापाजी' ने शहर में मेरे लिए एक कमरा किराए पर ले दिया. कुछ दिनों तक मैं ने एक स्वयंसेवी संस्था में काम भी किया.

मेरे परिवार के 1-2 सदस्य आ कर रह कर चले भी गए. जब भी वे आते, पड़ोसी घूरघूर कर देखते थे.

एक दिन अचानक कसबे से खबर आई कि 'पापाजी' नहीं रहे...

इतना सुनते ही मेरा मानो सबकुछ हाथों से छूट गया. मैं वहां पहुंची. 'पापाजी' के मरने का पूरे परिवार में कोई दुख नहीं मना रहा था. सब के चेहरे पर सुकून था.

मेरी आंखों से आंसू बह निकले थे, जो गालों से बह कर उन के चेहरे पर जा पहुंचे थे. अचानक लगा कि 'पापाजी' मुझ से कह रहे हों, 'क्यों हाथों का काम छोड़ कर आई हो... जीनामरना तो कुदरत के नियम है. घर लौटो और बाकी काम निबटाओ.'

'पापाजी' के दाह संस्कार के फौरन बाद मैं लौट आई.

मैं उठी और कंप्यूटर चालू किया. जो प्रोजैक्ट पर काम कर रही थी, उस को पूरा करने में जुट गई. ●

नसीहत

बेरुखी शादीशुदा माशूका की

भारत भूषण श्रीवास्तव

लाखों उत्तर भारतीयों की तरह कामकाज की तलाश में बिहार के सुरेश को भी 25 साल की उम्र में ही प्रदेश से बाहर जाना पड़ गया था.

एक नजदीकी जानपहचान वाले राम अवतार ने उसे बेंगलुरु बुला लिया और वहीं पर एक कंपनी में नौकरी का इंतजाम भी कर दिया.

सुरेश बहुत मेहनती था. लिहाजा, जल्दी ही वह इस अनजान जगह में रचबस गया. दिल लगने की एक बड़ी वजह उस की बस्ती में रहने वाली योगिता भी थी, जो उस के मकान से चंद कदमों की दूरी पर रहती थी.

सुरेश को न तो कन्नड़ भाषा समझ आती थी और न ही यहां का खाना उसे रास आया था, इसलिए कमरे का इंतजाम होते ही वह खुद अपने हाथ से खाना बनाने लगा.

उसे शिफ्ट के हिसाब से कभी दिन में, तो कभी रात में 10 घंटे की ड्यूटी करनी होती थी.

कुंआरा होने के चलते सुरेश को शिफ्ट से कोई फर्क नहीं पड़ता था, लेकिन बालबच्चे वाले और शादीशुदा लोगों को रात की पाली भारी पड़ती थी. इन में से एक योगिता का पति अशोक भी था, जो सुरेश की कंपनी में ही काम करता था.

जल्दी ही सुरेश और योगिता की पटरी अच्छी बैठने लगी. उन दोनों के बीच हलकाफुलका हंसीमजाक भी होने लगा था.

उत्तर प्रदेश की रहने वाली 26 साला योगिता की शादी को 4 साल हो गए थे, पर अभी तक कोई बच्चा नहीं हुआ था.

अकसर ऐसा होता था कि जिस पाली में अशोक की ड्यूटी होती थी, उस में सुरेश की नहीं होती थी. लिहाजा, उस का ज्यादा से ज्यादा वक्त योगिता के साथ बीतने लगा.

आम लफ्जों में कहें, तो सुरेश को योगिता से प्यार हो गया था और वह यह मान कर चलने लगा था कि योगिता भी उसे चाहने लगी है.

क्या यही प्यार है

हुआ इतनाभर था कि भरे बदन की योगिता इसी प्यार के चलते उस के सामने चादर सी बिछ गई थी. चूंकि सैक्स के मामले में वह तजरबेकार थी, इसलिए सुरेश को तरहतरह से मजा देती थी. इस तरह के मजे के बारे में उस ने किताबों में पढ़ा था या कभीकभार ब्लू फिल्मों में देखा था.

जैसे ही अशोक ड्यूटी पर जाता, योगिता घर का कामकाज निबटा कर सुरेश से आ लिपटती. दोनों प्यारमुहब्बत की बातें करते, सैक्स के सैलाब में घंटों डुबकियां लगाने लगाते. इसी दौरान हुई बातचीत में उस का भरोसा जीतने या जताने के लिए योगिता अकसर यह कहती थी कि वह अशोक से खुश नहीं है.

सुरेश इन बातों को सुन कर फूला नहीं समाता और अपनेआप को वाकई किस्मत वाला समझने लगता. जल्दी ही उस ने योगिता को एक मोबाइल फोन भी खरीद कर दे दिया, ताकि वे दोनों फोन पर भी बातें कर सकें.

उफ, ये बेरुखी

एकाएक योगिता ने सुरेश से बात करना बंद कर दिया. शुरू में तो सुरेश खुद को यह समझाते हुए तसल्ली देता रहा कि जरूर कोई बड़ी मजबूरी रही होगी या अशोक को पता चल गया होगा, इसलिए योगिता उस से मिलने से कतराने लगी है.

पर एक दिन यह जान कर उस का खून खौल उठा कि योगिता किसी दूसरे से मिलनेजुलने लगी है. दिन का चैन और रातों की नींद ऐसी उड़ी कि सुरेश का खानापीना, उठनाबैठना मुहाल हो गया. एक ही सवाल उसे परेशान कर रहा था कि ऐसा क्या हो गया, जो कल तक उस पर मरमिटने वाली योगिता ने उस से किनारा कर लिया.

यहां तक तो ठीक था, लेकिन आंखों के सामने ही वह किसी और से प्यार करने लगी है, तो उस के मन में बदले की आग धधकने लगी.

जब भी उस ने योगिता से बात करने की कोशिश की, तो सख्त सा जवाब मिला था कि जो हुआ उसे भूल जाओ. फोन लगाया, तो ऑपरेटर की आवाज में टका सा जवाब मिलता कि जो नंबर आप ने डायल किया है, वह अभी बंद है. कृपया, थोड़ी देर बाद डायल करें.

सुरेश का सब्र जवाब दे गया था. लिहाजा, उस ने एक दिन योगिता को धमकी दी कि अगर उस ने इधरउधर मुंह मारना बंद नहीं किया, तो वह उस के पति अशोक को सारी बातें बता देगा.

सुरेश को लगा कि यह धौंस सुन कर योगिता उस के सामने गिड़गिड़ाएगी, पर हुआ एकदम उलटा.

योगिता ने बेरुखी से जवाब दिया कि जाओ, कह दो, जिंदगी मेरी है. अपनी मरजी से जिऊंगी. जो बने सो कर लो.

सुरेश को अपनी जिंदगी बेकार लगने लगी थी. एक पल को उस के मन में खयाल आता कि अब खुदकुशी करना ही बेहतर है, पर दूसरे ही पल सोचा कि मैं क्यों मरूं. इस से तो अच्छा है कि उस बेवफा योगिता का ही खात्मा कर दूं, जिस ने दिल का चैन और सुकून छीन लिया.

क्या करें जब...

सुरेश और उस के जैसों की हालत सहज समझी जा सकती है. वजह, उन का कुसूर उन्हें नहीं मालूम रहता. कल तक जो माशूका बहार बन कर छाई रहती थी, वह बिना किसी वजह के दूर हो जाए, तो ऐसी हालत हो जाना कुदरती बात है.

योगिता सुरेश के नजदीक यह सोच कर आई थी कि शायद उस से हमबिस्तरी कर वह पेट से हो जाएगी. शादी के 4 साल बाद तक पति से बच्चा न होने से वह चिंतित नहीं होगी, पर सुरेश से भी कोई फायदा न हुआ, तो वह तीसरे से जुड़ गई.

तय है, ऐसी औरत किसी से प्यार नहीं कर सकती, पर बिस्तर पर किसी का भी साथ ले और दे सकती है. लेकिन उस ने खुद को और पति को किसी माहिर डाक्टर को दिखाया होता, तो शायद ऐसी नौबत ही न आती.

सुरेश ने शादीशुदा औरत से प्यार करने की पहली गलती से कोई सबक नहीं लिया था, इसलिए दूसरी बड़ी गलती वह मरनेमारने की बातें सोचने लगा.

बेहतर तो यह है कि ऐसा धोखा खाने की सूरत में उसे दिल पर न लिया जाए. माना यह जाए कि मुफ्त में मौज खूब कर ली, अब शादी कर के घर बसाया जाए या मन दूसरे कामों में लगाया जाए, अच्छी किताबें पढ़ी जाएं और सब से बड़ी बात यह कि घर बदल कर माशूका से दूर हो जाया जाए. वह सामने रहेगी, तो छाती पर मूंग ही दलेगी.

शादीशुदा माशूका के पति से शिकायत करने या राज खोलने से कोई फायदा नहीं. मुमकिन है, वह पहले से ही इस बात को जानता हो या फिर इस बात पर यकीन ही न करे और कर भी ले, तो देखा यह गया है कि कोई भी आशिक बदले की भावना से माशूका का घर उजाड़ कर भी चैन से नहीं रह पाता. ●

मैं पिछले 6 साल से एक लड़के से प्यार करती हूं. वह भी मुझ से बहुत प्यार करता है, लेकिन अब उस ने मेरी ममेरी बहन के साथ भी जिस्मानी रिश्ता बना लिया है. वह कहता है कि यह सब गलती से हो गया. वह मुझ से ही प्यार करता है और शादी करना चाहता है. मैं उस के प्यार पर कैसे यकीन करूं?

आप का प्रेमी मौकापरस्त व चालाक लगता है. उस पर पूरी तरह से भरोसा नहीं किया जा सकता. अगर आप उस से शादी करती हैं, तो आगे भी वह ऐसी हरकतें कर सकता है. इस के लिए आप दिमागी तौर पर तैयार रहें.

●

मैं 19 साल की बीकौम की छात्रा हूं. मैं अपने सामने वाले घर में रहने वाली एक भाभी से बहुत प्यार करती हूं. हम दोनों जिंदगीभर एकदूसरे के साथ रहना चाहती हैं, लेकिन भाभी के पति इस के लिए तैयार नहीं हैं. मैं क्या करूं?

कभीकभी इस तरह का लगाव हो, तो आप दोनों ऐसे तरीके से मिलें कि भाभी के पति को पता न चले. कुछ बातें छिपी ही रहनी चाहिए. आप दोनों तब मिलें, जब भाभी का पति घर पर न हो.

●

मैं 27 साल का हूं. मेरी शादी हो चुकी है और मैं सरकारी नौकरी करता हूं. मेरा एक लड़की के साथ चक्कर चल रहा है. अगर मेरी बीवी को पता चलेगा, तो क्या होगा? क्या मैं अपनी प्रेमिका से शादी कर सकता हूं?

बीवी को पता चलेगा, तो वह आप की खाट खड़ी करेगी और क्या. बेहतर होगा कि आप प्रेमिका को छोड़ कर बीवी के साथ वफादार रहें. प्रेमिका से शादी करने का तो सपना भी न देखें. इस के लिए पहले आप को अपनी बीवी से तलाक लेना होगा, जिस में बरसों लग सकते हैं.

●

मैं एक लड़की से काफी समय से प्यार करता आ रहा हूं. हमारी शादी की बात भी चली थी, पर मेरे पिता व उस के पिता के बीच मतभेद हो गए. हम दोनों एकदूसरे के बिना नहीं रह सकते. अब मैं क्या करूं?

आप दोनों अदालत में शादी कर लें. पर याद रखें कि न आप के पिता अपनी बहू से खुश होंगे और न बीवी के पिता आप से. क्या ऐसी शादी से आप दोनों खुश रह सकोगे?

●

मैं 17 साल की मुसलिम लड़की हूं और 12वीं जमात में पढ़ती हूं. मुझे 23 साल के एक लड़के से प्यार हो गया. घर वाले भी हमारे रिश्ते के लिए राजी हो गए थे, पर मेरे घर वालों को लड़के के घर का इलाका पसंद नहीं है, इसलिए वे मना कर रहे हैं. मैं उस लड़के के बिना नहीं रह पाऊंगी. मुझे क्या करना चाहिए?

जहां तक इलाके का सवाल है, तो लड़के के घर में आप को रहना है, आप के घर वालों को नहीं. आप यह बात अपनी मां को समझा सकती हैं. जब आप 18 साल की हो जाएं, तो वहां शादी के लिए जिद व प्यार से घर वालों को तैयार कर सकती हैं.

●

मैं एक मुसलिम नौजवान हूं और 3 सालों से एक हिंदू लड़की से प्यार करता हूं. हम दोनों शादी करना चाहते हैं, पर धर्म की अड़चन आड़े आ रही है. मैं ने जान देने की कोशिश भी की थी. अब मैं क्या करूं?

दूसरे धर्म की लड़की से शादी करने में तमाम अड़चनें [illegible] हैं. अगर आप पूरी तरह से अपने पैरों पर खड़े हैं, तो अदालती शादी कर के अलग घर बसा सकते हैं, वरना उसे भूल जाएं.

●

मैं 30 साल का हूं और मेरी पत्नी 25 साल की. हम ने प्रेमविवाह किया था. हम दोनों हमबिस्तरी भी अच्छी तरह करते हैं, पर इधर कुछ दिनों से मेरी हमबिस्तरी में दिलचस्पी कम हो गई है. ऐसा क्यों है?

ज्यादा हमबिस्तरी करने से अकसर उस में दिलचस्पी घट जाती है, जो कुछ समय बाद ठीक हो जाती है. वैसे, इस में फिक्र करने वाली कोई बात नहीं है.

●

मैं 23 साल की हूं. मैं एक लड़के से प्यार करती थी और हमारी शादी होने वाली थी. हमारे बीच जिस्मानी संबंध भी थे, पर एक हादसे में उस लड़के की मौत हो गई. अब मेरी शादी किसी दूसरे लड़के से होने वाली है. मुझे डर है कि उसे मेरे पुराने संबंधों का पता चल गया, तो क्या होगा?

आप अपने होने वाले पति को कभी भी अपने पुराने संबंधों के बारे में नहीं बताएं और सहज रहें. उसे कभी भी इस का पता नहीं चलेगा.

●

मैं 20 साल का हूं. मुझे कालेज की एक लड़की से प्यार हो गया है. वह मुझ से जिस्मानी संबंध बनाने के लिए कहती है, पर मैं मना कर देता हूं. इसी वजह से वह मुझ से बात नहीं करती है. मैं क्या करूं?

आप के मामले में उलटी बात हो रही है. अकसर लड़के ऐसी जिद करते हैं और लड़कियां राजी नहीं होतीं. आप उसे शादी तक इंतजार करने को कहें और वह फिर भी न माने, तो सही समय और जगह देख कर उस की आरजू पूरी कर दें.

●

मैं 23 साल की हूं और शादी से पहले हमबिस्तरी कर चुकी हूं. मेरे प्रेमी ने मुझे छोड़ कर दूसरी लड़की से शादी कर ली है. मैं भी उसे भूल चुकी हूं. क्या शादी के बाद मेरे पति को मेरे पहले से हमबिस्तरी करने का पता चल जाएगा?

आप बेझिझक शादी करें और अपने पति को प्रेमी के साथ बने संबंधों के बारे में भूल कर भी न बताएं. मर्द को प्यार करने वाली, घर संभालने वाली बीवी चाहिए होती है, उस का इतिहास नहीं.

●

मैं 4 सालों से एक लड़के से प्यार करती हूं, पर वह मुझे अपनी बैस्ट फ्रैंड ही मानता है. उसे मेरे प्यार का पता है, पर वह उसे स्वीकार नहीं करता. मुझे क्या करना चाहिए?

आप को उस से प्यार का नाता तोड़ लेना चाहिए. बस, अच्छी जानपहचान बनी रहने दें.

●

मैं 22 साल का हूं और एक लड़की से प्यार करता हूं. अलगअलग जाति का होने के चलते घर वाले हमारी शादी को राजी नहीं होंगे. लड़की मेरे बिना नहीं रहना चाहती. मुझे रास्ता बताएं?

अगर आप भी लड़की के बिना नहीं रह सकते, तो अदालती शादी कर के अलग घर बसा लें. ऐसा मुमकिन न हो, तो लड़की से नाता तोड़ लें.

●

मेरी 2 बीवियां हैं और मैं दोनों से प्यार करता हूं. मुझे पहली बीवी के साथ हमबिस्तरी करने में मजा नहीं आता, जबकि दूसरी बीवी के साथ हमबिस्तरी करने में पूरा मजा आता है. लेकिन मेरी पहली बीवी मुझे ज्यादा प्यार करती है. दोनों बीवियां एकदूसरे के साथ रहना भी नहीं चाहतीं. कृपया मेरी समस्या का हल बताएं?

आप ने 2 शादियां कर के गलती की है, यह अपराध है. इस की सजा है कि आप दोनों में सुलह कराने की कोशिश करें, दोनों को बराबर समय दें और बराबर प्यार करें. दोनों अगर आप को जेल में बंद न कराएं तो ही गनीमत है.

●

मैं 21 साल का हूं और एक 19 साल की लड़की के साथ हमबिस्तरी करना चाहता हूं. मैं कंडोम का इस्तेमाल नहीं करना चाहता. मैं कौन सा तरीका अपनाऊं, जिस से वह पेट से न हो?

शादी से पहले हमबिस्तरी में बहुत जोखिम है. याद रखिए, कभी भी लड़की आप पर बलात्कार करने का मामला ठोंक सकती है. ●

आप अपनी समस्या एसएमएस के जरिए भी इस मोबाइल नंबर 08826099608 पर भेज सकते हैं.

मजाक

लाइन में लगे रहो

सुदर्शन कुमार सोनी

हट जा बीच से. जानता नहीं है कि हम यहां का लीडर हूं...' वाला इश्तिहार तो आप ने देखा ही होगा, जिस में ट्रैफिक पुलिस का सिपाही रास्ता रोक कर कहता है कि जो रूपा फ्रंटलाइन पहने हुए है, वही लाइन में सब से आगे रहेगा, बाकी पीछे. और नेताजी भी अफसोस करते रह जाते हैं.

लाइन में लगना, फिर इस में आगे रहना या पीछे रह जाना, लाइन तोड़ कर आगे आ जाना, लाइन से बाहर धकेल दिया जाना वगैरह... हर करने के निर्देशों का स्विच है.

नौजवान तो लाइन के नाम से बड़े प्रभावित रहते हैं. मौका मिला नहीं कि लाइन मारने लगे.

यह भी एक कला है. वात्स्यायन को भी उस समय नहीं मालूम था, नहीं तो वे इसे 65वीं कला के रूप में मंजूरी दे चुके होते.

हां, कभीकभी उलटा होता है. लड़का या छोकरा सीधा है, तो लड़की या छोकरी लाइन मारने लगती है. लाइन है ही ऐसी चीज, जो किसी में कोई फर्क नहीं करती.

लाइन मतलब अनुशासन. खड़े रहना पड़ता था और दूसरी ओर बैठा शख्स सब को उस के सामने लाइन में देख कर मुसकराता रहता था.

बेरोजगार तो बेचारा न जाने कितनी लाइनों में लग चुका है, कितनी नौकरियों को लाइन मार चुका है, लेकिन कोई पटती ही नहीं है. पटती क्या देखती तक नहीं है. वह तो बाट जोहता है कि सीधी नहीं तो तिरछी नजरों से ही देख लो, कम से कम एक बार तो देख लो, लेकिन कोई नौकरी देखती ही नहीं और इस गम में बेदम होने की वजह से उसे किसी छोकरी को भी लाइन मारने की हिम्मत नहीं रहती.

गांव के लोग जब पहली बार बड़े शहर में आते हैं, तो बेचारे लाइन में चलते हैं, एक के पीछे एक और शहर के लोग लाइन तोड़ने के आदी होते हैं.

जो लाइन में रहता है या चलता है, उस के अलग जलवे हैं. रेल को ही देख लो, सीधेसीधे लाइन में चलती है, यह नहीं कि जहां चाहे मुड़ जाए. अगर मुड़ना भी है, तो उस का भी एक तरीका है.

मैट्रो का भी यही हाल है. जो ऐसा नहीं है, वह बेहाल है. जो सचाई व अच्छाई के रास्ते पर चलते हैं, उन की बात ही अलग है.

जो लोग इस लाइन को तोड़ते हैं, उन का हाल सभी जानते हैं. सच का रास्ता एक लाइन पर चलने के बराबर है और झूठ का रास्ता लाइन तोड़ने के बराबर है.

बेटा बड़ा हो कर ज्यादा यारी करने लगे, शराब पीने लगे, जुआ खेलने लगे, देर रात घर लौटने लगे, तो मांबाप को चिंता हो जाती है कि कैसे उसे लाइन पर लाएं?

मांबाप शादी कर के कहते हैं कि लाइन से लग गया है या लाइन से लगा दिया है, अब ठीक है.

नौकरी लग जाने पर भी लोग कहते हैं कि उन का तो मुन्ना लाइन से लग गया है और दूसरी पड़ोसन चिंता जाहिर करते हुए कहती है कि उन का बंटी तो अभी लाइन से नहीं लग पाया है.

बुजुर्ग कह गए हैं कि भैया, हुनर की कोई एक लाइन समय रहते जरूर पकड़ लो, नहीं तो पता नहीं कहांकहां धक्के खाओगे, कोई नहीं जानता? गंगू भी कहता है कि भैया लाइन ही सबकुछ है, बाकी सब बेकार है. ●

जगह लाइन बड़ी फाइन चीज है.

रेलवे रिजर्वेशन सैंटर के बाहर लाइन में टैंशन का लगातार सैशन चलता रहता है. जो पीछे है, वह मायूस है. जो आगे पहुंच गया है, वह खुशखुश दिखता है, जैसे बहुत बड़ा तीर मार लिया हो.

लाइन में टैंशन के चलते तूतू मैंमैं, धक्कामुक्की होती रहती है कि तुम कैसे बीच में आ गए. अरे, मैं तो सुबह 8 बजे से खड़ा हूं. तुम ही अकेले होशियार हो? सामने वाले भाई साहब से पूछ लो, बता कर जरा बाहर गया था. अरे, झूठ बोलता है. यह मेरे बाद आया है और सयाना बनता है.

इस तरह का माहौल लाइन में हमेशा बना रहता है. एक सयाना चुप होता है, तो दूसरा गुस्सा हो कर कमान संभाल लेता है. लाइन में टैंशन व बहस की टौर्च कभी बुझती नहीं है, लोग एकदूसरे को खुशीखुशी थमाते रहते हैं.

लाइन का फंडा राजनीतिक दलों के लिए तो बहुत अहम है. कभीकभी इस का डंडा भी चलाना पड़ता है.

जब कोई खास मुद्दा आता है, तो बाकी सब को पार्टी लाइन में रहने के निर्देश मिलते हैं, जिसे ह्विप भी कहते हैं. ह्विप भी केवल पार्टी लाइन को ही फोलो फोर्स में जिस ने लाइन तोड़ी, तो उस का तो कैरियर ही टूटने के कगार पर पहुंच जाता है. पुलिस में कुछ गड़बड़ होने पर लाइन हाजिर कर दिया जाता है. जो लाइन हाजिर हो जाता है, वह अपनी बेइज्जती हुई मानता है.

हर जगह लाइन का ही बोलबाला है. चाहे स्कूल हो, कालेज हो, कोई खेलतमाशा हो, चिड़ियाघर जाना हो, सिनेमा जाना हो, सर्कस जाना हो, राशन की दुकान से केरोसिन लेना हो. परमिट राज में तो सीमेंट, रसोई गैस व स्कूटर तक की बुकिंग के लिए घंटों लाइन में

पैसे की खातिर बोल्ड सीन नहीं करती -माही गिल

साल 2003 में पंजाबी फिल्म 'हवाएं' और साल 2007 में सोहा अली खान के साथ हिंदी फिल्म 'खोयाखोया चांद' से अपने ऐक्टिंग कैरियर की शुरुआत करने वाली माही गिल अब तक 'देव डी', 'गुलाल', 'आगे से राइट', 'दबंग', 'मिर्च', 'ऊटपटांग', 'नौट ए लव स्टोरी', 'साहब, बीवी और गैंगस्टर', 'पान सिंह तोमर' समेत कई फिल्मों में अपनी ऐक्टिंग के जलवे दिखाने के साथसाथ जम कर जिस्म की नुमाइश भी करती नजर आई हैं.

फिल्म 'साहब, बीवी और गैंगस्टर रिटर्न्स' में तो वे काफी बोल्ड दिखीं. पेश हैं, उन से हुई बातचीत के खास अंश :

फिल्म 'साहब, बीवी और गैंगस्टर रिटर्न्स' में रिश्तों में राजनीति की बात की गई. निजी जिंदगी में रिश्तों में कितनी राजनीति होती है?

निजी जिंदगी में भी रिश्तों में राजनीति होती है. अगर आप ने अपने बच्चे को पैसा नहीं दिया, तो वह भी आप के खिलाफ जा सकता है.

आप ने अपनी निजी जिंदगी में कब राजनीति की थी?

मैं ने निजी जिंदगी में कभी राजनीति नहीं की. मुझे लगता है कि अगर मैं ने निजी जिंदगी में राजनीति की होती, तो आज सब से आगे होती.

क्या आप ने अपनी निजी जिंदगी में किसी का ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिए कोई ऐसीवैसी हरकत की है?

निजी जिंदगी में अटैंशन पाने के लिए मैं ने भी कुछ गलत काम किए. कई बार मैं ने गुस्सा भी दिखाया.

मेरे पापा पंजाब सरकार में नौकरी करते थे और मेरी मां कालेज में पढ़ाती थीं, इसलिए दोनों बिजी रहते थे. मेरे लिए किसी के पास समय नहीं था. मैं अकेली होस्टल में रह कर पढ़ती थी.

एक बार मुझे बहुत गुस्सा आया और अपने मम्मीपापा का ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिए मैं बेहोश हो जाने की ऐक्टिंग कर के अस्पताल पहुंच गई. ऐसा करने के पीछे मेरा मकसद यही था कि मेरे साथ मेरे मम्मीपापा रहें, पर बाद में मुझे लगा कि मेरा यह कदम गलत था.

क्या आप को नहीं लगता कि होस्टल में रहने से बच्चे ज्यादा बिगड़ते हैं?

मैं ऐसा नहीं मानती. मैं खुद होस्टल में रही हूं और मेरा मानना है कि हर बच्चे को कुछ समय के लिए होस्टल में ही रखना चाहिए. होस्टल में रह कर बच्चे जिंदगी जीना सीख जाते हैं. उन के अंदर एक जिम्मेदारी आ जाती है.

फिल्म 'साहब, बीवी और गैंगस्टर रिटर्न्स' में भी आप ने जम कर गरमागरम सीन दिए. क्यों?

वे सभी सीन स्क्रिप्ट के हिस्से थे. मैं जिन डायरैक्टर के साथ काम कर रही हूं, उन की फिल्मों में इस तरह के सीन स्क्रिप्ट के मुताबिक ही होते हैं. एक कलाकार के रूप में मेरी जिम्मेदारी बनती है कि मैं स्क्रिप्ट की मांग को पूरा करूं.

मैं महज पैसा कमाने के लिए कभी भी किसिंग या बोल्ड सीन नहीं कर सकती.

शूटिंग के दौरान तमाम लोग होते हैं. उन के सामने इस तरह के सीन करना आप के लिए कितना आसान होता है?

आसान नहीं होता है. बड़ा अजीब सा एहसास होता है. पर डायरैक्टर भी उस वक्त बिना जरूरत वाले लोगों को बाहर निकाल देते हैं.

ऐसे सीन करने पर आप के परिवार वालों की क्या राय होती है?

मेरे पापा की आज से 15 साल पहले ही मौत हो गई थी. मेरी मम्मी मेरे दोनों भाइयों के साथ अमेरिका में रहती हैं. वे मेरी फिल्में नहीं देखतीं. वे बीमार भी चल रही हैं.

मेरे भाइयों ने मेरी फिल्में देखी हैं. उन्हें इस बात का गर्व है कि उन की बहन ने बिना किसी मदद के बौलीवुड में अपना एक अलग मुकाम बना लिया है.

क्या बौलीवुड में आप के दोस्त नहीं बने?

बौलीवुड में जिन कलाकारों के साथ मैं ने काम किया, उन के साथ मेरे अच्छे रिश्ते हैं. पर हम सभी अपनेअपने काम में मसरूफ रहते हैं, इसलिए रोज मुलाकात नहीं होती.

आप नया क्या कर रही हैं?

रीमेक वाली फिल्म 'जंजीर' में मैं मोना डार्लिंग का किरदार निभा रही हूं. जबकि तिग्मांशु धूलिया की फिल्म 'बुलेट राजा' में आइटम नंबर कर रही हूं.

आइटम नंबर को ले कर इन दिनों सैंसर बोर्ड काफी सख्त हो गया है. इस पर आप की क्या राय है?

जब मुझे फिल्म 'बुलेट राजा' में डांस करने का मौका मिला, तो मैं ने कर लिया. यह गाना फिल्म की डिमांड के मुताबिक है.

तिग्मांशु धूलिया उन डायरैक्टरों में से हैं, जो बेवजह फिल्म के अंदर कोई भी सीन या गाना नहीं रखते हैं. इस आइटम नंबर को ले कर सैंसर बोर्ड का रवैया क्या होगा, मैं फिलहाल कुछ नहीं कह सकती. वैसे, मैं ने इस से पहले भी फिल्म 'मिर्च' में एक आइटम नंबर किया था.

अब तक आप ने जितने भी किरदार निभाए हैं, उन में आप के सब से करीब का किरदार कौन सा रहा?

अब तक मैं ने हर फिल्म में अलगअलग तरह के किरदार निभाए हैं. इस के बावजूद फिल्म 'साहब, बीवी और गैंगस्टर' में निभाया माधवी का किरदार मुझे सब से ज्यादा पसंद है.

-शांतिस्वरूप त्रिपाठी ●
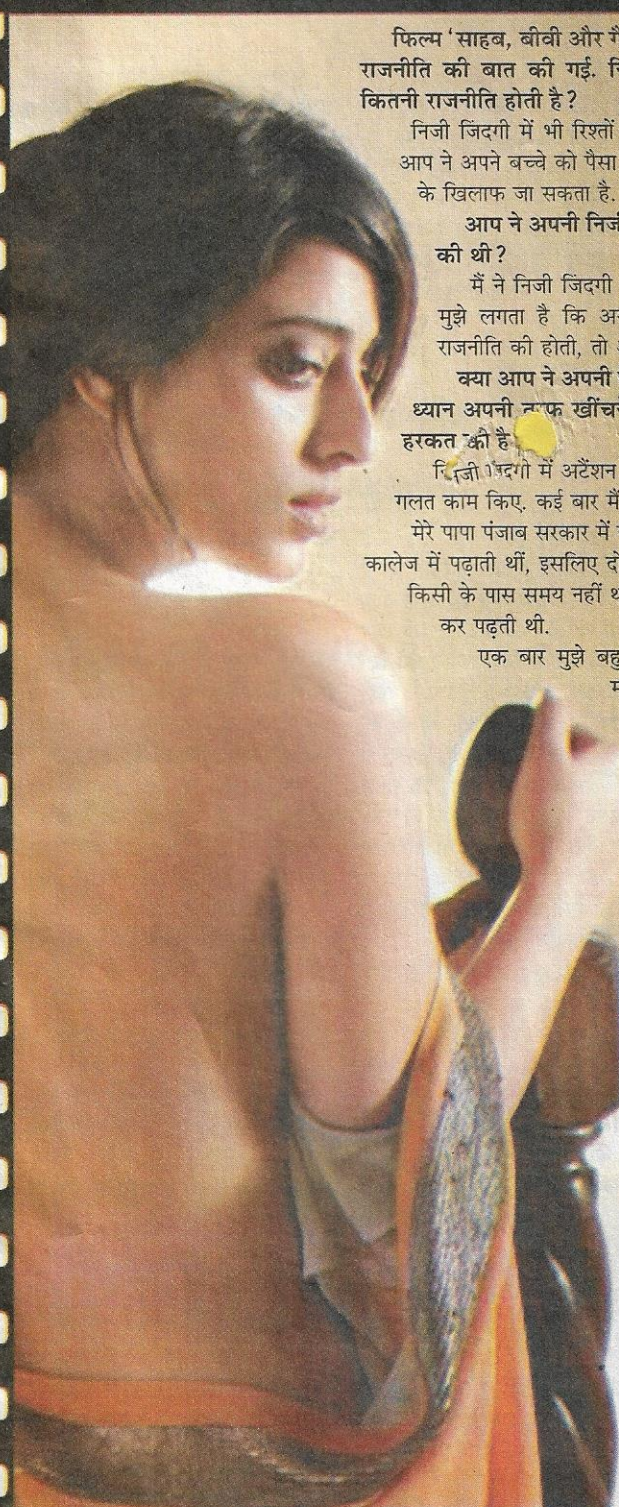
अजय की तमन्ना

दक्षिण भारत की खूबसूरत हीरोइन तमन्ना के साथ फिल्म 'हिम्मत वाला' में काम कर चुके अजय देवगन की तमन्ना है कि अब वे कभी 'डबल मीनिंग' वाली फिल्मों में काम नहीं करेंगे.

अजय देवगन का मानना है कि फिल्म 'रास्कल्स' करने के बाद उन्होंने फैसला लिया है कि वे केवल ऐसी फिल्में करेंगे, जिन के डायलौग गंदे नहीं होंगे और जिन्हें पूरा परिवार एकसाथ बैठ कर देखने में शर्म महसूस नहीं करेगा.

अजय भाई, आप ने वाकई हिम्मत वाला फैसला लिया है.

मैंटल हुआ दबंग

सलमान खान के अच्छे दिन बरकरार हैं, तभी तो जैसे ही उन की नई फिल्म 'मैंटल' की शूटिंग दुबई में शुरू हुई, तभी से लोगों में इस को देखने का क्रेज बढ़ता जा रहा है.

फिल्म 'मैंटल' अक्तूबर महीने में बड़े परदे पर आएगी और सोहेल खान ने इस को सिनेमाघरों में दिखाने के एवज में 130 करोड़ रुपए की डिमांड की है.

यह मांग अभी तो बहुत ज्यादा दिखाई दे रही है, लकिन सलमान खान की पिछली फिल्मों की कमाई को देखते हुए खान बंधुओं की यह दबंगई नाजायज नहीं लगती.

बिपाशा की दीवानगी

लगता है कि जौन अब्राहम के जाने के बाद बिपाशा बसु को अपना अकेलापन खलने लगा है, तभी तो वे ऐक्टर नवाजुद्दीन सिद्दीकी के साथ ज्यादा समय बिता रही हैं.

इतना ही नहीं, बिपाशा बसु नवाजुद्दीन सिद्दीकी की शानदार अदाकारी की तारीफ करते नहीं थकती हैं.

चलो, बिपाशा ने किसी को तो अपनी दोस्ती से नवाजा. ●

चिट्ठीपत्री

राहुल से सीख लें

अप्रैल (द्वितीय), 2013 अंक की 'गहरी पैठ' में नेताओं के बीच प्रधानमंत्री बनने की आपाधापी पढ़ कर बहुत दुख हुआ. प्रधानमंत्री बनने के सभी दावेदारों को चाहिए कि वे जनता की तरक्की के लिए ऐसा एजेंडा पेश करें, जिस से पढ़ाईलिखाई, रोजगार और उद्योगधंधों में जरूरी बदलाव हो.

राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनने से इनकार कर रहे हैं. वे कम से कम एक मिसाल तो पेश कर रहे हैं.

-बि[illegible] हेंबरम, जामताड़ा.

सब का एक ही राग

अप्रैल (द्वितीय), 2013 अंक की 'गहरी पैठ' और मुख्य लेख 'नरेंद्र मोदी के सामने घुटनों के बल भारतीय जनता पार्टी' में सही कहा गया कि अभी आग जली भी नहीं है और लोग खिचड़ी खाने के लिए अपनी थालियां लगाने लगे हैं.

एक तरफ लोकसभा चुनावों से पहले ही नरेंद्र मोदी खुद को भारत का प्रधानमंत्री ऐलान कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ नीतीश कुमार भी दावा ठोंक रहे हैं कि गुजरात ही नहीं, बिहार को भी देखें.

सच बात तो यह है कि आज देश में महंगाई की मार हर ओर है. ऐसे में जनता को ऐसा नेता चाहिए, जो देश में अच्छा बदलाव कर सके.

-राजू कुमार साह, सिलाव.

●

अच्छे लेख थे

अप्रैल (द्वितीय), 2013 अंक में छपे लेख 'नरेंद्र मोदी के सामने घुटनों के बल भारतीय जनता पार्टी' और 'मर्दों के दबदबे को चुनौती देती औरत कंडक्टर' बहुत अच्छे लगे.

-एक पाठक, एसएमएस से.

●

ठीक निशाना लगाया

अप्रैल (द्वितीय), 2013 अंक में छपा लेख 'खाप पंचायतों का बढ़ता कहर' में आप ने उन राजनीतिक लोगों पर ठीक निशाना लगाया है, जो वोट के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं.

-मनोज साव, बैरकपुर.

●

जनता जागनी चाहिए

मैं 'सरस सलिल' का पुराना पाठक हूं. मुझे इस में छपी 'गहरी पैठ' बहुत पसंद है. इस में लिखी बातें जनता को जगाने का काम करती हैं. हम लोग सारे बलिदानों को भूल गए हैं, इसलिए अब जरूरी है कि सब एकसाथ मिल कर देश को आगे बढ़ाने की कोशिश करें.

-बीएस पंवार, भोपाल.

●

झांसे में न आएं

मुझे 'सरस सलिल' बेहद पसंद है. इस में छपे लेख पढ़ कर मैं चौकन्ना हो गया हूं. यह पत्रिका आज के जमाने की खरी और बुलंद आवाज है.

धर्म के नाम पर जो धोखाधड़ी हो रही है, उस से यह सब को सावधान करती है. जादूटोना, झाड़फूंक वगैरह पर अनपढ़ ही नहीं, बल्कि पढ़ेलिखे लोग भी भरोसा करते हैं, जो सरासर गलत है. हमें ऐसे चालबाजों के झांसे में नहीं आना चाहिए.

-विमल वर्मा, पीलीभीत.

●

अंधेरे से रोशनी की ओर

मैं 'सरस सलिल' का नया और नियमित पाठक हूं. यह पत्रिका लोगों को अंधेरे से रोशनी की ओर लाने का काम करती है. इस में हमें रोजमर्रा की जिंदगी की हर झलक मिलती है.

-लक्ष्मण कुमार राय, पटना. ●

पत्रिका में छपी बातों पर अपनी राय लाखों पाठकों को भी बताएं. आज ही पैन उठा कर इस पते पर पत्र लिखें-'चिट्ठीपत्री', सरस सलिल, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. या एसएमएस द्वारा इस फोन नंबर 08826099608 पर भेजें.

Licenced to Post Without Pre-Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2012-14/U(C) 163/2012-14 Saras Salil (Hindi) May-II